॥ श्रीः ॥

महामनमोहिनी।

पंडित बलदेवप्रसाद मिश्र मुरादाबादनिवासीने
रसिकजनोंके चित्तविनोदार्थ संग्रह किया।

इस पुस्तकमें रागरागिनी, ग़ज़ल, ठुमरी, दादरे, ध्रुपद, तिल्लाने दोहे, कवित्त, विरहे, चिट्ठी पत्रीमें लिखनेके दोह, हिन्दी अंग्रेजी, फारसी, उर्दू, बंगाली, गुजराती, मराठी, कर्नाटकी, मारवाडी इत्यादि भाषाओंके उत्तमोत्तम गीत और पदोंका संग्रहहै।

जिसको
खेमराज श्रीकृष्णदासने
बंबई
निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-यन्त्रालयमें
मुद्रितकर प्रकाशित किया।

संवत् १९६२, शके १८२७.

समर्पण।

प्राणाधिके !

बहुत दिवससे आपकी यह इच्छा थी कि, हमकोभी कुछ समर्पण किया जाय परन्तु यहांपर ऐसी कोईभी वस्तु नहीं थी जो आपको समर्पित न होचुकीहो जब मैं किसी पुस्तकके समर्पणको लिखता तबहीं तब "अजी कुछ हमेंभी समर्पण करोगे या नहीं" का उलहना दिया जाताथा। मैं विचारताथा कि सर्वस्व समर्पण करही दिया अब और क्या बाकी रहाहै जो भेंट करूं। परन्तु इतने पीछे यह समय आयाहै कि आपको भी एक वस्तु समर्पण की जातीहै सच्चीबात पूछो तो इसमें भी अधिकांश वस्तु तुम्हारीही है। अतएव तुम्हारी वस्तु आपको समर्पण करना एक खेलकी बात समझी जायगी तथापि होली का समयहै गुलाल उडताहै पिचकारी चलतीहैं, ऐसे समयमें सबही मित्रोंको कुछ न कुछ देते दिलाते हैं अतएव यही सोच समझ यह "महामनमोहिनी" कर कमलमें समर्पितहै ऐसामत समझ ना कि यह "महामनमोहिनी" तो मेरे दुःखका कारण होगी मुझको निश्चय है कि जिस समय तुम्हारे चित्तपर किसी प्रकारका विषाद या शोक अंकित होगा अथवा संसारी झगड़ोंसे जी बेचैन होजायगा, या चिन्ताग्रस्त होनेसे मन किसी काममें नहीं लगेगा उस समय यह **"महामनमोहिनी"** दासी, भांति २ की सेवा करके तुम्हारे मनमधुकरको अनेक प्रकारके प्रसूनोंकी सुगन्धिसे मुदित करेगी मैं आशा करताहूं कि मेरी "महामनमोहिनी" सदाही तुम्हारे पास रहकर आनंदसे दिन बिताती हुई प्रसन्न रहेगी।

कहिये, अब तो कुछ शेष नहीं रहा, यदि हो तो वहभी कहदो नहीं यहां तो सदाकाही यह सिद्धान्तहै कि—

तुम्हारीही खुशीसे खुश हैं ह्यां अपनी रज़ा क्याहै।
दिलो जां लीजिये इसमें हमें उज्रो गिला क्याहै॥

होली
संवत् १९६-

अभिन्न—
बल्देवप्रसाद मिश्र.

भूमिका ।

स्वास्थको ठीक रखनेके लिये एक अच्छा उपाय मनका बहलाना भी समझा जाता है, यही कारण है जो आजकल गानविद्याकी पुस्तकें बहुतायतसे बनती जातीहैं, यह कहावत बहुतही सच्चीहै कि "रोना और गाना सबही पर आताहै।" आबाल वृद्ध वनिता सबहीमें गानेका प्रचार बहुतायतसे है। परन्तु आजकल शुद्ध और सरल भावकी ऐसी पुस्तकें बहुतही कम छपी हैं जिनमें भक्ति, प्रीति, वियोग, संयोग, वेदान्त, देशदशा इत्यादि सबही रसोंका एकत्र समावेश हो बहुत दिवससे मेरा यह विचार था कि इसही प्रकारकी एक पुस्तक संग्रह की जाय। इसही अवसरमें पं० शिवदुलारेजी वाजपेयी प्रबन्ध कर्ता "श्रीवेंकटेश्वर" प्रेसके द्वारा श्रीमान् खेमराज श्रीकृष्णदासजीकी आज्ञा ऐसी पुस्तक के संग्रह करनेको प्राप्त हुई। बस यही कारण इस "महामनमोहिनी" के निर्माण करने का हुआ।

सूरदास, नंददास, तुलसीदास, विहारीलाल, देव, हठी ज़फर, सौदा, बेदाद इत्यादि प्राचीन कविगणोंके पद तो इसमें लिखेही गए हैं,इनके अतिरिक्त आधुनिक कविजनोंकेभी बहुतसे पद सम्मिलित हैं। विशेष करके स्वर्गीय भारतेन्दु बाबू हरिश्चंद्रजी, स्वर्गीय पंडित अम्बिकादत्तजी व्यास साहित्याचार्य, ब्राह्मण संपादक स्वर्गीय पंडित प्रतापनारायणजी मिश्र, स्वर्गीय पंडित झब्बीलाल मिश्र, हफ़ीज़, बाबा हरीरामजी, पं० गौरीदत्तजी, पंडित नारदजी, मिरज़ादाग़, और काज़ी शौकत हुसेन साहबके भी बहुतसे पद इस पुस्तकमें लिखेगये हैं। इनके अतिरिक्त औरभी बहुतसे मित्रोंने अपने बनाये हुए गीतोंसे इस पुस्तक को अलंकृत कियाहै।

इस पुस्तकके संग्रह करनेमें पंडित वर नारदजी, पंडित गौरीदत्तजी O. R. Ry. पं. मुन्नालाल गौतम, पंडित श्रीलालजी सारस्वत, पंडित कन्हैयालालजी तंत्रवैद्य तथा उस्ताद मौलाबख्श पौटी ग्राम निवासी और कन्हैसिंह राजपूत गांवथिरोली जिला गढ़वालने बहुतही सहायता दीहै, अतएव इन महाशयों को बारंबार धन्यवाद दिया जाताहै।

श्रीमति कृष्णा, श्रीमति गंगा, श्रीमति पन्ना बंगालीवाली, श्रीमति सुन्दर (हलद्वानी) श्रीमतिदुर्गाजी, श्रीमति नौरतन, श्रीमति सरस्वती इत्यादि गानविद्याकी जाननेवाली स्त्रियोंनेभी बहुतसी गजल और ठुमरी इस पुस्तकमें लिखने के लिये दीहैं इस कारण इन सबकोभी हृदयसे धन्यवाद है।

प्रियपाठकगण ! इस "महामनमोहिनी"में संस्कृत और हिन्दी गीतोंके सिवाय फारसी, उर्दू, बंगला, मराठी, गुजराती, कर्नाटकी, अंगरेजी, मारवाड़ी और सम्मिलित भाषाके बहुत गीत संग्रह किये हैं. इसप्रकारसे सब भाषाओंके गीतोंका संग्रह आजतक इस प्रकारकी पुस्तकमें कहीं भी नहीं छपा, आशाहै कि आपलोग इस पुस्तकको पढ़कर मेरे परिश्रमको सफल करेंगे।

कृपाकांक्षी-

होली.
संवत १९६०

बलदेवप्रसाद मिश्र,
पीरगरापुरा, मुरादाबाद.

श्रीगणेशाय नमः ।

महामनमोहिनी ।



पहला भाग ।

(कवित्त, सवैया, दोहा)

दोहा—श्रीवृषभानु कुमारिके, पग वन्दौं कर जोर ॥
जे निशिवासर उर धरें, ब्रज वसि नन्द किशोर ॥ १ ॥
कीरति कीरतिकुँवरिकी, कहि कहि थके गणेश ॥
दश शत मुख वर्णन करत, पार न पावत शेश ॥२॥
अज शिव सिद्ध सुरेशमुख, जपत रहत निशि याम ॥
बाधा जनकी हरतहै, राधा राधा नाम ॥ ३ ॥
राधा राधा जे कहैं, ते न परैं भवफन्द ॥
जासु कन्धपर कमल कर, धरे रहत ब्रज चन्द ॥४ ॥
राधा राधा कहतहैं, जे नर आठोयाम ॥
ते भवसिन्धु उलंघिके, वसतसदा ब्रज धाम ॥ ५ ॥
वन्दौं पद पङ्कज सदा, नँदनन्दन ब्रज चन्द ॥
राधा सत वर्णन करत, फिर न परौं भव फन्द ॥ ६ ॥
नित्य किशोर निकुंजवन, गृह गोकुल गो ओक ॥
छिन विछुरत नाहिन दुवो, विचरत श्रीगोलोक॥७॥

सेवत ललितादिक सखी, जे प्रिय परम प्रवीन ॥
कोटि कोटि छबि आगरी, सुर मुनि वर्णन कीन॥८॥

कवित्त ।

काहू को शरण शम्भु गिरिजा गणेश शेप काहू को शरण है कुबेर ऐसे धोरी को ॥ काहूको शरण मच्छ कच्छ बलराम राम काहूको शरण गोरी साँवरीसी जोरी को ॥ काहूको शरण बौद्ध वामन वराह व्यास येही निरधार सदा रहै मति मोरीको ॥ आनँन्द करन विधि वन्दित चरण एक हठीको शरण वृपभानुकी किशोरीको ॥ १ ॥ कलपलताके किधौं पल्लव नवीन दोऊ हर्न मंजु ताके कंज ताके वनिताके हैं ॥ पवन पतित गुणगावैं सुनि ताके छवि छलै सविताके जन ताके गुरु ताके हैं ॥ नऊ निधि ताके सिद्ध ताके आदि आलै हठी तीनों लोक ताके प्रभु ताके प्रभु ताके हैं ॥ कटें पाप ताके बढैं पुण्यके पताके जिन ऐसे पद ताके वृषभानुकी सुताके हैं ॥ २ ॥ कोमल विमल मंजु कंजसे अरुण सोहैं लक्षण समेत शुभ शुद्ध कन्दनीके हैं ॥ हरिके मनालय निरालय निकारनके भक्ति वरदायक वखानै छन्दनीके हैं ॥ ध्यावत सुरेश शम्भु शेप औ गणेश खुले भाग अवनी के जहां मन्द परैनीके हैं ॥ कटै यम फन्दनीय द्वंद्वनीय हर हरि बन्दनी चरण वृपभानु नन्दिनीके हैं ॥ ३ ॥ मखमल मखनसे

इन्दुकी मयूखनसे नूतन तमाल पत्र आभा आभरण हैं ॥ गुलसे गुलालसे गुलाब जपा जावकसे पावक प्रवाल लाल गावैं भूधरण है ॥ उमापति रमापति जमापति आठौं याम ध्यावत रहत चार फलके करन हैं ॥ पंकज वरन छवि छविके हरन हठी सुखके करन राधे रावरे चरण हैं ॥ ४ ॥ कोऊ उमाराज रमाराज जमाराज कोऊ कोऊ रामचन्द्र सुखकन्द नाम नाधे में ॥ कोऊ ध्यावे गणपति फनपति सुरपति कोऊ देव ध्याय फल लेत पल आधे में ॥ हठीको अधार निरधारकी अधार तूही जप तप योग यज्ञ कछु वै न साधे में ॥ कटैं कोटि बाधे मुनि धरत समाधे ऐसे राधे पद रावरे सदाही अवराधे में ॥ ५ ॥

सवैया ।

करकंजन जावक दै रुचिसों बिछिया सजिके व्रज लाडिलीके
मखतूल गुहे घुँघुरू पहिराय छला छिगुनी चितचाडिलीके
पगजेब जराव जलूसनकी रविकी किरनै छवि छाडिलीके ॥
जग वन्दतहैं जिनको सिगरो पग वन्दतकीरति लाडिलीके ६

कवित्त ।

कोऊ चाहे धन धाम कोऊ चाहे अभिराम कोऊ साहिबी सुरेश लाख भाँति लाहियतु है ॥ कोऊ गजराज महाराज सुखराज कोऊ तीर्थ व्रत नेम जग अंग दाहियतु है ॥ ऐसी चित्त चाहे चरचाहै दुनियाकी हठी चाहे हृदय एक तौन

ठीक ठाहियतुहैं ॥ जन रखवारीकी सुप्रभु प्राण प्यारीकी सुकीरति दुलारीकी नजर चाहियतुहै ॥ ७ ॥ अतर पुतायो मव्यो महल सुगन्धन सों द्वारे गजमोतिनकी तोरन तनी रहैं॥ चन्दन चहल चारु चाँदनी चँदोवा लाल गोपमाल मनी कनी कोरनै घनीरहैं॥उमा चोर ढारैं रमा आरती उतारैं ठाढी रम्भा रति मैनकासी कोटिन जनी रहैं ॥ हठी देवतानकीदिमाक-दार रानी तेऊ राधे महारानीजूके हाजिर बनी रहैं ॥ ८ ॥ मोतिन की तोरनैं तमासेदार द्वारैं वारैं अमित तरैयनकी शोभा बडे सान की ॥ मखमली गिलम गलीचा मखतूलन के अतर अतूलनकी झौंकैं हठी मानकी ॥ जरकसी जलव जलूसनकी गद्दी रवि छवि रही झुकी झालर वितानकी॥ कंचनकी वेली रमा रतितें नवेली अलवेली रङ्ग रावटी अ-केली वृपभानकी ॥९॥ अतर पुतायो चौक चन्दन लिपायो बिछी गिलम गलीचनकी पंगति प्रमानकी ॥ कारी हरी पीरी लाल झालरैं झलक रही जैसी छवि छाई चारु चाँदनी वितानकी॥झीनी सेत सारी जड़ी मोतिन किनारीदार फैली मुख आभा हठी राधे सुखदानकी ॥ नाह नेह नही कर रमा रूप रहीकर बैठी आन गद्दीपर बेटी वृपभानकी ॥ १० ॥ कंचन फरस फैली माणिन मयूखैं तन्यो जरीको वितान तेज तरनि तरा परै ॥ पाँवड़े विछौना परे मोतिनके

कोरवारे चारचो ओर जोरजो प्रभा भरी मरापरै ॥ हीरन तखत बैठी राधे महाराणी हठी रम्भा रति रूप गिरि धसक धरा परै ॥ छूटी मुख चन्द चारु किरण कतार बांध ह्वैह्वै चन्द्र मण्डल लौं छविके छरा परै ॥ ११ ॥ कंचन महल चांदें चांदनी बिछौना हठी गावती प्रवीनै वीनै लीने मृदु पानमें ॥ रमा तृण तोरै उमा ठाढी कर जोरै शची शीश चौंर ढोरै राधे सोवै सुख सानमें ॥ मणिनकी मालनकी पंन्नन प्रवालनकी मंजुल मयूखैं भुखैं कोटिन प्रभानमें॥ जरकसी सारी अङ्ग भूषण जराऊ बैठी जरकसी सेज जर कसके वितान मैं ॥ १२ ॥ चाँदनीमें चांदै लग्यो चांदनी चंदोवा चारु चांदनी विछानन अधिक छवि छाई है ॥ बड़े बडे मोतिनकी लैरैं रुरैं चारयौ ओर बीच बीच जरी कोर सोहत सुहाईहै ॥ गोरे गात सेत सारी हीरन किनारी घनी इन्दुसे वदन राधे इन्दिरा ललाईहै ॥ भाल दिये चन्दन सुनेह नन्दनन्दन सों महक सुगन्धन सों सेजपर आईहै ॥ १३ ॥ मखमली गिलम गलीचनकी पांति चारु जरकसी सेज तैसी रही छवि छाइके । हीरनके मणिनके मोती मालतीके हार लालन प्रवालनके ल्यावती बनाइके ॥ एकै लिये सारी जरतारी कनी कोरवारी एकै हठी वीणलै रिझावें गीत गाइके । चन्दन चढाय माल चन्दन लगाय राधे बैठी चन्द मन्दके मसिन्द पर

आइकै ॥ १४ ॥ कंचन महल चौक चाँदनी बिछौना तामें जरीको वितान तान भानु ज्योति मन्दकी ॥ लालनकी मालैं लाल सारी कोरदार अङ्ग ओठनकी लाली जिमि लाली जीववन्दकी ॥ रम्भासी रमासी खासी दासी मैनकासी हठी ठाढी कर जोरे तेज छीनैं जोतिचन्दकी ॥ गावें वेदबानी चीर ढारत भवानी राधे बैठी सुखदानी महारानी नँदनन्दकी ॥ १५ ॥ सारी जरतारी लगी मणिन किनारी दुति दामिनी कहारी गात जात रूपकन्दहै ॥ हार हिये भूषण जराऊ भाल बेंदी लाल अधर प्रवाल बिम्ब वसै जीवबन्दहै ॥ उमाकी रमाकी सुखमाकी देवमाकी हठी रम्भा इन्दुमासी उपमासी गतिमन्दहै । तारापाति कैसो मुख लहत गुविन्दवारी तखतपै बैठी राधे वखत बिलन्दहै ॥ १६ ॥ चन्दन लिपायो चौक चाँदनी चँदोवै तामें चांदनी बिछौना फैली लहर सुगन्धकी ॥ चाँदनीकी साज नीकी चन्द सम चमकन चारयौ ओर चन्दमुखी चन्द जोति मन्दकी ॥ चांदनीसों चार चारु चाँदनीसी फैली हठी चांदनीसी हाँसीकै मिठाई सुधाकन्दकी ॥ चन्दनकी चौकी बैठी चन्दन लगाये भाल चन्दनसे वदन राधे रानी व्रजचन्दकी ॥ १७ ॥ बैठी रङ्गभरीहै रंगीली रंगरावटीमै कहांलौं वखानों सुन्दराई शिरताजकी ॥ चांदनीकी चम्पककी चंचला चमीकरकी इन्दमा तिलोत्तमाकी शोभा कौन

काजकी ॥ मोतिनके हार गरे मोतिनसों मांग भरे मोतिनसों बैन गुही हठी सुख सानकी ॥ चाल गजराज मृगराजकीसी लङ्क द्विजराजसों वदन राजै रानी ब्रजराजकी ॥ १८ ॥ जातरूप तखतपै वखत विलन्द बैठी जाके काज ब्रजराज भांवरे भरतहैं ॥ जरीदार द्वारमें वितान तान राख्यो हठी छरीदार ठाढ़े इतमाम वगरत हैं ॥ लरीदार झालरैं झलकदार झूमैं मोती झुमकन झूमैं छ्वै छ्वै उपमा धरतहैं ॥ राधेको वदन द्विजराज महाराज जान नखत समान कोर निशसी करतहैं ॥ १९ ॥ विज्जुकी छटासी खासी कंचनसटासी रूरी रूपकी घटासी सखी सेवनमें आवतीं ॥ सुरनकी रानीलै सुगन्धन लगावैं रुचि चौरन चलाइ भौंर भीरन भगावतीं ॥ फूल ऐसी राजै मखतूल सेज राधे हठी फूल फूल किन्नरी सुहाये गीत गावतीं ॥ मण्ड नवखण्ड मुखमण्डल मरीचैं दाव मण्डकै प्रचण्ड चन्द्रमण्डल दबावतीं ॥ २० ॥ चामीकर चौकीपर चम्पक बरन हठी अङ्गकी चमक्कैं चारु चंचलै चलावतीं ॥ तारासी तरङ्गनासी अतर लगावैं रति मुकुर दिखावैं विजै वीजन डुलावतीं ॥ कमला करन जोरैं विमला सुतृण तोरै नवलाले मरजीको अरजी सुनावतीं ॥ सुरनकी रानी सुरपालनकी रानी दिगपालनकी रानी द्वार मुजरा न पावतीं ॥ २१ ॥ जरीदार सानवारे छरीदार

ठाढ़े द्वार वन्दीजन जन भरी बोलैं वेदबानीहै ॥ चारों ओर चन्द्रमासी जगमग होत बाल देखौ नन्दलाल रति छविकी निसानीहै ॥ रम्भा गुणगावैं शची चन्दन लगावैं रमा भौंरन उड़ावैं चौंर ढ़ारत भवानीहै ॥ हठी ब्रजमण्डलमें रूप वगराय आज बैठी जातरूपके महल महारानीहै ॥ २२ ॥ कोऊ छत्र लीने कोऊ छाहगीर कीने कोऊ बीनै ले प्रवीनै ये नवीनै सुर गावतीं ॥ कोऊ जरी जोरे कर अतर गुलाब बोरें लै लै अलबेली हठी धावन तैं आवतीं ॥ कोऊ चौंर ढ़ारैं कोऊ आरती उतारैं कोऊ करती सलामैं कोऊ मुजरा न पावतीं ॥ बैठी आन तखतपै बखत बिलन्द राधे बाला दिगपालनकी माला पहिरावतीं॥२३॥ फटिक शिलानके महल महारानी बैठी सुरनकी रानी जुरि आई मन भावती ॥ कोऊ जलदानी पानदानी पीकदानी लिये कोऊ कर बीनै लै सुहाय गीत गावतीं॥कोऊ चीर चीनै चारु चांदनीसे चौज बारे हठीलै सुगन्धनसों अलकैं बनावतीं॥ मोतिनके माणिनके पन्नन प्रवालनके लालनके हीरनके हार पहिरावतीं ॥२४॥ जातरूप तखतपै बैठी रूपराशि राधे अङ्गनकी प्रभा प्रभाकरको लजावती ॥ चीर चारु हीर हार हीय पहिराय कर भूपण बनाय बाल साजन सजावतीं ॥ अतर गुलाबलै सुगन्धन लगावैं सबै चन्दन चढ़ाय भाल भौंरनभगावतीं ॥ जोरि जोरि पान देवतानहू की रानी

हठी कोट कोट कोर निस झुकि कै बजावतीं ॥ २५ ॥
सीसाके महल बैठी फैलत प्रभाके पुञ्ज मानो चन्द्रमण्डल उठाय आनि राख्यो है ॥ जरीपोस अम्बर जलूसदार झल झलात झालरैं झलक झल रूप मानि राख्यो है ॥ अतर असीर अङ्ग अञ्जन लगाय हठी सकल सुगन्धन सों ब्रज सानि राख्यो है ॥ देखौ भर नैन जासों पूजै मन साधा हरि राधा आजु छविको वितान तानि राख्यो है ॥ २६ ॥

नखशिख ।

अर्थात् ।

ब्रजराज महाराज श्रीकृष्णचन्द्रका नख शिख वर्णन ॥

नखवर्णन ।

कवित्त ।

पानिप पर मंजुल मुकता सब गेमबाय द्रवे सिद्ध अगम अदम गम कोरके ॥ तारे तेज वारे तेनकारे निशितारे परे दिवस डरारे रहे दुरि मुख मोरके ॥ ग्वाल कवि फवि फवि छवि जो छपाकर की दवि दवि दूबरे कुमुद जिमि मोरके ॥ याते जग पक्र नख मप मैं न पच सख खोली चख लख नख नवल किशोरके ॥ १ ॥

चरणवर्णन ।

कौंहरमैं बिम्ब मैं कन्दुकमैं विद्रुम मैं जावक जपामैं वट किसलय अमन्दके॥ लाल मैं गुलालमैं गहर गुल लालन मैं लाली गुन एक सोन तूल है सुछन्द के ॥ ग्वाल कवि ललित लुनाई कोमलाई जैसी तैसी है न कञ्जमैं नहीं गुलाब फन्दके ॥ नन्दके करन दुःख द्वन्द्व के हरन थन अशरन शरन चरन नँदनन्दके ॥ २ ॥ मुनि ज़न मनके अधार के अगार गुरु कालीनाग शीश के सिगार चारु साजके ॥ वेद औ पुरान शास्त्र तत्त्वनको तत्त्व तेज सत्त्व को प्रभुत्व द्रव्व मुक्तिके समाजके ॥ ग्वाल कवि केवल कुलिश ध्वज अंकुश ते चिह्नित विचित्र रूप दरश रैनराजके ॥ शोभाके जहाज लोक लोकनके लाज ऐसे पद युगराज ब्रजराज महाराजके ॥ ३ ॥

नूपुरवर्णन ।

कैधौं मञ्जु मोरनके मण्डल बनाये विधि कैधौं कल कुण्डल अनूप सुखताकेहैं ॥ कैधों जगमोहनके मंत्रके अधार पूरे कैधों मृदुध्वानिके वपुसछविछाकेहैं ॥ ग्वालकवि द्वारहींतें अगम कन्हैयाजूको माता हिय कमल लिखय्या सुरताकेहैं ॥ कैधौं हेमकार कुलतारन निधान किधों नूपुर नवल नीके नन्दके ललाकेहैं ॥ ४ ॥

जंघावर्णन ।

कैधौं विधि वागवान अधिक उतावलिमें कदली उलट धरी सीमा शोभमालकी ॥ कैधौं भुजउदर हृदय सीम मन्दिरके उदित अधार धरे मंडी ज्योतिजालकी ॥ ग्वालकवि कैधौं सुरराज वनवन्दनते ओधी धर दीनीहैं सरों महासुढालकी ॥ कैधों केलिकलमें कलानिधि मुखीनको येमोदकी करन जुग जंघे नन्दलालकी ॥ ५ ॥

नितम्ब वर्णन ।

कैधौं अध ऊरध शरीर मध्यभाग ताके करन प्रसिद्ध बुर्ज बनेहैं सम्हालके ॥ कैधौं लङ्क भूपति विराजवेके रङ्ग गूढे मजेदा जडेहैं नीलमणिनके जालके॥ ग्वालकवि कैधौं कामिनीके केलि औसरमें तबले मधुर मृदुदेनहारे तालके ॥ कैधौं पीठ भागकी प्रभाकी वृद्धि करिवेको विधिने बनायेहैं नितम्ब नन्दलालके ॥ ६ ॥

लंकवर्णन ।

गोलहै अमोलहै अलोल है अनूपहै छामहै नथूलहै सुमाफिक पसन्दको॥रंग रंग रंगकी रसीली रंगदार सुर्खेकाछनी विराजे वरनानिक विलन्दको ॥ ग्वालकवि चामीकरकौंधनी जडाऊ जोर पोही श्याम पाटमें बढ़ाय शोभा फन्दको ॥ ललित लुनाई लुरि लमकत लूम लूम लहलह लहकत लङ्क व्रजचन्दको ॥ ७ ॥

काछनीवर्णन ।

मञ्जु मखमलते मुलाइमहै मजेदार साटनसे चीकनी चहूँघा एकतारेकी ॥ रंगी रंग रंगके सुरंगनते रंगदार गोटन कीगोट औ किनारी कोरकारेकी ॥ ग्वालकवि मोतिनकी झालरैं झिलततामें, फौंदनी खिलत वेश बादले पसारेकी॥ कटि कमनीयते करत कल केलि ऐसी काछनी कलानिधि कलासी कान्ह प्यारेकी ॥ ८ ॥

कौंधनीवर्णन ।

चामीकर कामी ढाल ढालके तपाई तेज बहुरि वनाई है सुनार सुख दैयाकी॥हीरनते मोतिनते लालनते पन्ननते जटित जडाऊ जोत ज़ोतिन जितैयाकी ॥ ग्वालकवि विविध वनाई वेलि मीननकी नीलम कलाईमें गुँथीहै छविछैयाकी ॥ कैसे कहि कौन कहि हारेहैं कवीश कुल कैसी कमनीय कटि कौंधनी कन्हैयाकी ॥९ ॥

नाभिवर्णन ।

अधिक अमोल गोल गहरी अडोल जैसी तैसी है अछोल औ अतोल सुखभारीकी ॥ तीस तीनकोटि देवतानके अन्हाइवे को पूसकट पूरनकी परमा पसारीकी ॥ ग्वाल कवि चतुर निधान चतुरानन के तातकी उपज जस कुंईहै उज्यारीकी ॥ नीके नैन नैनन न बीचन निहारी पतनूरत जहूर नाभि नवलविहारीकी ॥ १० ॥

त्रिवलीवर्णन ।

कैधौं नाभि कूप कमनीयके किनारेपै बाँधने बनाई है निसेनी नेह आशेकी ॥ कैधौं तज बीज तेज तोल तीन लोकनकी तीनही बनाई सीम अतुल मवासेकी ॥ ग्वाल कवि कैधौं मात बन्धन कियो हो दामताकी परिगईहै लकीर रूप रासेकी ॥ कैधौं महाराज मन मोहन मुकुन्द जूके तनमें तकाई परे त्रिवली तमासेकी ॥ ११ ॥

उदरवर्णन ।

कैधौं पुरुहूतकी प्रकर्ष पन वारो ताको परम पवित्र पान पूरन पसरहै ॥ कैधौं मानलायके बनायो मैन रेजायेक मखमल सो माखन सों मृदु है मुकरहै ॥ ग्वालकवि कैधौं एक पात अरवी को नीको अजब अनूठो औ अनूपम असर है ॥ कैधौं विधि विटप विचित्रताको आलवाल वातिक विशाल नन्दलाल को उदरहै ॥ १२ ॥

हृदयवर्णन ।

कैधौं दल दीननके दुःखकी दलनहारी दीरघ दयाजो ताको पितुहै प्रकाजको ॥ कैधौं दैत्यमारन निवारन अमर डर ताके चिन्तवनकोये ठिकानो गुन साजको॥ ग्वाल कवि कैधौं भाव जोगी की गुफाहै तामें है रह्यो प्रकाश महा तेजके समाजको ॥ कैधौं वर विमल कमल दलहूंते मृदु मंजुल हृदयहै श्री मुकुन्द महाराजको ॥ १३ ॥

मृगुलतावर्णन ।

कैधौं विप्र पाँयन पवित्रके पुजायवेको कारण विचित्र ब्रह्मांड के पसारेपै ॥ कैधौं परिपूरण परम प्रभुताको पद ताके पायवेकीहै निसेनी हीयप्यारेपै ॥ ग्वाल कवि कैधौं छविताकी छमताकी तेज हृदयको निशान तीन चरन पखारेपै ॥ कैधौं सुख सुखमाकी सुन्दरसता है भरी भृगु की लताहै कान्ह उरके किनारे पै ॥ १४ ॥

वक्षस्थलवर्णन ।

पावै कौन पारवार दीखत अपार ऐसी पारवार पूरकी सुता है वैस वारीकी ॥ सदन सुधाको कलानिधिको सुधा रचो बन्धु सुखमा खवासी करै हाजिर हुस्यारीकी ॥ ग्वाल कवि जेतो जग जीवै जोति जाकी जोर जननी अनन्दकी गुरानी है उज्यारीकी ॥ ऐसी रमारानी ठकुरानी को विराजे अङ्क चिह्न रूप ह्वै के वक्ष माहिं श्रीविहारीकी ॥१५॥

वनमालावर्णन ।

फूले फूल फूलनको फूल फूल लीने तोड़ रंग रंग रंगनकी रंगत निहारीहै ॥ सूत सूत रेशम रँगीन में रसाइनसो गहकि गहकि गुँथी गूथन निहारीहै ॥ ग्वाल कवि सौरभ समुद्रते निकारी मनो, ललित लुनाई कोमलाई वे करारीहै ॥ वानिक विशाल वारौं मोतिनकी माला जापै ऐसी वन माला नन्दलाल उरधारीहै ॥ १६ ॥

पाणिवर्णन।

सम्पति सुयश सुत आयु औ पराक्रमके आश्रम विलच्छन रेहैं रेख जालके ॥ गुह गिरिराज धारि लैवेके अधार आछे मान सुरराजके नशैय्या कंसभालके ॥ ग्वाल कवि व्रजकी सहाय करवैया भूरि भोजन करैया सुखदैया गोप ग्वालके ॥ कंजहैं न कोमल गुलाबमें नगुन ऐसे जैसे जुग पानिहैं सुजान श्रीगुपालके ॥ १७ ॥ होतही प्रभात मात माठको मथन जब मचलि मथानी गहि माखन चखौ करौ ॥ सांकरी गलीमें रोकि रोकि व्रजबालनको कुचके पकरि रसहेतु ढुलखौकरौ ॥ ग्वाल कवि तन्दुल सुदामाको चवाये जातें तीनलोक वकस सुभायही लखौ करौ ॥ वेई हाथ अपने सुनौ हो व्रजनाथनाथ जानिकैं अनाथ मेरे माथपै रखौकरौ ॥ १८ ॥

लकुटवर्णन।

काढी कामतरुते लकुट सुठि बाढीरस, चाढी विश्वकर्मै खराद खुसखासाहै ॥ चामीकरता रनके जाल कर रंग तापै चिन्तामणि जटित जडावनको वासाहै ॥ ग्वाल कवि नन्दके लडाइते कुँवरजूकी लकुट लडैती ताको ताक्यो मैं तमासा है ॥ मानौ महाराज श्रीसनेहको समर रोकि, चोवदार जाके पान सुन्दर सुआसाहै ॥ १९ ॥

वेणुवर्णन ।

कैधौं चर अचर बसीकर करनवारौ मंत्र लिख यन्त्र सिद्ध कियो तीरथनमैं ॥ कैधौं छहराग और रागिनी छतीसनके वासको सदनरँग्यौ सातहू स्वरनमैं ॥ ग्वाल कवि कैधौं शिवसनक समाधिनको भेदन करैया सर सोच देख्यो मनमैं ॥ कैधौं सुधानद के प्रवाह को वहन हारो वेणुश्री विहारीको बजत वृन्दावनमें ॥ २० ॥

भुजवर्णन ।

कैधौं मल विमल कमल जुग जोइयत शोभित सनाल पर उलट समाजकी ॥ कैधौं व्रजवालनके गोरे गरे डारिवेको मोहनीकी फाँस दे मदन ठगराजकी ॥ ग्वाल कवि कैधौं भवसागरहू तारवे की कलीहै, विलन्द बिधि भक्तनके काजकी ॥ कैधौं चारु चाकते भ्रमायके उतारी ऐसी भामती भुजाहै व्रजराज महाराजकी ॥ २१ ॥

कण्ठवर्णन ।

वाकी धुनिमेंते एक धुनहीं प्रतीत होय ताहूमें न प्रीत वहु सुनै उलहत है ॥ जाकी धुनि सुनि मुनि मेरुके मवासी मोहैं वरन वरन मृदु माधुरी लहत है ॥ ग्वालकवि पावै कोऊ भूपन न जेव देय यापै भले भूपन की जेव उमहत है ॥ कारन करन कान्ह करुनानिधानजूको, कंठ कमनीय कम्बु कुलते कहत है ॥ २२ ॥

कण्ठाभरण वर्णन ।

कारन करन कुल कलस कलानिधको नन्दको कुँवर कान्ह करुना को कन्द है ॥ ताके ग्रीव ग्रीव गोप गहनो जग्यो है जोरि जडित जडाऊ जातरूप में विलन्द है ॥ ग्वाल कवि हीरनकी पांखरी चहूंघा चारु ताके वीच लाग्यो एक नीलम अमन्द है ॥ मानो श्याम कण्ठ पाय पूजिकै चढ़ायो काम पुण्डरीक तापै आय वैठो मकरन्द है ॥ २३ ॥

चोटीयुक्त पीठ वर्णन ।

खेलैं खोर साँकुरीमें वाँकुरी चितौनी चाह काँकुरी पै काँकुरी चलाय छवि छाये हैं ॥ फूलनके फौंदना फिरावत हैं फूल फूल ऊलमि उलमि फाँद फाँदत सुहाये हैं ॥ ग्वाल कवि साँवरे सुजानजूकी पीठ पर हेम झवियाके झुण्ड चोटी: में लगाये हैं ॥ मानौ नीलमणिकी शिलापै रवि जाकी धार तापै मदनेश फूल चम्पाके चढ़ाये हैं ॥ २४ ॥

चिबुक वर्णन ।

कैधों श्याममणिकी बनाई है विरञ्चि वेस गिन्दुक खलौना कामदेव सुखदानी को ॥ कैधों श्रीकिशोरीके नव मारगमें धायवे को गुटका असित अखरानी ग्वालकवि कैधों एक विकसित इन्दीवर ताके तर प्रगट कलानीको ॥ कैधों चारु चमक

सुचीकनौ चहुँ दिशतैं चैन कौ चबूतरा चिबुक चक्रपानीको ॥ २५ ॥

अधर वर्णन ।

कोहरमें बिम्बसे कहैं तो आदि परे हरे पकि २ पीछे तें सुरंग रंग धारचो है ॥ विद्रुमसे वरनें तो जलके परस सेत बंधु जीव कहै तो सकंटक करारोहैं ॥ ग्वालकवि वैतोहैं अनित्य ये अरून नित्य सुधाते सरस रस तामैं आनिढारचो है ॥ याते महाराज ब्रजराज सिरताज आजु अधर तिहा रो सो तिहारोही निहारचो है ॥ २६ ॥

अन्यच्च ।

प्रीति परि पूरन पवगंते पयूप भरे पतन करैया पीर विरहा उरफ की ॥ सुन्दर सुरंग रंग रवनी के कपोल तापै दूरकै करत सीरेकंठ ज्यों वरफकी ॥ ग्वालकवि रावरो अधर मनमोहन जू सुखमा बढावै बंधु सधर तरफकी ॥ मानहुं खिलारी कामदेवजूके लिखिवेकी धरी श्याम गादी पैं सीप सिंगरफ की ॥ २७ ॥

दशन वर्णन ।

कैधों पंचबान वागवान कै बनाई वेश, कुन्दकली काननकी अवलि सर सात हैं ॥ कैधो मुख चारु चारु चित्तमें विचार करि हीराके कनीनके बनाई पूर पात हैं ॥ ग्वालकवि कैधों तुंग तारागन तेजवारे तिनकी

कतार भांति २ ही सुहातहैं ॥ कैधों दीह दमक दमंकत दिशान दौरि, दशन दमोदरके हासमें दिखातहैं ॥ २८ ॥

अन्यच्च ।

कैधों पके दाड़िम बीज पारे परिपूरन हैं परम पवित्र प्रभा पुंज लमकत हैं ॥ कैधों भूमिसुतके अनेक तारे तेज वारे बांधिकें कतारे झला झल झलकत हैं ॥ ग्वालकवि कैधों पंचवान जो हरीकी जोर ललित ललाई लिये मनि चमकत हैं ॥ कैधों वृषभानुकी लड़ैती प्राण पीतम के पान पीक पागे ये दशन दमकत हैं ॥ २९ ॥

अन्यच्च ।

कैधों आज अद्भुत अनेक अंग धारि करि आभा आनि बैठी कहो कौनपै नखी परैं ॥ कैधों वेश बीजरीकी कोंधन कलासी होत पइये यह मेघनकी मेघ पै रखीपरैं ॥ ग्वाल कवि : कैधों शर्दराकाके कलानिधिकी कौमदी विशेष नाचकोरपै चखी परैं ॥ कैधों श्याम सुन्दर सुजानकी हँसन माहि दशन अनूपनकी लसन लखीपरैं ॥ ३० ॥

कैधों वट पल्लव परम परमां ते पूरि तापै मुकताहलकी माल दुति न्यारीकी ॥ कैधों सुकनक को अमलदल भलयेक, तापै चहुंकेर कली कुन्द उजियारीकी ॥ ग्वाल कवि कैधों वाकवाणी के विराजवेको आसन अनूपकोर हीरनहजारीकी ॥ कैधों दशनावलि में रसना रसीली राज राजै रमनीय रेसी रसिक विहारीकी ॥ ३१ ॥

वह तो असित रूप लसित न नेक वाको यह तौ ललित छविसहित दिखाय है ॥ पाहन कठोर वह कोमल अमल यह वहतो अचल यह सचल सुभाय है ॥ ग्वालकवि वाते जातरूपकी जँभाई होत याते पट रसके सवाद जाने जाय हैं ॥ नन्द महाराजके सपूत ब्रजराजजूकी रसना कसौटी पर ए गुन सिवाय हैं ॥ ३२ ॥

पारजात जामै ना नरगसके गात मैन,चम्पकके पात मैं न सरसिजताव में ॥ मालती न मल्लिका में जुहीमें न जोहियत केतिकी न केवड़ामें सरससितावमें ॥ ग्वालकवि ललित लवंग में न बेलिन में चन्दन न चन्द्रकन केसरिहि तावमें ॥ सेवती गुलाबमें न अतर अदाव में न जैसीहै सुवास कान्ह मुख महताव में ॥ ३३ ॥

कैधों श्रीमहीप मदनेश जूको एक सर नील सोहियत जाका विमल विकास है ॥ कैधों नन्द यशुदाकी गोद चहुँ कोदही मैं भरिवेको विविध बिनोद को विलासहै ॥ ग्वालकवि कैधों पीन पंगत प्रवीननकी तामें प्रेम पूरिवेको परम प्रकाश है ॥ कैधों ब्रजनाथ श्री विहारी लाल जूको वेस वदन विचित्र वीचहोत मंदहासहै ॥३४॥

अन्यच्च ।

कैधों शोक शंका त्रास क्रोध औ उदासी आदि ताके मारवेको मंजु कारन विलन्द हैं ॥ कैधों चित्त चूरकी

करन हार चिन्ता ताहि तुरत उचारिवेको इलम अमन्दहै ॥ ग्वालकवि कैधों श्रीयशोमतिको नन्दजूके मन करपनको सघन फांस फन्दहैं ॥ कैधों वनितानके वशीकरन करिवेको वांके श्रीविहारीजूको हांस मन्द मन्द हैं ॥ ३५ ॥

अन्यच्च ।

मासाहै न पास जाके चिन्ता चहुँ ओरनमें, नन्दश्री यशोमतिके दिलको दिलासाहै ॥ लासाहै सनेह को न छूटे चेप चपकनतें त्रास तूल तुंगनिको करत निरासाहै ॥ रासाहै न रनरस रंगनको ग्वालकवि रिससी बटेरके विनाशवेको वासाहै ॥ वासाहै विनोदको मवासाहै सुगन्धनको हाँसाहै गोविन्दको त्रिलोकको तमासाहै ॥ ३६ ॥

अथ नासिका वर्णन ।

केते कवि कीरसी कहत कमनीय याकों केते कहछबि तिलफूलके,वदनकी॥दोऊ में न कोऊ तूल एक वंक सूलसम दूजीमें न गन्ध है मलिंद मर्दनकी ॥ग्वालकवि यहतो सुढार औ सुगन्धकोस को सकै बखान सोभ सोभाके सदनकी ॥ नीलकंज कलिकासी नैनन निहारियत नासिका नमूद नीकी नन्दके नँदनकी ॥ ३७ ॥

कपोल वर्णन ।

कैधों नीलमणिके सुमण्डल बनाय राखे कैधों दल दीखे नील कँवल विशालके ॥ कैधों गोल गेंद आधरे हैं

नीलरेशमको नैनकों चबूतरा कै चिबक कमाल के ॥ ग्वालकवि कैधों प्रेम हेमकी कसौटी सोहै कैधों न्यारे न्यारे हैं किंनारे रूप लालके ॥ कैधों श्याम घनके अडोलहैं अबोल छोना कैधों अनमोलहैं कपोल नन्दलालके ॥२८॥

कर्ण वर्णन ।

कैधों श्रीमहीप मनजूके चोपदार चारु सब सरदारनकी अर्जके करनहैं ॥ कैधों शंवरारिके सुमन सरसिज नील तापै गजपुंजनको पहुँचत करनहैं ॥ ग्वालकवि कैधों लपसीनकी गुफाहैं ताके द्वार महराव दार कलित करनहैं ॥ कैधों कल कुंडलकी कान्तिके करनवारे नन्द के दुलारे कान्ह रावरे करनहैं ॥ २९ ॥

कर्णभूषण वर्णन ।

शेष सनकादिक महेश व्यासदेव जूलौं गावत अनन्त गुण अजहूं न हारे पै ॥ विधिके विचारहूमें मायाहै अपार जाकी को सकै सम्हारि चाढि मोह अनियारेपै ॥ ग्वाल कवि कुंडल जड़ाऊ जोर काननमें जेवदे रहेहैं यशुमतिके दुलारे पै ॥ मानो नील कंजकी फलीनपै विराजें आय साजे युगरूप शूर शैलके अखारेपै ॥ ४० ॥

अथ नेत्र वर्णन ।

मीन मृग खंजन खिसान भरे मैनवान, अधिक गिलान भरे कंज कलतालके ॥ राधिका छबीलीकी छहर छवि

छाकभरे छैलताके छोरभरे भरे छबि जालके ॥ ग्वालकवि आनभरे सानभरे स्यानभरे कछु अलसानभरे भरे मानभालके ॥ लाजभरे लागभरे लोभभरे लाभभरे लाली भरे लाड़भरे लोचनहैं लालके ॥ ४१ ॥

अथ चितवन वर्णन ।

दीन दिल दुःखकी विदारन बलीहै वेश नेमकै निवारनहै दारिद विशालके ॥ सम्पति समूहकी जरूर विस्तारनहै आनँद अपारनकी करन खुशालकी ॥ ग्वालकवि दीरघ दयाकी पैजपारैंनहै कारनहै तीनलोक रच्छनके ख्यालकी ॥ भूरि भवसागर उबारन उतारनहै अधम उधारन निहारन गुपालकी ॥ ४२ ॥

अथ भृकुटि वर्णन ।

कैधों रमनीय रूप ऊपर बकारी वेस कीनी महाराज कामदेव बलवन्तकी ॥ कैधों परिपूरन मयूखकी पियालिमपै वैठ अहिनन्द करि वक्रताई तंतकी ॥ ग्वालकवि कैधों दृगद्वारेहैं वहारदार तापै महाराव श्याममीना तेंलसन्तकी ॥ कैधों सतरौंहै नतरौंहै होत जोहैं ऐसी सोहैं मनमोहैं वंक भौंहैं भगवंतकी ॥ ४३ ॥

अथ भाल वर्णन ।

पाटी नीलमणिकीसी विधिने वनाई तापै ईश्वरत्व रेखनको जगमग्यो जालहै ॥ अंगराग चन्दन नवखौरिको

अधार अंग सौरभ अपारहीकौ तखत विशालहै ॥ ग्वाल-कवि आकृत अनूपम लखात पर मिलत कछुकशीशअधर धरिशालहै ॥ भूरि भाल भारनिको भूपति भलाई भर्‌यो भानको भवन भगवन्त जूको भालहै ॥ ४४ ॥

अथ खौरि वर्णन ।

कैधों चारु चामीकर तार तैं खचित एक पाटी नील-मणिकी बनाई विधि लागपर ॥ कैधों बेल अमर अरू-झि रही जालवारी इन्दीवर दलके विमल भलवागपर ॥ ग्वालकवि कैधों वृषभानुनन्दनीकी दुति लपटि रहीहै लखि श्यामता अदागपर ॥ कैधों अंगरागकी रहीहै जाग खौरि खासी रसिक गोविन्दजू तिहारे भाल भाग-पर ॥ ४५ ॥

अथ केश वर्णन ।

कैधों रूपतालपै सिवाल जाल जोइयत असित विशाल कामदेवहूते न्यारेहैं ॥ कैधों मखतूल नीलतारन-की पांते पूरि कोमल अमल नीलकंजहूतें भारेहैं ॥ ग्वालकवि कैधों चारु चौंगुंज अलकवारें भौंरसे भुवंगसे अपूरव निहारेहैं ॥ कैधों सोभ सौरभ सवांरे नेहडारे वारे प्यारे श्रीव्रजेशजूके केश घुंघरारेहैं ॥ ४६ ॥

अथ मोरमुकुट वर्णन ।

माथे मनमोहनके मुकुट विराजै गोल जामें गतिलोल जालगी कनीन कानिकी ॥ बीचाबीच हीराके जड़ाऊकी

जमक जैसी तैसी चारु चमक चमंकै लालमनिकी ॥ ग्वालकवि तापै मोरपंखकी गिरद कोर गोर छवि हरित असित झलकानिकी ॥ मानो शशि सूर दोऊ करत सलाह बैठे ताते तहाँ चारौं ओर चौकी बुध शनिकी ॥ ४७ ॥

अथ गति वर्णन।

माथेपै मुकुट मोरपंखको विराजै गोल गोल कल कुंडल लसनि मनि लालकी ॥ पौनके परस पीतपटकी उडनजैसी तैसी होत हिलन हियेपैं वनमालकी॥ ग्वाल कवि ग्वालनके संगमें गौअनपाछें गोरज गरक आछें अलक रसालकी ॥ हँसानिकी दावनि सतावनि गयंद वृन्द मन्द मन्द आवनि अनूप नन्दलालकी ॥ ४८ ॥

सवैया।

गलबांही सखानके डारिगैरें करें मीठी महा बतरावनिरी॥
अलकैं चिकनी झलकैं रजमैं ललकैं सुरभीनकी धावनिरी ॥
कवि ग्वाल फिरावन फूलछरी फिर फांदनमैं सतरावनिरी ॥
उरमैं अब आनि अड़ी अलसी अलबेली गुविन्दकी आवनिरी ॥ ४९ ॥

अथ पीतपट वर्णन।

कैधों पुखराज पुंज सोहैं शैल नीलमके कैधों चारु चपला चमंकै श्यामघनमें॥कैधों रस अद्भुत लपेट्यौ रसराज जूसौं

कैधों फूल चम्पक धरे तमाल घनमें ॥ ग्वाल कवि राजै सुरगुरुलै मदन कैधों हेमके वरख लाज वर्तकी सिलनमें ॥ कैधों दुति राधेकी सरकि परी श्यामतामें कैधों पीत पटहै सलौने श्याम तनमें ॥ ९० ॥

अथ सम्पूर्ण मूर्ति वर्णन ।

कोकनद पदकं जकोंस से गुलफगोल जंघ कदलीसे लंक केहरि विशालसों ॥ पानसों उदर नाभि कूपसी गम्भीर गुर उर नवनीत पानिपल्लव रसालसों ॥ मोरसे चिकुर गौन गजसों सुगन्ध वारौ शशिसों मुकुट सब तनहै तमालसों ॥ ग्वाल कवि ललित लतानसी भुजाहैं वेस कंबुसों गरोहै मुखचन्द कोकमालसों ॥ ९१ ॥ सेवत नरद आस भरन निवित्त पर सेवै क्यों न जाहि जो रची सभा सुरेशकी ॥ तिमर अज्ञानको विनाश्यो चहै दीपनते ध्यावै क्यों न जाहि जातै दुतिहै दिनेशकी ॥ ग्वालकवि जाके गुनगनको कौन वर्न सके मौन ब्रत्तिधारीव्यासहारी मतिशेषकी ॥ ज्ञानगजगतविखमन सिख सिख मेरी लिखटिख नखशिख छवि रिखकेशकी ॥ ९२ ॥

इति नखशिख सम्पूर्ण ।

अथ मानलीला वर्णन ।

दोहा—एक समय नवकुंजमें, विहरैं युगलकिशोर ॥
केकी कोकिल कीर पिक, करैं कुलाहल जोर ॥१॥
सखी समाज सुहावनो, सहज सहाइक संग ॥
दम्पति रुचिकी टहलमें, सावधान अँग अंग ॥ २ ॥
रसके स्वाद विशेषकी, भई नाहके चाह ॥
करी कपट करि लाडिले, परिति यरूप सराह ॥ ३ ॥
सुनत भयो रुख ओर तिहँ, कियो पृष्ठ पुनि और ॥
ठानि मान मन मौन गहि, मुरि बैठी शिरमौर ॥ ४ ॥
कर कपोल पट ओटदे, नीची नार निढाल ॥
सो नवीन शोभा लखैं, अति निहाल भो लाल ॥ ५ ॥
रिसघन घुमंड मचंकि गहि, कंचुक श्रम जल भीज ॥
रसिक शिरोमणि साँवरो, रह्यो रीझ सखि खीज ॥ ६ ॥
तदपि वियोग न सहिसके, जिह सँयोगकी बान ॥
चन्द्रकला भेजी प्रथम, सखी मनावन मान ॥ ७ ॥

कवित्त ।

छोरैं नहीं करते कपोल गोल क्योंहू कर मानो अरिविन्द गह्यो चन्दवकारि न्यारोहै ॥ नीठ नीठ देकै पीठ जोरै न कठोर दीठ वीतगई रात भयो प्रातको

उज्यारोहै ॥ तून चली हठते चलीरी पौह पीरी करि, चली अली अवली चलैरी सीरो व्यारोहै ॥ प्राणहूते प्यारो प्राणप्यारो खड़ो मानि एरी प्राण प्यारेहू ते ऐसो कहा मान प्यारो है ॥

दोहा—चन्द्रकलाकी कछु कला, जब न चली हठहेर ॥
चम्पलता भेजी लला, करि सलाह तब फेर ॥

कवित्त ।

कान न करत एको जानके अजान होत सबही सयान आज कितमें रितोइगो ॥ कान्ह केन आनतो समान आन खैंचे कहों तेरे हिये आनको अयान बीज वोयगो ॥ मान-तहै मानको गुमानही नवीनी तू सुमानकी अरथ सनमान कहा खोइगो ॥ मान एरी मानि तेरे पाइन छुवाऊँपान मानका कमान है जो ताने सुख होइगो ॥

दोहा—चम्पलताहूके मता, जब न बुझी रिस झार ॥
जानि तुंग विद्या चतुर, पठई नाम विचार ॥

कवित्त ।

समझ सयानी हठ कपट कपाट खोल गांठहिं निकास धरि सौदा जबै पटि है ॥ सूतही में गाढ़ो गहि पाय लियो तार तैंने खैंच किये अन्तजात गाहक उचटि है ॥ रैन चली वीत चिंते अबतो किते करी तू दाम लिये ठाढ़ो किये

लालसा निपटि है ॥ मनते उतार एरी मान कह्यो मेरो मानि मान कहा थान है जो फटे मोल घटिहै ॥
दोहा—मान तुंग विद्याहुते, नवन मिव्यो इक रोम ॥
गई सुदेवी लाल के, पठये जिय धारि जोम ॥

कवित्त।

जानत जनायेते न आनत हिये में एकौ ठानत कुठान स्यान कितको रितोइगो ॥ हित औ अहित की न बात पहिंचानत है छानत छन्योका अनुराग रंग धोइगो ॥ भानत गुमानको न सानत सनाम ऐरी ऐसो तुव चित्त कठिन।ईमें समोइगो ॥ मानत न तानत अमानतहै राखि याहि मान कहा तान है जो ताने रंग होइगो ॥
दोहा—जब न सुदेवी ते खुली, कठिन मानकी गाँठ ॥
हुलसि रंग देवी चली, सुघर मिलावन साँठ ॥

कवित्त।

प्यारी प्यारी प्यारी प्यारी रटत इतेपै तेरो,रोपकी लपत ढारि कितमें सनेहगो॥बोले नहीं मुख धार रहीरि रुखोंही रुख भ्रुकुटि धनुप चाढि मानौ विन जेहगो॥बीते चारी याम भये सौतिनके चीते काम, रीते करिहीते कहा आनन्द अछेहगो ॥ होत क्यों सुजान ह्वै अजान ऐरी मानि बलि मान कहा पानहै जो पाके रस देहगो ॥

दोहा-रंगी रँग देवी कछुक, बातन की उरझेट ॥
तब वृन्दादेवी चली, खोलन मन गुरझेट ॥

कवित्त ।

सम्भ्रममें सहज सरोष जिनहूजे प्यारी मंत्र ज्यों जपत ध्यारो आंक तेरे नामके ॥भूल्यो मोर मुकुट लकुट कटि पट बंसी खेल मेल खान पान धंधे धनधामके ॥ छीनिवारि मीन ऐसे व्याकुल तरफरात, लीन मगलोचन नवीन घन श्यामके ॥ लीजै मानि सीख वेगकीजै सनमान एजू मान और वान विन छूटै कौन कामके ॥

दोहा-वृन्दा देवीके कहे, कछुक भई रिस मन्द ॥
घँघटपटकी घटाते, कढ़न लग्यो मुख चन्द ॥ १ ॥
इतिक सहारो पायतकि, गई विसाखा तीर ॥
करी निवेदन जिन विविध, लाल हियेकी पीर ॥२ ॥

कवित्त ।

सुरझै न क्योंहू छल मुरझै छिनहीं छिन, छंद बंद फंदन को परचो उरझेरोहै ॥ कठिन गरबहीसों नठनि हठीलो ठाट अरबीलो कठिन सुभाइ दैया तेरोहै ॥ लालैलेवो भोवस मिलैवो रुख तोवसहै तेरो काम मानिवो मनैवो काम मेरोहै ॥ घटओ घटापटा तें मानि तू झटापटते मान और भोनके कढेहीमें उजेरोहै ॥

दोहा–सुनत विशाखाके वचन, भेरे रचन रसरंग ॥
लड्यो चाव हिय में सचन, नयनन नचन अनंग ॥१॥
तबमनके उनमान मत, ललिता ललित रसाल ॥
जाय किये सन्मुख खड़े, कर जोरे नन्दलाल ॥२॥

कवित्त ।

कमल दलन हूते कोमल अमल गात, रातहीमें देख मुरझाई डरयो मैनहे ॥ ह्वै रह्यो अधीन ताको कीजै न नवीन दीन, एरी परवीन अरवीनको समैनहे ॥ अंतर निवास तासों अंतर कहा है एतो, साँवरे विहारीकी तू प्यारी सुखदेन है ॥ सोहे न कठिन मन याखन सयानी मिलै, माखनसों माखनहीं आँखनको चैन है ॥

दोहा–ललित लता आनँद कलित, धनि ललिता सुखदैन॥
रस सरिता उमगी हिये, सुनि ललिताके बैन ॥ १ ॥
गयो मान तृण तूल वहि, रस प्रवाहके जोर ॥
भरे भुजनमें नागरी, नागर कुँवर किशोर ॥ २ ॥
मान छुटत मुखरुख मिलत, जो सुख भयो नवीन ॥
वरन सकै बुधि कौन कहि, केवल विना सखीन ॥ ३॥

इति मानलीला समाप्त ।

दोहा–हाली नाली वरदिया, करकैया कोतवाल ॥
ये सबेर रक्षा करैं, काना चोर छिनाल ॥ १ ॥

कलिमाहात्म्य ।

ब्राह्मण विभिचारी भये, योगी भये चमार ॥
महिमा या कलिकालकी, फैली अपरम्पार ॥ २ ॥

शेर ।

क्या कुद्रते इलाही क्या क्या खियाल रवहै ॥
क्या फिर गया जमाना हैयात क्या सबब है ॥
गदहोंके डरके मारे घोड़ों की जाँ वलबहै ॥
एयार क्या कहूं मैं यह दौर कुछ अजबहै ॥ ३ ॥
घर बैठे सब सिपाही कर अख्तियार सगीहै ॥
दोनों हलालखोर हुए इस असर में जङ्गी ॥
छत्री मुगल सिपाही हैरांहैं इस कलासे ॥
मोहताजगीकी कुंजीसे मुँह बन्द कर तलासे ॥
जैसाहै शाह दुल्लह तैसी बरात सबहै ॥
ऐ यार क्या कहूं मैं यह दौर कुछ अजबहै ॥ ४ ॥
जिसको नथी लँगोटी अब ओढता दुशाला ॥
अलगर्ज कि इसीमें राजा हुआ रिज़ाला ॥
एखलास तो जहांसे एकवारगी उठाहै ॥
खेशो विरादरीमें बेचारा बेवफाहै ॥
जोरू खसममें झगड़ा दिन रात रोजो शबहै ॥
ऐ यार! क्या कहूंमैं यह दौर कुछ अजब हैं ॥ ५ ॥

शोहदोंके साथ होकर पीते शराब जादे ॥
पगड़ी उतार देवैं रंडी जो कोई लादे ॥
औरत तो अब खसमको वस हेच जानतीहै ॥
हैं है खसमकी बातें खस भर न मानतीहै ॥
गर्ज औरतोंके हाथसे मरदों का जाँ वलबहै ॥
ऐ यार क्या कहूं मैं यह दौर कुछ अजबहै ॥ ६ ॥
मांगा अगर खसमने कुछ और लादे प्याली ॥
गुस्सःसे ले अङ्गारा देती हजार गाली ॥
जागो कुलाग वाज व वहरीकी अब हरबहै ॥
गीदड़के आगे यारों अब शेर वा अदवहै ॥
शुरफोंके रोजगारकी अजबस कीहुई तङ्गी ॥
तलवार तीर नीमचा वन्दूककी हरबहै ॥
ऐ यार ! क्या कहूँ मैं यह दौर कुछ अजबहै ॥ ७ ॥
कुरती व जंघिया पेन्हते वहैं सिपाह वांके ॥
धोबी हलालखोर तिलंगे हुए लड़ाके ॥
उमराव आलीशान जो खातेथे खुश नेवाला ॥
शरवतकी जगह पीतेहैं अब खूनका पियाला ॥
घर घर तमाशा नाच कहीं ऐश व तिरबहै ॥
ऐयार ! क्या कहूँ मैं यह दौर कुछ अजबहै ॥ ८ ॥
हरदमहीं बेटे बापमें कजिया व खरखशाहै ॥

देखा गया तो उनमेंभी कुछ मक्र व दग़ाहै ॥
पाजीसे वढके फिरतेहैं आजकलके अमीरजादे ॥
लुचपन उठा लिये हैं शोहदों ने अवतो ज़ादे ॥
रोतीहैं जोरू घरमें कसबी से जों वलवेहै ॥
ऐयार! क्या कहूँ मैं यह दौर कुछ अजव है ॥९॥
शौहर अगर कहै तो दिलगीर मानतीहैं ॥
रख बुग़ज जीमें अपने रोनाहीं ठानतीहैं ॥
औरतसे उनकी पूछोतो कहतीहै जाँ वलवेहै ॥
ऐयार! क्या कहूँ मैं यह दौर कुछ अजवहै ॥ १० ॥
चोवा चन्दन लगावें मोतीसे सर चुनावें ॥
सारा शहर फिरि आवें वेगानेको देखावें ॥
शौहर मनाकरे तो सौ गालियां सुनावें ॥
क्यों जावेंगे न वाहर तिहवार औ परवहै ॥
ऐ यार! क्या कहूं मैं यह दौर कुछ अजवहै ॥११॥
वाजी जो पाक सीरत दर खिदमते खसमहै ॥
शौहरसे दस्तवस्तः दिन रात दम् वदमहै ॥
तिनको दो चार मिलके कहतीहैं वेशरमहै ॥
येहैं छिनाल जितनी वेशर्म वेअदवहैं ॥
ऐयार! क्या कहूं मैं यह दौर कुछ अजवहै ॥ १२ ॥
वेवोंके तईं चहिये दिन रात गिरिओ जारी ॥
शौहरके ग़ममें जलना ईश्वरकी यादगारी ॥

सो पहनतीहैं चूरी चूनरकी रंगसारी ॥
खुशबू लगा वदनमें जा बैठतीं अटारी ॥
कहनेको हैंगी बेवा नाटककी ऐसी छविहै ॥
ऐयार क्या कहूं मैं यह दौर कुछ अजबहै ॥१३॥
वटपार चोर डांकू ये नहींहैं इस असरमें ॥
ओढेहैं उमदा कपड़ा पगड़ीहै भारी सरमें ॥
बांके सिपाहगरी वे करतेहैं अपने घरमें ॥
कोइ रै कहे कोइ वे कहे चुपचाप बैठे झरमें ॥
मारें कहीं मुसाफिर देते कहीं नकवहैं ॥
ऐयार। क्या कहूं मैं यह दौर कुछ अजवहै ॥ १४ ॥
पंडित व बरहमन सब गीता व ज्ञान गावें ॥
हरवंश भागवत सबै पौरान ले सुनावें ॥
तहँ खोलकर पत्रा तिथि औ लगन वतावें ॥
तिनको दो चार मिलके ठट्ठेमें ले उड़ावें ॥
तहकर रखो जो पत्रा मालूम हमको सबहै ॥
ऐयार क्या कहूं मैं यह दौर कुछ अजवहै ॥१५॥
है हाय अशराफगर्दी क्या क्या पड़ीहै आकर ॥
दर्बा करते फिरतेहैं कर्जो अवाम खाकर ॥
खासा सा मुँह बनाकर फिरते उमीद पाकर ॥
कोइ वातभी न पूछे रखताहै कौन चाकर ॥
गर चाकरी हुईभी दोटकेकी तलबहै ॥

ऐयार क्या कहूं मैं यह दौर कुछ अजबहै ॥ १६ ॥
जिन शाहको शुमार नथी गंज गोहरकी ॥
सो वेंचते तम्बाकूपर चलती नहीं है घरकी ॥
मिट्टीके ढोते ढोते उडते थे बाल सिरके ॥
जिनके तईं अब देखो तो अम्बार लगे जरके ॥
सरफाका खर्चहै क्या यह शेवई कलबहै ॥
ऐ यार ! क्याकहूं मैं यह दौर कुछ अजब है ॥ १७ ॥

साधु—सवैया ।

दान औ मानको जाने नहीं सब दूरभई गुणकी परिपाटी ॥ हैं विभिचारी अचारी बडे जिने लागे नहीं दरबारमें साटी ॥ वारी कवारी कहारनी राखत इष्ट विरोधी कुबुद्धिन राटी ॥ लोकमें सोई बड़े भगता धरें कण्ठमें काठ कपारमें माटी ॥ १८ ॥

कवित्त ।

बड़े विभिचारी कुलकानि तजिडारी निज आतम विसारी अघ ओघके निकेतहैं ॥ जटा शीश धारें मीठे वचन उचारें न्यारे २ पन्थपारें शुभपन्थ पीठ देतहैं ॥ भागवत कहानी वेद भेदको न मानीं ऐसे डमर विहानी होत आये वारसेतहैं ॥ कलि ठकुराईमें विरागकी बड़ाई करें माई २ करिकै लुगाई करलेतहैं ॥ १९ ॥ घरकी पियारी ताहि करके नियारी अब वनके अचारी भारी

डोलत सफरमें ॥ छोड़ द्विजदेवनकी मण्डलीको सङ्ग भलो साधु कहवाय जाय सोवत नफरमें ॥ कहैं शिवराम सांची बातहीके आंच माने आँखिन फिराय ऐंठ बैठत अकरमें ॥ रोयगाय हंसिके सुजीवनके छीनधन करिके मकर प्रागजातहैं मकरमें ॥ २० ॥

दोहा—कलियुगमें द्वैभक्तहैं, वैरागी अरु ऊंट ॥
वे तुलसीवन काटहीं, इन किये पीपर ठूँठ ॥ २१ ॥

भक्त—कवित्त।

तिय तनु चुम्बकमें लोहसे लगत दौर हरिध्यान रङ्गमांह उजहे कपूरसे ॥ ज्ञान धन दुन्दुभी वजत कांपे कायरसे नारि नैन नावक विशिप सहैं शूरसे ॥ स्वारथके वातनमें सावधान रोज २ लाये परमारथमें पकारि मँजूरसे ॥ कामकी कथानसों पियूपसे पियत फिरैं हरिगुणगान तजैं माहुर धतूरसे ॥ २२ ॥

भाकिनि।

खाय गई खसम भसमको रमाय लई सम्पत्ति नशाय दुहूं कुलमें विघनकी ॥ धाई भई साधुनकी पांतिको पवित्र कीनी माईजी कहायके लुगाई बनी छनकी ॥ कामसारी छोहरे दिखाय परैं कहूं तो न पाय धरें भूमें ना हवास रहे तनकी ॥ पाय २ पूतन वहाय दीनी सोतनमें हाय गति कहांलौं बखानों भगतिनकी ॥ २३ ॥

पति ।

बाजे बाजे राजनकी खस्लत खराब करैं, दान और-पुण्य वृथा अयश सहा करैं ॥ गजब गरूर भरे मानैं इन्द्र आपहीको भूपति कहायबेको मनमें चहा करैं ॥ दा-मोदर कहै चौकी रहेतो सिपाहनकी माँगिवेके डरन अकेलेही रहाकरैं ॥ पशुको सुभाव लिये नसको सवाद जिन्हें चसको पतुरियनको यशको कहाकरैं ॥ २४ ॥

सवैया ।

नहिं तीरथ वर्त किये तो कहा तिरियागनमें किये गस्ततोहैं
नहिं शम्भुहि पूजिसके तो कहा बनिता कुचपै धरे हस्ततोहैं ॥
नहिं दान दिये द्विजको तो कहा करछूटमें कीनी प्रहस्ततोहैं
यश अस्त समस्त भयो तो कहा गनिकाके उपस्तपै मस्ततोहैं

कवित्त ।

सोई सही राजा दान धारा न रुकंति जाको युद्ध जनधारा देवदारा मुख जोवती ॥ कवि हरकेस कहै सोई सही राजा जाकी प्रजा ध्रुव धरम धुजाके छांह सोवती ॥ ऐसें तो कहावतहैं कोरी राजा कोडी राजा घर २ राजा मान मैया मुँह जोवती ॥ मुमिरि २ चमरैलियां कुरैलियांहू मूयेतें खसम राजा २ कहि रोवती ॥ २६ ॥

कुण्डलिया ।

राजा ह्वांहैं आंधरे मूक वधिर अज्ञान ॥
सभा समैं तैसी भरी तानै कहा वितान ॥

तानें कहा वितान अरे नट बुद्धि विहीने ॥
लखे सराहे कौन सुने जो दृग श्रुति हीने ॥
वरनें दीनदयाल सुनाट्यकला सुरबाजा ॥
ह्वैहैं बनके फूल भूल मति तू मुनि राजा ॥ २७ ॥

दोहा—तबके नरपति वे रहे, रीझें तो कछुदेयँ ॥
अबके नरपति ये भये, रीझें औ लिख लेयँ ॥२८॥

भूप समाज—कवित्त ।

महल मशान लसैं मूसलें मवास वसैं गुञ्जैं बिलार दिन रैन जाके पासमें ॥ प्रभाकर कहे जिन्द जलके जलूसी सजैं मसनद ऊपर परिन्द सुख रासमें॥गीदर शृगाल श्वान सकर सरप गोह गिरगिट गोजर विराजत विलासमें ॥ प्रेत पर यक्ष राचें भौननमें भूत नाचें खविस भण्डारन उलूक आमखासमें ॥ २९ ॥

सवैया ।

मोहित प्रेतसे राजें जहां अरु ज्योतिषी जिन्दसे रार बढैया
पेखे पिशाच पुरानिकजू झुठमण्डलके सबै बाते गढ़ैया ॥
कायथ काकसे कूकें जहां मुनसीहिं मशानके रूप बढैया ॥
हैं सब एक से एकबने पर एक न देखे कवित्त पढैया॥ ३० ॥

जनानिया—कवित्त ।

हालि२हुलसि २ हँसि २ देखें मुख वदन वतीसी मीसी दीसी दिन रातहै ॥ जामा पायजामा सब सामाको चलावै कौन

जगत जनाननकी सीखी सब घातहै ॥ लोककी न लाज परलोकके करैं न काज ठाकुर कहाय कहा चोरी उतपातहै ॥ गणिका ज्यों डोली पर बैठत खटोली पर चालपर चोलीपर बोली परभातहै ॥ ३१ ॥

मूर्ख—कवित्त ।

साधकी न साधहै असाधहीकी सेवाकरैं कपटी रसायनीको देख हरखातहैं ॥ मारिजाने पारो तामो वइकरैं हेमरङ्ग देहैं करि चौगुनो गुरूकी सौंह खातहैं ॥ आपने पराये सब गहने उतार लाये रहैं मुँह वाये स्वामी काजमें सखातहैं ॥ लोभचानी सोनेधर खानेके करम कीने रोवैं बैठ कोने जब दूने कर जातहैं ॥ ३२ ॥

नास्तिक—कवित्त ।

शम्भुते न सूधो डरैं दूर दुर्गातें रहैं जाहि न तृपाहै गाहि गंगाजलपानकी ॥ कहै पदमाकर सुनीन शठ सपनेमेंभापी वालमीकिजो कथाहै भगवानकी ॥ सतीपति चरण सरोजतें विमुख सुख चाहत इतोपै गाठी माठी अभिमानकी ॥ जैसे नरमूढ गाजरनकी तुलापै चढि आनन उठाय वाट हेरत विमानकी ॥ ३२ ॥

दानी—सवैया ।

वार हमासलों पथ्य कियो पटमासलों लंघनको कियो कैठो ॥ माधो भने नित मैल छुड़ावत खाल कढ़े जतु

जातहै सैंठो ॥ जो कवहूं वहूं देति खवाय तौ कैकर डारत सोचमें पैठो ॥ मुण्ड मुड़ायके मूँछ घुटायके फस्त खुलाय तुलाचढ़ि बैठो ॥ ३४ ॥

दान—छप्पय ।

तिमिरलिङ्ग लइमोल चली वावरके हलके ॥
रही हुमाऊं साथ गई अकवरके वलके ॥
जहांगीर जस लियो पीठकर मार मिटायो ॥
शाहजहां करि न्याय ताहिको माँड़ चटायो ॥
वलरहित भयो पौरुपथक्यो भगी फिरत वनस्यारडर ॥
औरंगजेव अतिशै वली सो दीनी कविराज घर ॥ ३५ ॥

कवित्त ।

कारीगर कोऊ करामातकै वनाय लायो लीनी दाम थोरी जानि नई सुघरई है ॥ रायजूको रायजू रजाई दीनी राजीह्वैके शहरमें ठौर २ सोहरत भईहै ॥ वेनीकवि पायके अघाय रहे घरीद्वैक कहत न वनै कछु ऐसी मति ठईहै ॥ सांस लेत उड़गो उपल्ला औ भितल्ला सवै दिनद्वैके वाती हेत रुई रहगईहै ॥ ३६ ॥ आधपाव तेलमें तयारी भई रोसनीकी आधपाव रुईमें पोसाक भई वरकी ॥ आधपाव छालेको गिनौरा दियो भाइन को माँगि माँगि लायोहै पराई चीज घरकी ॥ आधी आधी जोरि वैनी कविकी विदाईकीनी व्याहि आयो जवतें वोले न वात

थिरकी॥ देखि देखि कागद तवीयत सुमांदीभई सादी कहा भई बरबादी भई घरकी ॥ ३७ ॥ चूकसी लगत चाखे लूकसी लगावे कण्ठ ताप सरसावै हैं अपूरव अरामके ॥ रसको नलेस चोप रक्षाहै हमेस छाड दीनो सब देश पकुसाने परे घामके ॥ बुरे बदसूरत बिलाने बदबोयदार वेनी कहे वकला बनाये मनो चामके ॥ आये विन दामके ये निपट नकामके सुकौड़ीके न कामके हैं आम दयारामके ।। ३८ ॥ लागतही ओठ होगयेहैं लोट पोट यारों जैसे हालाहले होत व्याल विपधारीको ॥ चढ़े त्रिपितापै लागी झारकी झरापै अंग अंग सब कांपै वैद पावत ननारीको ॥ कहे कविलाल विन मीच मीच आवे यामें जामें प्रगट्योहै धन्य खेत वा उखारीको ॥ चिरका कपार जब थिरका कटोरा वीच हिरका जवान आज सिरका तिवारीको ॥ ३९ ॥ सेर चार चाउर पसेरिक पिसान मांग्यो तापै खरे डाटैं कोऊ साने वड़ी घानीना ॥ वहूको बुलाय मसलहत सिखाय कान पैठजा रसोईं कोऊ परसे वेगानीना ॥ वेनीकवि कहै कहा आये आज याके यहां देखि सुनि परे कहूं अन्नकी निसानीना ॥ कीनी महमानी जुरयो पान औ न पानी ग्रकै आपै बड़ो दानीमानी जानी कोऊ जानीना ॥४०॥ गोबरको गञ्ज गुबरौरन को गेह महा गोहनको खेड़ाहै अखारो मुसरोनको ॥ छपकी

छछूनरी छराये जहां छाईरहैं व्यालो व्याल वरैं झुण्ड झावर झिरीनको ॥ माछिनको मुलक मिलक मूसा मच्छनको, भूतनको भौन तहां मेको मकरीनको ॥ ऐसो डेरा दीनो देवीदास जयदेव जूको छानौ चुवै पानी जैसे चामचलनी-नको ॥ ४१ ॥

सूम—कवित्त ।

जोरैं न नज़र मोरैं वदन बतावैं ठाला हँसि वहरावैं बात फेर बुलवावैंहैं ॥ कविकी वड़ाई करैं भूपनके योग तुम यश कों न चाहैं मान दम्भको बढ़ावैंहैं ॥एकै आवाजाहीमें थकावें औ वितावें दिन एकै करैं वादा वात जानकी जनावैंहैं ॥ खायँ न खिलावैं भर पेट मनहेठ सदा एते सूम लोगनके लक्षण गिनावैंहैं ॥ ४२ ॥ सूम समुझावै निज सुतको सिखावै सीख इतिहास लावै कहै मनको चला नहीं ॥ पुण्यके कियेते पुत्र प्रिया हरिचन्द्र बेंचि डोम घर रह्यो जासो शीशअचला नहीं ॥ भनत गुलाल देख नृग कृकलास भये पुण्यको विलास आश बलिको छला नहीं ॥ भिक्षुकको देखे लाल लरिवो सलाहठीक है पुनि मरिवो पुण्य करिवो सलाह नहीं ॥ ४३ ॥

सवया ।

आवत देखि कवीश्वरको उठि आतुर भागतहैं जँग लासे ॥ चाल चलैं फिरकी फिर खात घुसैं खिरकी में नई

अबलासे ॥ भेंटभई वरिआई कहूं तबहीं मुँहवाय रहैं तबला से ॥ सान करैं बड़ी साहिबीकी अरु दानमें देखि परैं कंगला से ॥ ४३ ॥ आइये बैठिये आंखिनपै कुलकानि हमारी यहै सुन लीजे ॥ रीति हमारे बड़ोंकी यही कोऊ केतो रिझावे छदाम न दीजे ॥ दोहा कवित्त औ छन्द पढ़ो गुणकी गरमी कबहूं न पसीजै ॥ और जोहै सो तिहारोही है पै इनामको नाम यहाँ मत लीजै ॥ ४४ ॥

कवित्त।

आज को कहैं तो आठ मास नहिं लागै ठीक काल्ह जो कहैं तो मास सोरह चलावहीं॥ पांच दिन कहैं पांचबरस बितायदेइँ पांचकोकहैं तो पचास पहुँचावहीं ॥ भनत प्रधान जो वे ताहूपै न त्यागे द्वार आपना लजात फेर वाहूको लजावहीं ॥ ऐसे सत्यवादी सरदारहैं दिवैया जहां काहेको पवैया तहां जीवतलों पावहीं ॥ ४५ ॥ खायो न खवायो वृथा जनम गंवायो जग, हाँस उपजायो सब भांति गरि गरिगे॥स्वारथ न कीने परमारथ न कीने कविराजनन दीने गाडि धरा धरि धरिगे ॥ दामोदर कहै यह वखान कल सूमनके पाछहूं कुयशके भँडार भरि भरिगे ॥ काम आये काहूके न दामये निकाम ऐसे जोरि जोरि कृपिन करोर मरि मरिगे ॥ ४६ ॥

सवैया।

न टारेसों नैक टरे मोदी सुडाँडिनमें बहु भाव भरैं॥
साजि गाजे वजाज अवाज मृदङ्गलों बाँकिये तान गिनीरीलरैं
पट धोवी धरै अरु नाई नरै सुतमोलिन बोलिन बोलधरैं॥
कवि गंगके अङ्गन मङ्गनहार दिना दशसे नित नृत्य करैं ४७

कवित्त।

हाव भाव विविध दिखावैं भली भाँतिनसों मिलत न रतिदान जागे सङ्ग यामिनी॥ सुवरन भूपन सँवारें ते विफल होत जाहिर किये तें हँसैं नर गजगामिनी॥ रहे मनमारे लाज लागत उघारे बात मन पछतात न कहत कहूं भामिनी॥ बेनी कवि कहें बड़े पापनतें होत दोऊ, सूमको सुकवि औ नपुंसक को कामिनी॥ ४८॥

दोहा—कचो पचै माखिहु पचै, हालाहल पचिजाय॥
रीझ बूझ जासों पचै, तासों कहा बसाय॥ ४९॥
परै सूम अरु सरपकी, एकै गति दरशात॥
धन मन बिछुरे दुहुँनके, शीशधुनत दिनजात॥५०॥

गुलाम—दोहा।

जो हरदी जरदी तजै, तजै खटाई आम॥
जो सुशील शीलहिं तजै, औगुन तजै गुलाम॥ ५१॥
शीश कलपि आगे धरो, तन पनही के चाम॥
तबौंन अपनो होतहै, नमक हराम गुलाम॥ ५२॥

वैद्य—सवैया ।

आक धतूर धमोय भरै ककरी पुटदै जग वैद कहावैं ॥
जाने नहीं कछु लक्षण रोगको सीत भये पर छांछ पियावैं॥
हिंसा वदैं महा ब्राह्मणसों गुनताके प्रधान कहां लगि लावैं॥
कुत्सित वैदनकी करनी ये वैतरनी गऊ लै घर-
आवैं ॥ ५३ ॥

कवित्त ।

शम्भु नैनज्वाल औ फनीको फूतकार कहा जाके आगे महाकाल दौरत हरीलीतें ॥ सातोंचिरजीवी पुनि मार्कण्डे लोमसलौं देख कम्पमान होत खोले जब झोलीतें ॥ गरल अनल औप्रलैके दावानल भल वेनीकवि छेद लेत गिरत हथोलीतें ॥ वचन नपावैं धनवन्तरिजोआवैं हरगोविन्द वचावैं हरगोविन्दकी गोलीतें ॥ ५४ ॥

सवैया ।

चूरनतें कियेचूर अनेक जुलावके जोरते लाखन मारे ॥
द्वारते देखत वीथिनमें मरे आवतहैं सबलोग पुकारे ॥
बाल युवा युवती जन भागत रोवतहैं परै वृद्ध विचारे ॥
वैद्भये जबतें हरिजू तबते यमराज रहे विन कारे ॥ ५५ ॥

अमला—कवित्त ।

कङ्गला जहानके सुसाहिबके बङ्गलामें हुक्का सुलगाय शीश बांधि २ समला ॥ वैठिबरमला कछु करिके क-

लाको फेर ज़ुमलावताय कर लूटलेत कमला ॥ विप्रकेन वल्लभये सल्लभसे एक सङ्ग ज़ुरिके कियोईकरैं जलान के हमला ॥ झूँठहिमचावैं करकमल नचावैं अहो ज़ुलम मचावैं ये अदालतके अमला ॥ ९६ ॥

बनिया—कुण्डलिया ।

बनिया अपने बापको ठगत न लावै बार ॥
निश वासर जननी ठगे जहां लेत अवतार ॥
जहां लेत अवतार मास दस उरमें राखै ॥
गुरुसों करै विवाद आप पंडितह्वै भाखै ॥
कह गिरिधर कविराय विचैया नीमक धनियां ॥
मित्र जानि ठगिलेत जहां लग भक्ता बनियां ॥९७॥

सज्जनाऽसज्जन—कवित्त ।

सुयश गवावैं भगतनहीसों प्रेमकरैं चित्त अति ऊजरे भजत हरिनामहैं ॥ दीनके न दुःख देखें आपने न सुख लेखें विप्र बाप रत तन मैन मोह धामहैं ॥ जग पर जाहिरहैं धरमनि बाहिरहैं देव दरसन तें लहत विसरामहैं ॥ दासजू गनायते असज्जनके कामहैं समुझि ये देखो सब सज्जनके कामहैं ॥ ९८ ॥

प्रसिद्ध खल—कवित ।

दिल्लीके हरीफ लोहलङ्करी हड़ावतके वामन बुलन्द वीर जान्हवी तटाकेहैं ॥ कासिकाके काँगा औ फकीरते

मदारिनके मथुराके कीस कावा द्वारका वटाकेहैं ॥ कहैं मनिलाल नागपुरके अतीत और ढ़ोर पडनाके कूर कूकर हटाकेहैं ॥ भागत न हांके एते जाहरहैं वांके जोर मता मढ़िलाके चोर चपरघटाके हैं ॥ ५९ ॥

खल वचन—कवित ।

सेहथो हथ्यार अनियारेहैं अनेक काम सरहूतें तीखे खलवचन विसेखिये ॥ चोरन वचत ओट कीनेहू कपाट कोट भौन भोहरेहू भारे भय अवरेखिये ॥ केसौ दास मंत्र तन्त्र जन्त्रहू न प्रति पच्छ रच्छ लच्छ रब्रज रच्छ कन लेखिये ॥ भेदियत मर्म बर्म ऊपर कसेई रहैं पीर घनी घायलन घाव अवरेखिये ॥ ६० ॥

चुगल—कवित्त ।

जैसे मूसा थान वेस कीमत कतर जात कौवाहू विगार जात फलसके नीरको ॥ साँप डँसिजात विप चढ़िजात रोम २ कुत्ता काट खात राह चलत फकीरको ॥ मुरली कहत जैसे विच्छूडंक मारिजात कछु न सुहात व्यथा करत शरीरको ॥ वैसेही चुगल चोर नाहक परायो काम देतहैं विगार ना डरात रघुवीरको ॥ ६१ ॥

गौरव—कवित्त ।

सुरतीमें सूरति नहायवेमें तेमरह्यो तेहरह्यो तियमें रुआव रह्यो हुक्कामें ॥ शूद्रमें सुचाल औ कुचाल रह्यो

ब्राह्मणमें चेरिनमें प्रीति बडी मार रही मुक्कामें॥ भनत कविन्द अरु मंत्र टोना टामरमें राग रह्यो कहरन राव रङ्क हुक्कामें॥ प्रीति औ प्रतीति चोर चुगलके बीच रही दान रह्यो पातुरमें सान रह्यो हुक्कामें॥ ६२॥

स्त्रीवर्ण—सवैया।

होतहि प्रात जो घातकरै नित पारै परोसिन सों कल गाढ़ी॥ हाथ नचावत मुण्ड खुजावत पौरं खड़ी रिस कोटिक बाढ़ी॥ ऐसी बनी नखसे शिखलों ब्रजचन्द्रजू क्रोध समुद्रतें काढ़ी॥ ईटा लिये पियको मगजोवति भूतसी भामिनि भौनमें ठाढ़ी॥ ६३॥

टाटको घाँघरा घूमि रह्यो तन कामरीकी ओढ़नी उनई है॥ रोलीकी मैल परी तनमें अरुमाँग जुँआरिन झुण्ड भई है॥ झींगुर माखीकि लोनी लगी अरु नाक मनो नव खानमई है॥ ऐसी तियाके विलोकतहीं अब बालमकों मुँहवाय भई है॥ ६४॥

कवित्त।

वार२लीखें लगी लाखन जुँआँके जोट आंखिन वरौनि-नमें कीचर छपानोहै॥ कानन कनोई नाक चपटी चुवत रैंट कारे २ दन्तन में कीट लपटानोहै॥ मूँडपै मकर जारो दिखत अन्धारो लगे ओढ़े मैलवारो बड़ो वसन पुरानोहै॥ बोलतही थूकके फुहारे चलैं फूहरके पाद २ पीसत पिसानहूं

छड़ानोहै ॥ ६५ ॥ ल्याई एक लत्तामें लुकाय बड़ी बार-हीतें देहको पसीना मैल मिलै २ सानौहै ॥ देहकी छिछो हैं वा कलेऊमें कलेसी दही महा दुरगन्धको पसारो पीन आनौहै ॥ फूहर फजीहत करीहै फहराय वहराय २ मूड़ा ढोहत फिरानो है ॥ वरी विगरीसी औ विजौरा चामकैसे चुरैं पाद मारे पापर औ थूँक मारे थानौहै ॥ ६६ ॥ चौरी चारु मौवा धरै डारियामें जेवे तेवे चूल्हेपै चढ़ाय चना चूनमें सनै देरी ॥ लवरी वनायकै कठौतमें परस राख मोय लगी भूख औ करन कनै देरी ॥ कही मान मेरी दही डारि दे जरूर सूखे मुरका गुरन नाहीं पानीमें पनै देरी ॥ भूजिके करैया में सुकूटके पट्टापै भौजी भटन संग मोहि लटातौ बनैदे री ॥ ६७ ॥

स्त्रीकर्म्म ।

अनलाउ धनलाउ भूषण वसन लाउ आग लाउ साग लाव लाड ये बढ़े रहैं ॥ लरिका खेलाय लाउ अंगिया सिलाय लाउ लाउ २ करिवे ते चुपन घडी रहैं ॥ वाजीगर बन्दर को जा विधि नचावतहै लिये लकडी को निशिवासर खडी रहैं ॥ मरद लुगाई पै चढत घडी एकपर मरद के शीश ये जनम लौं चढी रहैं ॥ ६८ ॥

गणिका ।

भेंटतही माँगे भेंट पीछेते गहति फेंट लेट २ जात अङ्ग हाथन वगा देहै ॥ नवस अनादै कहै भूपन वनादै चारु

चूनरी रंगादे और घरम भगादेहै ॥ एरे मतिमन्द परैमाति गणिकाके फन्द ऐसी व्यभिचारिन ये प्रेममें दगा देहै ॥ कामको जगादे व्याधि सिगरी लगादेदे मंगा दे देमँगादे करे रतिमें तगादे है ॥ ६९ ॥

छप्पय ।

जाति हीन कुलहीन अन्ध कुण्ठित सुकुटिल नर ॥
जराग्रसित कृशगात गलित कुष्ठी अरु पामर ॥
ऐसोहू धनवान होय तो आदर वाको ॥
अपनो गात विछाय हरैं सरबस ये ताको ॥
इन अति अशौचकी खानि अरु पातकमय मूरति निरखि ॥
लखि वचत वड़े कुलवन्तनर रचत पचत मूरख हरखि ७०
कुगति वहन गुन गहन दहन दावानलसीहै ॥
सुयश चन्द घनछांह देह कृश करन छईहै ॥
धन सर सोखन धूप धर्म दिन सांझ समानी ॥
विपति भुजंगम वास बम्बई वेद बखानी ॥
यहि विधि अनेक औगुन भरी प्रानहरन फांसी प्रबल ॥
मति करहु मित्र जिय जानि यह परनारी सों प्रीतिफल॥७१॥

ण्डलिया ।

या वनमें करि केहरी कूप गम्भीर अपार ॥
है पहारके बीचमें बसत एक वटपावार ॥
वसत एक वटपार उभै धनु शर सन्धाने ॥

ता पीछे इक श्याह नागिनी चाहति खाने ॥
बरनै दीनदयाल इनै लखि डरिये मनमें ॥
पथिक सुपन्थ विहाय भूलिये नहिं या वनमें ॥७२॥
दोहा—सकुची पूँछे बसत विष, मस्तक बसै भुजंग ॥
केहरके नखमें बसै, तिरिया आठों अंग ॥ ७३ ॥

गणिका पुत्र—कुण्डलिया ।

गन्धर्विन कलि जनमिले किये प्रेम भरपूर ॥
तातें यह पैदा भये कृपिन कृतघ्नी कूर ॥
कृपिन कृतघ्नी कूर चूर नित रहैं सानमें ॥
चुगल चूतिया चुहल बाज नित धरैं ध्यानमें ॥
कह गिरिधर कविराज बड़ेहैं दुगला दंपिन ॥
रूप संहित गुनरहित मूढ़ यह सुतगन्धर्विन ॥
जैसे आप लपाड़िया तैसोई परिवार ॥
हँसि २ के बातें करैं दियो न जाने सार ॥
दियो न जाने सार भांड भँडुअनके भाई ॥
बार २ कह देत बारयन केर लुगाई ॥
कह गिरिधर कविराय पचैया परधन ऐसे ॥
जरत जीवलखि हरचो हलाहल शंकर जैसे ॥७८॥

लखनऊ कीच—कवित्त ।

गड़िजात बाजी औ गयन्द गन गड़िजात सुतर
अक्कड़िजात मुसकिल गऊकी ॥ दांवन उठाय पाय धोखे

जो धरतहोत आप गरकाप रहिजात पाग मऊकी ॥ बेनी कविकैहै देखि थर थरकाँपै गात रथनके पथना विपतिवर दऊकी ॥ बार २ कहत पुकार करतार तोसों मीचहै कबूल पैन कीच लखनऊ की ७६ रथ गज बाजिनकी मुशकिल परी देख गऊ वृप बछरू सुतर कहरात है ॥ कहे विप्रबछ भ जितक जीव जन्तु सबै खरे कहरात ना उपाय ठहरात है ॥ नीच कीच भयतें शहर लखनऊ बीच देखि नर नारि नको धीरज हेरात है ॥ मीच वश होय कोऊ धोखे पाय धरे खरे आप गरगाप सिखा साफ पहरात है ॥ ७७ ॥

कवि कवित्त ।

भइ बादशाही दान खाते बादशाही सान राखैं बादसाही सूम मारनको चाँपे हैं ॥ माने बादशाही फरमाने बादशाही हरनामे बादशाही देख कूर यासों काँपे हैं ॥ कहै कवि लाल राजा राव उमराव सबै माने बादशाही वैन कहत अलोपे हैं ॥ दै दै दान जव्वर मिटाइ कर गव्वर सुवव्वर हुमायूं औ अकव्वर के थापे हैं ॥ ७८ ॥ पिङ्गलकी पाग स्वच्छ गीताकी रजाई वनी अमरको अंगा अंग अंग में लसत हैं ॥ कोककी कमान अरु बान बनो सत्यहीको देवीके चरन युग हियमें धरतहैं ॥ तगनकी तेग औ जगन की कटारी वनी मगनकी ढालते सुसोभित रहत हैं ॥ एते हथियार जोपै कविको तयारहैं तो कविहै सिपाही ताको

यांचक कहत हैं ॥ ७९ ॥ राना औ रठौर घने हाड़ा कछवाहा आदि मान दान देतहैं सदाही चित चेत्त सों ॥ नरहरि पालकीको शाह अकवर लीने कीन्हे भू अकास लगि दिस जस सेतसों ॥ शङ्कर वखानै और कहां लौं गनाऊं सबै सान दृढ़ चाहि आन नृप शिर नेत सों ॥ आदर कवीनको सदाही चलि आयो भूप उज्वलको छौंना होत मौना कोहि हेत सों ॥८०॥ शम्भुनैन तीसरे उदोंसे वचै कैसे कालकूटहूके पोखे गोन एतेहै उतालके ॥ वारहो दिनेश तेज तीछनके तोसे गाज गजवके गोसे सो वचै नहीं कुचाल के ॥ सगन गनोसे बड़े भूरे अपसोसे रहे वैरी के भरोसे डसे भुजँग कराल के ॥ जोसे महा सिंहनके दोसे महा पातकके कविनके रोसे औ परोसे वसे काल के॥८१॥ताना देत तरल मताना मूढ़ गूढ़ वार जाना सब जगत कवित्तको करम है ॥ मासहू विताना खोलि पानको हिसाब देख तोही देती दाना जाना तेरोई मरम है ॥ दाना दरती सो ना लखाना कहे शिवराम राना राव भूपनको छूटत धरमहै ॥ चाहो रोज खाना रह्यो एकहू न आना मातु भे जिये खजाना राखिवानाकेसरम है८२गौरकी दीने गणनाथ को सकेलि सिद्ध काशी कोतवाल भैरों तेऊ जपैं तोहू को ॥ दीने कयलासके निवास स्याम कार्तिकको कीरति वदन

दई कीरति सु ओहू को ॥ चारहूंते ओछा पिट पोछा कोछा शिवराम हीसा विसोवीसा यामें कीसा कहा कोहू को ॥ तेरिये दोहैया नाहिं देत वाप भैया तोसों मांगतो न भैया जो रुपैया देती मोहू को ८३ सगनके भालेजे करत उर शालेहैं अवधि जिन पाले जिन ओट चोट चीन्हेहैं ॥ रगनके वानछूटे आनन कमान प्रान घातक जगन जम डाढ़ वाढ़ कीने हैं ॥ धनीराम तैंगनकी तीखे तरवार जिने लीने फिरे देश २ निधरक कीने हैं ॥ मनमें विचारि सूम शघुनके मारिवेको काली मोहि गुपत हथ्यार चार दीने हैं ८४ सुकवि सिपाही हम उन राजपूतनके दान युद्ध वीरता में नेकहू न सुरके ॥ यशके करैया हैं महीके महीपालनके हियेके त्रिसूहीहैं सनेही सांचे वरके ॥ ठाकुर कहत हम वैरी वेवकूफनके जालिम दमादहैं अदेनिया ससुरके ॥ चोजिनके चौजी मनमौजिनके महाराज हम कविराजहैं पैचाकर चतुरके॥८५॥साह अकवरजे वतन करि गांव दीने नामदीने हरिजे पवैया गज मत्ताके ॥ साह जहांगीर हरनाथको हज़ार दीने हाजिर रहैया हम दिल्लीके चकत्ताके ॥ साह जहां साहव हवेली चौक चांदनीमें विक्रम वखाने गुन देव दर खत्ताके ॥ साह अवरंग औ बहादुर कुतुव साह हमतो क़दीम एक याचक चकत्ताके॥८६॥ इम कवि जौहरी रतन गुन पारखीहैं जस मुक्ताहल चहूंधा दरशाय

हैं ॥ पायेहैं जे नृपकरनाम रन करिवेको तिनहीके आगे वेस किम्मति सुनाय हैं ॥ देहैं जे मँगाय मौज लैहें दरवार सोई ईछन अवादो खत टीपना लिखाय हैं ॥ आदर जमामें कहो कैसेकर खैंचिहैं जू वेचिहैं तहांई जहां नफा कछु पायेहैं ॥ ८७ ॥

सवैया ।

केशव राजनके दरबार करैं चरचा शुभ अच्छर भाखत ॥ माधुरी वैन सदा सुख दैन पिये रसके जस अमृत चाखत ॥ पावतहैं मुकुता गजराज सु शीश चढ़ावत मानके आखत ॥ लाख लटो जो गुनी जन होय तो सूमको रूम वरावर राखत ॥ ८८ ॥

कविक्रोध—कवित्त ।

करदसों काट कर जरद वगारों तोहि मरद सराहैं हमैं जेतेहैं समौजिया ॥ वैलके सुपतिकी दोहाई दिये कहतहों ठाड़ोही निगल जाऊं आये मन मौजिया ॥ कहै मकरन्द मैं दरदहू विचारों नाहिं करगहे रहैं तेरे भाई और भौजिया ॥ भागरे वेदर्द मेरे हांग हाथ हदं तूहै मीनको शनिश्चर हौं ब्राह्मण कनौजिया॥ ८९ ॥

क्रोधी क्रूर कुटिल कुचाली रूप राकस सो विकट विरोधी मात पितुको जुतापी है ॥ प्रभाकर कहै त्यों जहाज झूंठ वोलनको लुच्चनको महाराज महिमा प्रतापीहै ॥

सुमनको साहिब मोसाहिब गुलामिन को कामिन को काका ज्यों पताका पाप छापी है ॥ ससुर कविन्दनको सारो गुनीवृन्दनको धूमकेतु कुल को सुरापी महापापीहै॥ ९०॥ कैसे बड़ो विभव बलन्द होतो चोरनको कैसे ठग कुंज मग लूटन जो पावतो ॥ प्रभाकर कहैं चढि महत मुसाहिबी पै शूद्र क्षुद्र दीनन प्रजाजन सतावतो ॥ कैसे कूर कामी लै मोदामी ऐसे भोगते औ गढ़िया गुलाम कैसे बैठक सजावतो॥होते न जो जगमें अधर्मी ऐसे भूप कहो कैसे सुधरमको दिवालो कढि जावतो ॥ ९१ ॥

सवैया—रसोइयां ।

भातमें लोन पहीतीमें पाथर डार करैं सब छूतिहि छू कर ॥ मांगेहुतें परसैं न कछू खल मैले महामलको गनी सूकर ॥ व्यंजन या विधिके हैं रचे मुख सोहैं किये मन आवत थूकर ॥ यह कबहूं नहिं दूबरे होत रसोईके विप्र कसाईके कूकर ॥ ९२ ॥

पंडित—कवित्त ।

जो पढि पंडितहूं भये तौ चले टेढिय चाल सुचाल न धारो ॥ यद्यपि आप बुरो न चहौ पर बोलतमें उगिलो विष झारो ॥ शेष युवा उपदेश सुनो अबहूं ते भली जो सुराह विचारो ॥ श्रीलछिमीश्वर के जस सौं भये सेत तवी मन रावरो कारो ॥ ९३ ॥

दीवान--कवित्त ।

होतहि दिवान अभिमान वे ग्रमान वढ्यौ ससुर दामाद लगे वहै मंत्र जापने ॥ जाही मंत्र जापते विलाने वनवारी लालटीका राम चुन्नी औ फतेअली गुनापने ॥ फेर कह भवानी प्रसाद साहू हीरा और भगवन्त अफजल सब आदि थापने ॥ सुनो यमराज महाराज या अरज मेरी काशी प्रसाद को बुलावो पास आपने॥९४॥खिस्ता औख-रावें खतिआवैं ता खसमहूं को खेहरैं खिलौरे जिन कोनी केतिको खई ॥ छवि न गुरू को कुकरूकोयों बुलाय एके मुसुरू पहिरि खुसरूपुर चली गई ॥ रीवां उमरूको एके जाति भे रुरूको धन्य हिन्दू वपुरूको जिन इमको डरू लई ॥चम्पतकें छोहरें छवाई दै दै मोहरें ते चौहरें कहूँ अनि व्योहरें नई भई ९५कैं कर कराई हार दारमें दिरावें औरसेर पीछे आध पाव हाथमें करतहैं ॥ चाउर कनाके भरे धना के समेत विन नोनही को देत हिय शंक न करतहै ॥ तेल घृत बात को न बीते एक मास होत घोडा की उपास आस रावरी धरत है ॥ मारत न गाल पूछि लीजे तत्काल होत जीतन निहाल तब हाल यों कहत है ॥९६॥ वाजे रोज दाल वाजे नोन को वेहाल वाजे दोनो तजि चाउरकी टाल सुनि लीजिये ॥ घृतको न लेस तेल पावत हमेस रहैं ताहूको दरस है न कैसी अब कीजिये ॥ हमहैं विदेशी आस रावरी करत

सदा याहीको विचार कै दैयाके रस भीजिये ॥ पावत न दाना वाजी करत उपास आज अरजी हमारी सुनि मरजी करीजिये ॥ ९७ ॥

सवैया ।

खगलै कपोरीको हनकी औशूलले हूल हृदय जस मण्डी
जोनित पानसुमुण्ड उपारिये रुण्डलैं रोवैं गलीनमें रण्डी ॥
तौ इकबाल तिहारी सही जो जरायवेको मिलै काठ न कण्डी
कीरति रामको पूतपछार विजय दशमीको विजैकरचण्डी ९८
चौतरा चण्डी चढ़ीखडी चटकै अरु द्वारपै दैत करै उतपाता ॥
पौर पिशाचन नाच मढ़े आंगन अम्बा लगाय यों घाता ॥
भीतर भूत भरे भभकैं करै खीस खवीस बही अरु खाता ॥
जोम गयो जारि जुरतको भये कीरति रामपै वाम विधाता ९९
विन्धेश्वरीको उव्यो इकबाल भयी हढ़ देवन के हिये शंका॥
राक्षस वीर वढ़े वनिया वजे गांवमें पूरण पापको डंका ॥
विप्र विभीपन व्याकुल जानि हरो दुःख अंजनीके सुत वंका
राघव वेगि चलो दल साजि भयो मिरजापुरदूसरोलंका १००

पश्चाताप—कवित्त ।

चीता पछतात मृग अंक ते निकरि जात वाज पछतात जात तीतर रखतमें ॥ चोर पछतात जात दारदी सदनमाँझ रंक पछतात वार वनिता सदनमें ॥ मोहर मृगेन्द्र पछतात सूर कूरे पाय जोगी पछतात संग भोगीके रखतमें ॥ कवि

पछतात सूमे कवित सुनाय अरु कामी पछतात रति अन्त
के बखतमें १०१ हेतो रावरेई हम ओऊ उने राज धन दीने
हमें पेट काज पाय गहने परे ॥ रावरे छुटाये छूटे गाढ़या
अपार हमे ठाकुर कृपा रोज राजी रहने परे ॥ झूंठके बखान
विना मान मद अन्धनके झूंठे रूठे वचन अजोग सहने परे॥
एहो मातु लक्ष्मी तिहारे देत पाय हमें बड़े बड़े चूतिया
चतुर कहने परे १०२ गांठमें न दाम ताते सूनो निज धाम
साठों घड़ी आठों जाम चिन्ता चित्तको दहै ॥ जाके पास
जाय कहूं दुःखको बखान करों एक दुःख कहोंतो अनेक
आपनी कहै ॥ कहैं पदमाकर हितूहैं सबै भैया बन्धु
विपत परेपै कोऊ नेक ना भुजा गहै ॥ झूठ मूठ सब
कहैं खातिरजमा को राख गांठमें जमा रहै तो खातिर
जमा रहै ॥ १०३ ॥

सवैया ।

वैठि उलूक कहूं छपि जात कहा गुन जाने प्रभाकर केरो ।
पीन सवारी कहालै करै जबघोर धरै घनसार घनेरो ।
वैठि अबूझनके दरबार कहा लहिये गरुवी गुन केरो ।
आँधरे साहिबके दरबार कहांलौं करै चतुराई चितेरो १०४
पापके पुंज पखावज केशव सोकके शंख सुने सुखमामें ।
झूठके झालर झांझ अलोकके आवत जुथ्थन जात जमामें ।
भेदके भार बड़े डरके डफ कौतुक भो कलिके कुरमामें ।
झूझतहीं वलवीर बजे बहु दारिदके दरबार दमामें ॥१०५॥

सन्तोष–सवैया ।

हीरनमें मनिमें मिलिके कबहूं ढिग राजनके प्रगटैगो ॥
हारह्वै केलि ससै तरुनीनके शंभु उरोजनमें लपटैगो ॥
काह भयो जो नजान्यो अजान तोआखिर पायेठकानेठटैगो
कौड़िन बीच गुह्योजुपै भीलतो पील के मोतीको मोलघटैगो

नीति–सवईया ।

धूतके संग कपूतकी सम्पति दानविहीनके नाम निशानी ॥
दूतकी जीतिअनीतिको आदर ज्यों सतसंग विना रजधानी॥
झूठके बैन गँवारोंके साथ कहै कवि गोकुल ज्ञान मसानी ॥
एते बिलात विलम्ब नहीं बिनआड़को दीपक बाढ़को पानी

कवित्त ।

मानसर तजि हंस कूप न करत गेह मोती नहिं देख्यों कहूँ गरे तिया भीलकी ॥ मनि परखत कहूँ देखे न मरकट हाथ वेश्या नाहिं देखे चाल चलत असीलकी ॥ बाजकहूं बैठेना बटेरनके झुण्डनमें मढत नगारा नाहिं चरसा पिपीलकी ॥ याचक चतुर कहूं बैठे ना कृपिन पास अलिना बिलंबै कहूं संगति करीलकी ॥ १०८॥ कामी वामी लोभी मूढ़ कोढ़ी कुलद्वेषी खल कातर कृतघ्नी कुलद्रोही द्विजद्रोहिये ॥ कुपुरुष किंपुरुष काहिल कलही कूर कुटिल कुमंत्री कुलहीन कैसो टोहिये ॥ पापी

लोभी झूंठो अन्ध वावरो वधिर गूंगो वौना अविवेकी हठी
छली निरमोहिये ॥ सूम सर्व भच्छी दैव वादी जो कुवादी
जड़ अपजसी ऐसो सूमि भूपति न सोहिये ॥१०९ वाहन
कुचालचौर चाकर चपल चित्त मित्त मतिहीन सूम
स्वामी उर आनिये ॥ पर घर भोजन निवास- वास
कुपुरन वरखा प्रवास केशो दास दुःख दानिये ॥ पापि
नके अंग संग अंगना अनंग वश अपजस जुत सुत
चित्त हित हानिये ॥ मूढता धुढ़ाई व्याधि दारिद झुठाई
आधि यहई नरक नरलोकन वखानिये ॥ ११० ॥ सुथरो
सिलाह राखे वायवेगी वाह राखे रसदकी राह राखे रहै
वनोवनको ॥ चोरको समाज राखे और हग व
राखे खवरके काज वहु रूपिनके गनको ॥ आग
भखैया राखे हिम्मति रखैया राखे मनै रघुनाथ अ
विचार बीच मनको ॥ बाजी हारे कौनहूं न औसरके पो
भूप राजी राखे प्रजनको ताजी सुभटन को ॥ सम्पति
सुमति नीकी विपति सुवीरनीकी गंगातीर मुक्ति नीकी
नीकी टेक नामकी ॥ पतिव्रत नारिनीकी परउपकारनीकी
चांदनी सुरात नीकी नीकी जीतिकामकी ॥ बालकृष्ण
वेद विद उग्र नीकी भूसुरकी भक्तिनीकी उत्तम चहनि हा
धामकी ॥ अगनको हानिनीकी तातकी मिलननीकी
सुरमिल तान नीकी प्रीतिनीकी रामकी ११२ कीने द्विज

द्रोहगये सकल सहसवाहु नहुष भुजंग भये सिविका घरायेतें॥ भूपति परिच्छितको तच्छक प्रसिद्ध डस्यो जूझि गये यादव कुमतिके आयेते॥ सगरकी सन्तति अनेक जरि छार भई इन्द्रको सहस भग मुनि शाप पायेते॥ कहै कविदत्त कोऊ भूलिहू न करो बैर ओलासे विलाय जात विप्रनके सतायेते॥११३॥ भारी घोड़सारन तलाव न तिलाक लिख्यो गाड़िगे अकब्बर बहुरि नाहिं बहुरे॥ ताके कवि बीरबर तन सम गुन्यों नाहिं ऐसेहू न भए कलि कर्णहूते लहुरे॥ लछमीकहाति सब सूमनितें वार वार देहु लेहु खरचहु मोको जानि गहुरे॥ व्याहीके न संग रहौं तीन लोक प्रभु जौन कालके चिन्हारे लोग मोसे कहैं रहुरे ११४ जगमें जसीले जे रसीले दयावान लोग सेवा श्रम बूझत न काहूको छलत हैं॥ दाता ज्ञाता शूर औ कपूत साहसीजे कोऊ तिनके वचन कबहूं न बदलत हैं॥ कहैं शिवराम गुनवन्तनके तिनहीं सो सहजमें सकल मनोरथ फलत हैं॥ सूम दगावाजन सों सुबुक मिजाजनसों शील हीन राजनसों कामना चलत हैं॥ ११५॥

दोहा—आम नीबुआ वानियां, गर चांपे रस देत॥
कायथ कौआ करटहा, मुरदाहू सों लेत॥११६॥
तुलसी ओछे नरनतें, होत बड़ो नहिं काम॥
मढ़त नगारा नहिं बनै, सौ चूहे के चाम॥११७॥

अहमद ताहि सराहिये, भूप शशी सम होय ॥
कहा निगोडे तरनि कह, डगे तरैयन खोय ११८
जो मेढा पीछे हटै, केहरिया छपकन्त ॥
जो दुर्जन हंसिके मिलै, तबै बचैयो कन्त ११९
दगावाज की प्रीतियों, बोलतही मुसकात ॥
जैसे मेंहदी पातमें, लाली लखी न जात १२०
सोरठा—अहमद मुहि न सुहाय, अमी पियावत मान विन॥
वरु विष देइ बुलाय, मान सहित मारिवो भलो १२२
दोहा—कहु रहीम कैसे वनै, केर वेर को संग ॥
वे रस डोलत आपने, इनके फाटत अंग ॥
करि फुलेलको आचमन, मीठो कहत सराहि॥
रे गन्धी मतिमन्द तू, अतर दिखावत काहि १२३

कुण्डलिया ।

वैरी बँधुआ वानिया ज्वारी चोर लवार ॥
बिभचारी रोगी रिनी नगर नारिको यार ॥
नगर नारि को यार भूल परतीत न: कीजै ॥
सौसौ सौहें खाय चित्तमें एक न लीजै ॥
कह गिरिधर कविराय घरै आवै अनवैरी ॥
हितकी कहै वनाय जानियो पूरो वैरी ॥ १ ॥
विना विचारे जो करै पुनि पाछे पछताय ॥
काज विगारै आपनो जगमें होत हँसाय ॥

जगमें होत हँसाय चित्तमें चैन न पावै ॥
खान पान सनमान राग रंग मनहि न भावै ॥
कह गिरिधर कविराय दुःख कछु टरत न टारे ॥
खटकतहै जिय मांहि कियो जो विना विचारे ॥ २ ॥
साईं येन विरोधिये कवि पंडित गुरु यार ॥
वेटा वनिता पौरिया यज्ञ करावन हार ॥
यज्ञ करावन हार राजमंत्री जो होई ॥
विप्र परोसी वैद्य आपको तपै रसोई ॥
कह गिरिधर कविराय बात चतुरनके तांई ॥
इन तेरह सों तरह दिये वनिआवे सांई ॥ ३ ॥
साईं अपने चित्तकी भूलि न कहिये कोय ॥
तब लगि मनमें राखिये जब लगि कारज होय ॥
जबलगि कारज होय भूलि काहूसों न कहिये ॥
दुरजन तातो होय आप सीरे ह्वै रहिये ॥
कह गिरिधर कविराय वात चतुरन के ताईं ॥
करतूती कहिदेत आप कहिये नाहिं साईं ॥ ४ ॥
राजाके दरबारमें जैये समयो पाय ॥
साईं तहां न वैठिये जहँ कोउ देइ उठाय ॥
जहँ कोउ देइ उठाय बोल अनबोले रहिये ॥
हँसिये ना हहराय बात पूछेते कहिये ॥
कह गिरिधर कविराय समै सों कीजै काजा ॥
अति आतुर नहिं होय बहुरि अनखैहै राजा ॥ ५ ॥

कृतघन कबहु न मानई कोटि करौ जो कोय ॥
सरवस आगे राखिये तऊ न अपनो होय ॥
तऊ न अपनो होय भले को भली न मानै ॥
काम काढि चुप रहै फेरि तिहि नाहिं पछानै ॥
कह गिरिधर कविराय रहत नितही निर्भयमन ॥
मित्र शत्रु सब एक दामके लालच कृतघन ॥ ६ ॥
सांई बेटा बापके बिगरे भयो अकाज ॥
हिरनाकुस अरु कंसको गयो दुहुँन को राज ॥
गयो दुहुँन को राज बाप बेटा के बिगरे ॥
दुशमन दावादार भये महिमण्डल सिगरे ॥
कह गिरिधर कविराय उन्हें काहु न बताइ ॥
पिता पुत्रकी रार लाभ एकौ नहिं सांई ॥ ७ ॥
हीरा अपनी खानि को मनही मन पछताय ॥
गुणग्राहक कोऊ नहीं तहां बिकान्यो आय ॥
तहां बिकान्यो आय छेदि करिहांसों बाँध्यो ॥
मीठो लगै न मांस नोन बिन फूहर राँध्यो ॥
कह गिरिधर कविराय धरै उर कैसे धीरा ॥
गुणकीमत घटगई यहै कहि रोयो हीरा ॥ ८ ॥
धोखे दाड़िमके सुआ गयो नारियर खान ॥
खम खाई पाई सजा फिर लाग्यो पछतान ॥

फिरि लाग्यो पछतान बुद्धि अपनीको रोयो ॥
निर्गुणियनके पास बैठि गुण अपनो खोयो ॥
कह गिरिधर कविराय कहूँ जैये नहिं ओखै ॥
तोरचो चोंच खटाक सुवा दाड़िमके धोखे ॥ ९ ॥
महुआ नित उठि दाखसों करत मसलहत आय॥
हम तुम सूखे एकसे हूजतहैं रसराय ॥
हूजतहैं रसराय विलग निज जियमें आनो ॥
मधुराईमें अधिक नेक नहिं अन्तर मानो ॥
कह गिरिधर कविराय कहत साहिब सो रहुआ॥
तुम नीची कुलवेलि वृक्ष हम ऊँचे महुआ ॥ १० ॥
कौआ कहत मरालसों कौन जाति को गोत ॥
तोसों बदरूपी महा कोउ न जगमें होत ॥
कोऊ न जगमें होत कुटिल मैले मलखाने ॥
ऊसर बैठि अचार सबै मरजाद नशाने ॥
कह गिरिधर कविराय कहांते आयो हौआ ॥ ११॥
धन्य हमारो देश जहां सज्जन जन कौआ ॥
साईं घोड़नके अछत गदहन पायो राज ॥
कौआ लीजत हाथमें दूर कीजियत बाज ॥
दूर कीजियत बाज राज ऐसो ही आयो ॥
सिंह कैदमें कियो स्यार गजराज चढ़ायो ॥

कह गिरिधर कविराय जहाँ यह बूझ बड़ाई ॥
तहां न कीजै सांझ भोरही चलिये भाई ॥ १२ ॥
भौंरा यह दिन कठिनहै दुख सुख सहे शरीर ॥
जब लगि फूलै केतकी तब लगि विमल करीर ॥
तब लगि विमल करीर सोच मनमें नहिं कीजै ॥
जैसी बहै बयारि पीठ तब तैसी दीजै ॥
कह गिरिधर कविराय होय जिन जियमें बौरा ॥
सहै दुसह दुखगोय जोय सज्जन गति भौंरा॥ १३ ॥
पानी बाढो नाव में घरमें बाढ़े दाम ॥
दोऊ हाथ उलीचिये यही सयानो काम ॥
यही सयानो काम नाम ईश्वरको लीजै ॥
परस्वारथके काज शीश आगे धर दीजै ॥
कह गिरिधर कबिराय बड़नकी येही बानी ॥
चलिये चाल सुचाल राखिये अपनो पानी ॥ १४॥

कवित्त ।

हिल मिल लीजिये प्रवीननतें आठो याम कीजिये अराम जासों जियको अराम है ॥ दीजिये दरश जाको देखिवेकी होस होय कीजिये न काम जासों नाम वदनाम है ॥ ठाकुर कहत यह मनमें विचारि देखो यश अपयशको करैया सब राम है ॥ रूपसों रतन पाय चातुरीसों धन पाय नाहक गँवाइवो गँवारनको कामहै ॥

सवैया ।

केवरो केतकी औ करना नव कंज परागनके रसकीहै ॥
खूझी गुलाब नेवारी जुही अरु बेला सुवास दिना दसकीहै॥
चन्दन चूर मृगामद धूर कपूरके पांडुरीकी खसकीहै ॥
माथुर प्यारे सुगन्धनमें सबतें खुशबूय सिरे यशकीहै ॥

कवित्त ।

आवत हौं चली शिव शैलतें गिरीश जाचें मिल्यो हुतो मोहि जहां सागर सगरको ॥ कविनकी रसनाके पालकीपै चढ़ो जात संग सोहै रावरो प्रताप तेजवरको ॥ कविगंग पूछी तुमको हौ कित जैहो उन कह्योमोसों हँसिके मनेसो ऐसो थरको॥यश मेरो नाम मेरो दशोदिश काम मेरो कहियो प्रणाम हौं गुलाम वीर वरको ॥

ऋतु वर्णन ।

वसन्त ।

वल्लीको वितान मल्लीदलको विछौना मंजु महल निकुंजहै प्रमोद वनराजको ॥ भारी दरबार भिरी भौंरनकी भीर बैठे मदन दिवान इतिमाम काम काजको ॥ पंडित प्रवीन तजि मानिनी गुमान गढ़ हाजिर हुजूर सुनि कोकिल अवाजको ॥ चोपदार चातक विरद बढि बोलैं दर दौलत दराज महाराज ऋतुराजको ॥ १ ॥
गायो किन कोकिल वजायो किन वेणु वंन नाचो किन

झूमरि लतागन बने ठने ॥ फेंकि फेंकि मारो किन निज कर पल्लवसों ललित लवंग फूल पानन घने घने ॥ फूल माल वारो किन सौरभ सँवारो किन येहो परिचारक समीर सुखसों सने ॥ मौरधरि बैठो किन चतुर रसाल आजु आवत वसन्त ऋतुराज तुम्हैं देखने ॥ २ ॥

पात विन कीन्हें ऐसी भांति गन वेलिनके, परत न चीन्हें जैवे लरजत लुञ्जहैं ॥ कहै पदमाकर विसासी या वसन्तके सु ऐसे उत्पात गात गोपिनके भुञ्जहैं ॥ ऊधो यह सूधोसों सँदेशो कहि दीजो भले हरिसों हमारे ह्यां न फूले वनकुञ्जहैं ॥ किंशुक गुलाब कचनार औ अनारनकी डारनपै डोलत अँगारनके पुञ्जहैं ॥ ३ ॥

सवैया ।

सोंधे समीरनके सरदार मलिन्दनको मनसा फल दायक ॥ किंशुकजालनको कलपद्रुम मानिनी बालनहूँको मनायक ॥ कन्त अनन्त अनन्त कलीनको दीननके मनको सुखदायक ॥ साँचो मनोभवराजको साज सुआवत आज इतै ऋतुनायक ॥ १ ॥ मिलि माधवी आदिक फूलके व्याज विनोद लवा बरसायो करैं ॥ रचि नाच लतागन तानि वितान सबै विधि चित्त चुरायो करैं ॥ द्विजदेवजू देखि अनोखी प्रभा अलिचारन कीरति गायो करैं ॥ चिरजीवो वसन्त सदा द्विजदेव प्रसूननकी झरि

लायो करैं ॥ २ ॥ वायु वहारि वहारि रहे क्षिति वीथी सुगन्धन जाती सिंचाई ॥ त्यों मधुमाते मलिन्द सबै जयके करखान रहे कछु गाई ॥ मंगलपाठ पढ़ैं द्विजदेव सवै विधिसों सुखमा उपजाई ॥ साजि रहे सब साज घनें वनमें ऋतुराजकी जानि अवाई ॥ ३ ॥ ए व्रजचन्द चलौ किन वा व्रज लूकैं वसन्तकी ऊकन लागीं ॥ त्यों पदमाकर पेखौ पलाशन पावकसी मनौ फूंकन लागीं ॥ वै व्रजवारी विचारी वधू वन वावरीलै हिये हूकन लागी ॥ कारी कुरूप कसायनै ये सुकुहू कुहू कोलिया कूकन लागीं ॥ ४ ॥

अथ वसन्तान्तर्गत ।

होली ।

लैलै कर झोरी जुरि आई इतै गोरी, उतै होरी खेलिवेको ग्वाल जालहू बनायो कीच ॥ छायगो छिनैमें यों गुलाल मेघमाल ऐसो, द्विजदेव जासों न जनायो परै ऊंच नीच ॥ ऐसी भई धूँधरि धमारकीसों ताही समै, पावसके भोरे मोर सोरकै उठे अवीच ॥ घनके समान ज्यौं २ दौरैं घनश्यामत्यों २ संपासी दुरति आली चम्पा वन वनवीच ॥

अथ ग्रीष्मऋतु वर्णन ।

जेयें विना जीरनसो जलकी जिकिर जीभ, जरयो जात जगत जलाकनके जोरतें ॥ कूप सर सरिता सुखाय सि-

खतामैंभई, धाई धूरि धौरानि धराधरके छोरतैं ॥ वेनीकवि कहत अनतप चहत सब, अगिनिसों आतप प्रकाश चहुँ ओरतैं ॥ तवासों तपत धारा मण्डल अखण्डलऔ, मारतण्ड मण्डल दवा सो होत मोरतैं ॥

अथ पावस वर्णन ।

लता लागीं द्रुमन लतानहू में कली लागीं कली लागीं भौंर भीर आनँद मगन मैं॥धावन धरनि धुरवानकी गगन लागी दामिनी सघनतऊठन लागी घनमैं ॥ श्रीपति सुकवि यों वियोगी कहरन लागे मदनकी आगि लहरन लागीं तनमैं ॥ गहन गहन लागे गावन मयूर माला झहन झहन लागे रोम रोम छनमैं ॥ १ ॥ जलभरे झूमें मनो भूमें परसत आनि दशहू दिशानि घूमें दामिनी लए लए ॥ धूरि धार धूमरेसे धूमसे धुधारे कारे धूरवान धारे धावें छवि सों छए छए ॥ श्रीपति सुकवि कहैं घेरि घेरि घहराहिं तकत अतन तन तावते तए तए ॥ लाल विनु कैसे लाज चादर रहैगी आज कादर करत मोहिं वादर नए नए ॥ २ ॥ चंचला चमाकै चहूं ओरनतैं चाय चाय भरी चरजि गईती फेरि चरजन लागीरी ॥ कहै पद्माकर लवंगनकी लोनी लता लरजि गईती फेरि लरजन लागीरी ॥ कैसों धरों धीर वीर त्रिविध समीरैं तन तराजि गईती फेरि तरजन लागीरी ॥ घुमड़ि घमण्ड घटा घनकी घनेरी आवै गरज गईती फेरि गरजन लागीरी ॥ ३ ॥

अथ वर्षान्तर्गत ।

हिंडोरा ।

दोऊ कमबूल झूलि झूलि मखतूल झूला लेत सुखमूल कहि तोप भारि बरसात ॥ झूमि झूमि अलक कपोलनपै छहरात फहरात अन्चल उरोजन उघारि जात ॥ रहौ रहौ नाहीं नाहीं अबना झुलाओ लाला वाबा।किसौं मेरी ये युगल जंघ थहरात ॥ ज्योंहीं ज्यों मचत त्यों त्यों लचत लचीलो लङ्क साङ्कित मयङ्क मुखी अङ्कमें लपटि-जात ॥ १ ॥ फूली फूल वेलीसी नबेली अलवेली वधू झूलति अकेली कामकेलीसी बढ़ातिहै ॥ कहै पद्माकर झम-ङ्की झकोरनिसों चारों ओर सोर किंकिणीनको मढ़ातिहै॥ उर उचकाय मचकीनकी मचामचिमें लङ्कहि लचाय चाय चौगुनी चढ़तिहै ॥ रति विपरीतकी पुनीत परिपाटी मानौ हौसन हिंडोरेकी सुपाटीमें पढ़तिहै ॥ २ ॥ तीरपर तरनि तनूजाके मताल तरे तीजकी तयारी ताकि आई तखियान मैं ॥ कहै पद्माकर सो उमंगि उमंग उठी मेंहदी सुरंगकी तरंग नखियानमैं ॥ प्रेमरंग बोरी गोरी नवलकिसोरी भोरी झूलति हिंडोरे यों सोहाई सखियानमैं ॥ काम झूले उरमें उरोजनमें दाम झूलै श्याम झूलै प्यारीकी अन्यारी अँखियानमैं ॥ ३ ॥

अथ शरदऋतु वर्णन ।

तालन पैं तालपै तमालनपै वृन्दावन वीथिन वहार वंसीवटपै ॥ कहै पद्माकर अखण्ड रास मण्डल पै मण्डित उमण्डि महाकालिन्दीके तटपै ॥ क्षिति पर छानपर छाजत छतानपर ललित लतान पर लाडिलीके लटपै ॥ छाई भले छाई यह शरद जुन्हाई जिहिं पाई छवि आजुही कन्हाईके मुकुटपै ॥ १ ॥ खनक चुरीन की त्यों ठनक मृदङ्गनकी रुनुक झुनुक सुर नूपुरके जालको ॥ कहै पदमाकर त्यों वाँसुरीकी धुनि सुनी रह्यो बँधि सरस सनाको एक तालको ॥ देखतै वनत पै न कहत वनैरी कछु विविध विलास औ हुलास यह ख्यालको ॥ चन्दन छवि रास चांदनीको प्रकाश राधिका को मन्दहास रास मण्डल गोपालको ॥ २ ॥ वन उपवन निरझर सर सोभा सने अम्बर अवनि कलवल वरसावनी ॥ हंसजल रखित खचित थल वननि तारापति सरित जोन्हाई सुख दावनी ॥ ऋपिनाथ मालवी मुकुन्द कुंन्द कुसुमित कास पारिजात पारिजातावलि पावनी ॥ मन अरुझावनी रसिक रास रस रंग भावनी शरद रैंन शरद सोहावनी ॥ ३ ॥ राजी जिय करति रसीलिनिकी राजी तैसी राजी मुकुलित मालतीकी दर सातिया ॥ मन्दिर निकुञ्ज कुञ्ज अलिपुञ्ज गुञ्जरत मञ्जु मकरन्द मन्दमन्द गति वातिया ॥ कहत

किसोर कोसबद्ध कमनीय महा रमनीय रमन विनाहू वन जातिया ॥ शरद समस्त सोभा शशि मय व्योम काम वस मय विश्वरंग रस मैं रातिया ॥ ४ ॥

हेमंत वर्णन ।

शीतको प्रबल सेनापति कोपि चढ्यो दल निबल अनल गयो सूर सियराइकै ॥ हिमके समीर तेई वरपैं विषम तीर रही है गरम भौन कौननिमैं जाइकै ॥ धूमनैन वहैं लोग होत हैं अचैन तऊ हिय सों लगाय रहै नेकु सुलगाइकै ॥ मानो भीत जानि महाशीततैं पसारि पानि छतियाकी छांह राख्यो पावक छिपाइकै ॥

शिशिर वर्णन ।

चन्द छवि पागि २ आगि ओरैं रहे भानु भागि शीत जागि जग ऐसे गरसतुहै ॥ रदनसों बोलै रद वदन विकासे कौन वदनकी गौन रौन सूधो सरसतुहै ॥ लागी जऊ झाँपैं मची झरकी झरांपै तऊ सेवकजू कांपै न दुरावै दरसतुहै ॥ दृढ़वर साला फोरि सालहू दुसाला फोरि सकल मसाला फोरि पाला वरसतुहै ॥

इति ऋतुवर्णन समाप्त ।

अथ पवन वर्णन ।

शीतल ।

तुङ्ग पयोद लसे गिरि शृङ्ग मिल्यो चल शीतलता सरसवत ॥ त्यों तरु जूहन पैं विरमाय घने सुख साजनको लहरावत मंजु दरी निकरी जलधार घसै पुनि सीकर संगलै धावत ॥ ग्रीषमहू में कंपावत गात सुबात हिमाचल ह्वै जब आवत ॥

मन्द ।

गहब गुलाब मञ्जु मोगरे दवन फूले वेले अलवेले खिले चम्पक चमन में ॥ भनि भुवनेश विकसाने पारिजात कुन्द रस सरसाने प्रति सुन्दर सुमन में ॥ एहो कान्ह चारु मति वायु की विलोकि गति वार वार कारन विचारो कहा मनमें ॥ वाहित सुगन्ध भार मढ़ित मरन्द धार याही हेतु मन्द मन्द डोलै उपवन में ॥

सुगन्धित ।

मौलसिरी मधु पानथक्यो मकरन्द भरयो अरविन्द नहायो ॥ माधवी कुंज सों खाय धका फिरि केतकी पाटल को उँठिधायोसोनजुही मड़राय रह्यो छिन संग लियो मधुपावलि धायो ॥ चम्पहि चूरि गुलावहि गाहि समीर चमेलिहि चूमत आयो ॥

चन्द ।

सांझहीते आवत हिलावत कटारी कर, पायकै कुसंगति कृशानु दुखदाईको ॥ निपट निशंकह्वै तजीतैं कुलकानि खानि, औगुनको नेकऊ तुले न बाप भाईको ॥ एरे मतिमन्द चन्द आवत न लाज तोहिं, देत दुख बापुरे बियोगी समुदाईको ॥ ह्वैकै सुधाधाम काम विषको वगारै मूढ, ह्वैकै द्विजराज काज करत कसाईको ॥

चांदनी ।

परमउदार महाराज ऋतुराज आज, विमल जहान करिवेकी रुचि ठाईहै ॥ शीतकर रजक रजाय पाय ताही समै, अंबरकी सोभाकरि उज्वल देखाईहै ॥ छटा जानि जानौ तरु अटा ओ देवारिनमें, ब्योंतकरि आछी विधि वाहीसों मढाईहै ॥ चहूंओर अवनि विराजे अवदात देखो, कैसी अद्भुत यह चांदनी बिछाईहै ॥

पुष्प ।

आब छिरकायदै गुलाब कुन्द केवड़ाके, चन्दन चमेली गुलदावदी निवारीमैं ॥ जूही सोनजूही माल चम्पक कदम्ब अम्ब, सेवती समेत वेला मालतीह प्यारीमैं ॥ रघुनाथ बागको विलोकिवो न भावै मोहिं, कन्त विन आयो या वसन्त फुलवारी मैं ॥ भागिचलो भीतरैं अनार कचनारनतें, आगि उठी बावरी गुलालकी कियारी मैं ॥

पराग ।

देखतहीं बन फूले पलास विलोकतही कछु भौंरकी भीरन ॥ बावरीसी मति मेरी भई लखि बावरी कंज खिले घटे नीरन ॥ भाजि गयो कढ़ि ज्ञान हियेते न जानि परयो कब छोड़ि के धीरन ॥ अन्धन कौनके लोचन होहिं पराग सने सरसात समीरन ॥

दश दशा वर्णन ।

अभिलाप ।

कब काहूसों मान करैगी अरी कब काहूके मान मनावहिगी ॥ कब बैठिके बंसी बटाके तरे हठि रीझ की तानहिं गावहिगी ॥ कहै तोष कबै गुरुलोगनिमें निज नैननि सैन बतावहिगी ॥ कबधों बन कुञ्जन के घरमें मुरलीधरको उर लावहिगी ॥

चिन्ता ।

ए विधि जो विरहागिके बाणसों मारतहौ तौ यहै वरमांगौं॥
जो पशु होउँ तऊँ मरि कैसेहू पांवरीह्वै प्रभुके पगलागौं ॥
दास पखेरुनमें करौ मोर जु नन्द किशोर प्रभा अनुरागौं ॥
भूपन कीजियै तौं बनमालहिं जाते गोपालाहिके हिये लागौं॥

स्मरण ।

जे दृग सिराय घन आनँद दरश रस ते अब अमोही दुःखज्वाल जारियतुहै ॥ तोपै हित पोपे नित जेई प्राण

राखे साथ तेई कै अकेले यों अनाथ मारियतुहै ॥ कौन कौन बातको परेखो उर आनियेहो जानप्यारे कैसे विधि आंक टारियतुहै ॥ थातीलै निहारी प्रीति छाती पै बिराजि रही हेरि हेरि आँसुन समूह ढारियतुहै ॥ १ ॥

सवैया ।

है खौरि में खेलन आवती यै नतो आलिनि के मतमें
परती क्यों ॥ देव गोपालहिं देखती यै न तौ या विरहानल
में जरतीक्यों ॥ बापुरी मंजु रसालकी वालि सुभाल सीह्वै
उरमें अरती क्यों ॥ कोमल कूकिके कैलिया कूर करेजन
की किरचैं करती क्यों ॥

गुण कथन ।

दधिके समुद्र न्हायो पायो न सफाई तायो आंच अति रुद्र जूके शेखर कृशानकी॥ सुधाधर भयो सुधा अधरनि हेतु द्विज राज' भो अकस द्विजराजीकी प्रमानकी ॥ घटि घटि पूरि पूरि फिरत दिगन्त अजौं उपमान विनि भयो खानि अपमानकी ॥ दास कलानिधि केती कलाकै दिखायो पै न नेकु छवि पायो राधे बदन विधानकी ॥

उद्वेग ।

छन होत हरीरी महीको लखै छन जोवतिहै छन जोति छटा ॥ अवलोकत इन्द्रवधूकी पत्यारी बिलोकतहै खिन कारी घटा ॥ ताकि डार कदम्बन की तरसै तरु देखत

नाचत मोर अटा ॥ अध ऊरध आवत जात भयो चित नागरीको नट कैसो बटा ॥

प्रलाप ।

ना यह नन्दको मन्दिरहे वृपभानुको भौन जहां जकतीहौ ।
हौंही यहां तुमहीं कविदेवजू कौनको घूंघटकै तकती हौ ॥
भेंटत मोहिं भटू केहिं कारण कौनकी धौं छविसों छकतीहौ ॥
ऐसीभईहौ कहौ केहि कारण कान्ह कहांहैं कहा बकतीहौ॥

उन्माद ।

अरिके वह आज अकेली गई खरिकै हरिके गुणरूपलुही ॥
उनहूं अपनो पहिराय हरा मुसकायकै गायकै गाय दुही ॥
कविदेव कह्यो किन काऊ कछू जबतें उनके अनुराग छुही ॥
सबहीसों यही कहै बालवधू यह देखोरी माल गुपाल गुही॥

व्याधि ।

विरह संतापतैं तपानि हैरानो चेत ऊवि ऊवि साँस लेत नैन नीर भरि भरि ॥ करपूर धूरनितैं चन्दनके चूरण तें तामरस मूरनि उपाय थाकी करि करि ॥ घेरि रहीं घरकी नगरकी डगरि आई देखि देखि भाखैं सब त्राहि त्राहि हरि हरि ॥ अंग अंग सूकै बैन मूकेसे वधूके उर भभाकि भभूके मैनजूके उठैं बरि बरि ॥

जड़ता ।

कौंलसे पाणि कपोल धरे दृग द्वारलौं नीर भरे हिय हारे ॥ चित्र चरित्र मईसी भई गई लीनह्वै दीन टरे नाहिं टारे ॥ रावरी लागी ममारख दीठि न जात कही हम जाति पुकारे ॥ जागिहैं जीहैं तौ जीहैं सबै नतौ पीहैं हलाहल नन्दके द्वारे ॥

मरण ।

पारथ समान कीन्हों भारत महीमें आनि बाँधि शिरवाना ठान्यो सरम सपूतीको ॥ कोर कोर कटिगयो हटिके न पग दयो लयो रणजीति किरवान करतूतीको ॥ भनत नेवाज दिल्लीपतिसों सहादत खान करत बखान एती मान मजबूतीको ॥ कतल मरद्दकरि शोणितसों भरिगयो करिगयो हद्द भगवन्त रजपूतीको ॥

इति प्रथमभाग समाप्त ।



श्रीः।

महामनमोहिनी।

दूसरा भाग।



(ध्रुपद, भजन, राग, रागिनी)

ध्रुपद। उठि प्रभात सुमरिये श्रीगणेश देवा। माता जाकी पार्वती पिता महादेवा॥ अन्धेको नेत्र देत कुष्ठीको काया वन्ध्याको पुत्र देत निर्धनको माया॥ एकदन्त दयावन्त चतुर भुजा धारी। मस्तक सिन्दूर सोहै मूषक असवारी॥ फूल चढ़ैं पान चढैं और चढै मेवा। मोदकके भोग लगैं सुफल वाकी सेवा॥ ऋद्धि देत सिद्धि देत बुद्धि देत भारी। तानसेन गजानंद सुमिरौ नरनारी॥ १॥

पारब्रह्म परमेश्वर पुरुषोत्तम परमानंद, नंदनंदन आनंदकंद यशोदानंद॥ श्री गोविन्द श्रीगोविन्द॥ १॥ करुणमय कमल नयन कृपासिन्धु सर्वचयन पूरण करत किशोर गुणनिधान गोकुलचन्द॥ श्रीगोविन्द०॥ २॥ मधुसूदन मदनमोहन मुरलीधर सर्वसोहन। मेघश्याम मूरत मनभावन माधव मुकुन्द॥श्रीगोविन्द०॥३॥ दीनानाथ दुखभंजन भक्त बसल जगवन्दन। जगजीवन जगन्नाथ काटत दुख द्वन्द फन्द॥ श्रीगोविन्द श्रीगोविन्द॥४॥

रामरूप राधावर गोवरधन करपर धर। रंगनाथ हृषीकेश गावत गुणभये अनंद ॥ श्रीगोविन्द श्रीगोविन्द ॥५॥ जन गरीब यश सुन सुन लागरही अन्तर धुन। श्रीवासुदेव वनवारी व्रजपति गुरु दीनबंद ॥ज०॥ ६ ॥२॥

जागिये गोपाललाल नंदके दुलारे। शशिकी ज्योति मन्दभई मन्द भये तारे॥ कमल फूल खिलन लागे कुँवर त प्यारे। यमुनामें गेंद गिरी ग्वाल बाल हारे॥ कालीथ नागलियो कृष्णभये कारे। मथुरा हरि जन्म लि॥ गोकुला सिधारे॥ जेते प्रभु अधम मिले सो सो तुम हारे। सूरदास मदन मोहन तीन लोक प्यारे॥ ३ ॥

४ जागिये गोपाललाल पक्षी वन बोले॥ शशिकी ज्योति मलिन भई चकवी पिया मिलन गई त्रिविध पवन मन्द चलत पल्लवद्रुम डोले॥ टेक ॥ प्रात भानु प्रगट भयो रजनीको तिमिर गयो भँवर करत गुंजगान कमलन दल खोले॥ ब्रह्मादिक धरत ध्यान सुर नर मुनि करत गान जागनकी बेरभई भोर मंदिर खोले॥ सूरदास अति अनंद निरखिकै मुखारविन्द विप्रनको दान देत भूषण अनतोले॥ ४ ॥

आसावरी चौताल ॥ धायोरे सजदल रामचंद्र कर लंका नगर। सप्तउदधि त्रिशत् शेप कमठ कलमलानो महि डगमगत धूर गगन थकित छिपत

दिनकर ॥ अभोग ॥ अरन दर दरेर चढ़ो महाबली ऐसो शूरो पूरो अडंड डंडन् अखंड खंडन नरवर ॥ वैजू प्रभु चले जीत कनकपुरी घर २ निशान । नौबत बाजत आयोहै रघुवंश भूषण वर ॥ ५ ॥

देशीटोड़ी । निरततहैं पियाप्यारी । रास मँडल संगीत गतन लै सुन्दर वनवारी ॥ अंतरा ॥ तताथेई तताथेई थेई तता–तत्ता दिगि नग ४ झिगिनग २ थोलाँग २ दै दै तारी ॥ अभोग ॥ बजत मृदंग तता धिधि थुंथुं नाना किट-तक् त्रिकिट तक धिकिट तक धापरन्–परत सुखकारी ॥ रागरंगसों मुरली मधुर धुनि तुही राधे–तुही राधे–राधे सहस्रन गोपी निरत कारी ॥ ६ ॥

रागकान्हरा चौताल॥अकबर आयोरी । आली श्रवण सुनत यों बाजी नौबत बहु बाजे तार ॥ अन्तरा ॥ असुर सँहारन अपबली तपनको जो मारो विधना रचो जैसे इन्द्रको समान ॥ कई जंग जोधे जीत आये गिरिवर सुमेर मन मेरे आये अपबली, तपबली । कहैं मियां तानसेन तेरो राज जौलों गंग यमुन पवन पानी कल्पवृक्ष कीजै सेरी छाये अकबर ॥ ७ ॥

रागविहाग तिताला ॥ जिनके प्रिय न राम वैदेही । सो त्यागिये कोटि वैरी सम यद्यपि परम सनेही ॥ अन्तरा ॥ तजे पिता प्रहलाद बिभीपण बन्धु भरत महतारी । बलिगुरु

तजे नाह ब्रज बनितन भये जग मंगलकारी ॥ नातो नेह रामसों साँचो सुहृद सुशील जहाँ लों । अंजन कहा आँखि जेहि फूटै कहिये और कहाँलौं ॥ सोइ प्रीतम सोइ हितू हमारो पूज्य प्राणते प्यारो । जामिल बढ़ै सनेह रामसों तुलसी मीत हमारो ॥ ८ ॥

होरी । देखली हरि होरी तिहारी ॥ ए बिहारी देखली हरि होरी तिहारी ॥ लोभ गुलाल मलौ मेरे मुखसे मोहकी दी पिचकारी । मायाके रंग में ऐसी भिजोई भूलि गई सुधि सारी ॥ पिया अपने को बिसारी ॥ देखली० ॥ काम क्रोधके कुमकुमे तक २ भर भर मार पिछारी । आशा तृष्णाकी गेंद बनाके कैसी कुचन पर मारी ॥ हँसीं सब ब्रजकी नारी ॥ देखली० ॥ तेरे बिना कित जाके पुकारूं कौनहै ऐसो खिलारी । नेम धरमकी अँगिया मसक दई ज्ञान चुनारिया फारी ॥ दई मैं सभामें उघारी ॥ देखली० ॥ अब जो भई सो भई मेरे प्यारे ये आजिज़ बलिहारी । ऐसो रंगीलो रसीलो बिरजमें राखौ लाज हमारी । दीन आजिज़ बलिहारी ॥ देखली हरि होरी तिहारी ॥ ९ ॥

होरी देशकी चाचर ॥ ए दइया मोपै बरजोरी कर रँग डारो ॥ वो जो कहतहैं नंद महरजीको ब्रजमें छोरा कारो ॥ मोपै० ॥ लाख कही वाने एक नमानी काहू विधि टरेहो ना टारो ॥ हठीलो काहु विध टरे हो ना टारो ॥ मोपै० ॥ कर

कंचनापिचकारी ऐसी मारी, भीजगई शशि बदन छबि सारी, अपनी मौजसे ये करलीन्हों मुख चूँबत घूँघट उघारो ॥ दइयारी मोपै बरजोरी कर रंग डारो ॥ १० ॥

मेघमलार धीमा ॥ आईरी गरजत ऋतु बरषाकी । कैसे करूं कासों कहूंरी आली पिया परदेश गवन कीन्हों यातें मैंकूं कछु न सुहात ॥ अन्तरा ॥ दादुर मोर पपइया बोले सुन २ जियरा उमग्योजात । एक तो रैन कारी दूजे घर कंथ नाहीं तीजे दामिनी डरपात ॥ आईरी० ॥ ११ ॥

राग कामोद झूमर । करत सुख संग नव रंग ललना ल- लन। श्याम युग भुजन बिच गौर तन भामिनी सजलघनमाँ- झ मानो दामिनी झलमलन ॥ अंतरा ॥ छूटत बरबार और टूटत हरावली खोलहि वरहिं विधु बदन घूँघट बलन॥नैन हँसि २ मिलन रसछकी दृष्टिसों तैसी ये छबिभरी बंक भ्रुकुटि चलन ॥ महक रही मालती कुंज कुसमित महल टहल ललतादि तहाँ भूलि न लागत पलन ॥ नागरी दास सुखरास लीला ललित कुँवर और कुँवरनी मध्य मदन दल दल मलन॥ १२ ॥

राग कामोद तिताला । जयति नव नागरी सकल गुण सागरी कृष्णगुण आगरी दिनन । भोरी जयति हरिभामिनी कृष्ण घन दामिनी मत्तगजगामिनी नव किशोरी ॥ जयति सौभागमणि कृष्ण अनुराग मणि सकल त्रिय मुकुट मणि

सुयश लीजो।दीजिये दान यह व्यासकी स्वामिनी कृष्णसों बहुरि नहिं मान कीजो ॥ १३ ॥

राग विहाग तिताला ॥ भयो अब पौढ़न को समयो । इत आई द्रुमकी परछइयाँ उत दुर चंद गयो॥भयो०॥ललितादिक सिगरी जुरि आई नित २ नेह नयो। रसिक अली पिया रसिक बिहारिन सो सुख दगन लियो ॥ १४ ॥

राग देश तिताला। तुम बिन पतित पावन कौन। तनकही सब दुःख मेटो सुनो राधा रौन ॥ अन्तरा ॥ और सुरकी करैं पूजा तुम्हैं तजके जौन। दास गिरिधर कूप खोदत गंगतटपै तौन ॥ १५ ॥

राग सोरठ तिताला। रंगीली सखी वंशी वनमें बजी ॥ अन्तरा ॥ धीर समीर तीर यमुनाके सुन्दर श्याम सजी ॥ श्रवण सुनत सब व्रजकी वनिता आतुर तुरत भजी। ज्ञानकीदास श्याम मिलिवेकों कुलकी लाजतजी ॥ १६ ॥

पिया बिन नागिन कालीरात । कबहुँ यामिनी होत जुन्हैया डस उलटी होइ जात ॥ अन्तरा ॥ यंत्र न फुरत मंत्र नहिं लागत आयु सिरानी जात । सूरश्याम बिन सकल विरहिनी मुर मुर लहरें खात ॥ १७ ॥

रेखता जिला तिताला। मन हरलियो है मेरो वा नंदके दुलारे। मुसिकायके अदासों नैननके कर इशारे॥

एक दृष्टिहीमें वाने जाने कहा कियो है। नहिं चैन रैन दिनहै वाके बिना निहारे॥ चीरेके पेच बाँके शिर मुकुट झुकि रह्यो है। कटि किंकिणी रतनकी नूपुर बजतहैं प्यारे॥ नाशा बुलाक बेसर गल मोतियनकी माला। कंगन जडाऊ करमें नखचन्दसों उजारे॥ फूलोंके हाथ गजरे मुख पानकी ललाई। कानोंमें मोती बाले कुंडल झलकते न्यारे॥ छविदेत आरसीसे सुन्दर कपोल दोऊ। बरछी समान लोचन नई शानपै सँवारे॥ लखि श्यामकी निकाई सुधबुध सकल गँवाई। बौरी बनाके मोको कितगये वंशीवारे॥ जंतर अनेक मंतर गंडा तवीज टोना- स्याने तबीब पंडित कर कोटि जतनहारे॥ नारायण इन- दृगनमें जबसों वह रूप देखा। तबसों भयेहैं ध्यानी उघरत नहीं उघारे॥ १८॥

आज प्रभात लता मंडपमें सुख बरसत अति निरख युगल वर। गौर श्याम अभिराम रसभरे लटक२पगधरत अवनिपर। कुच कुम २ रंजित मालावलि सुरत नाथ श्रीश्यामधाम घर। प्रिया प्रेमके अंक अलंकृत चित्रित चतुर शिरोमणि निजकर। दम्पति अति अनुराग मुदित कलगान करत मनहरत परस्पर। हित हरिवंश प्रशंस परायन गायन अलि सुरदेत मधुरतर॥ १९॥

झंझौटी तिताला। जबते मोहिं नंदनंदन दृष्टि परयोमाई। कहा कहौं वाकी छबि वरणी नहिं जाई॥ मोरनकी चन्दकला शीश मुकुट सोहै। केसरको तिलकभाल तीनलोक मोहै॥ कुंडलनकी झलकन कपोलन पर झांई। मानो मीन सरवर तजि मकर मिलन आई॥ ललित भ्रुकुटि तिलक भाल चितवनमें टोना। खंजन अरु मधुप मीन भूले मृगछोना॥ सुन्दर अति नासिका सुग्रीव तीनरेखा। नटवर प्रभु वेषधरे रूप अति विशेखा॥ हसन दशन दाड़िम द्युति मन्द२ हाँसी। दमक २ दामिनि द्युति चमकै चपलासी॥ क्षुद्र-घंटिका अनूप वरणी नहिं जाई। गिरिधरके चरण कमल मीरा बलिजाई॥ २०॥

खम्माच तिताला। इस साँवरियाकी लटक चाल जियमें मोरे वस गईरे॥ अन्तरा। मुकुट पीताम्वर अधिक सुहावै लै मुरली पढि फूंक बजावै। लटकाली नागिनसी घटा तनमन मेरो डस गईरे॥ बिनदेखे नहिं परत चैन, कहो हरि बिन कैसे कटे दिनरैन, अब कहारे करूँ मोरी गुइयाँ विन दरश तरशगईरे॥ लिखी ललाट मिटत नाहिं मोहन, भयो उचाट जिया केहि कारण, फँसी आन मधुबन कुंजन परवश बश पड़गईरे॥ मकसूदपिया प्यारा आवै, छवि बाँकी तिरछी दिखलावै, प्रीतम डारगले बइयाँ सब कसक निकस गईरे॥ २१॥

विहाग तिताला । आज हरि नैन उनींदे आये । विन गुण माल पयोधर मुद्रा कंकण पीठ गड़ाये ॥ अन्तरा ॥ अंजन अधर ललाट महावर नयन तँबोलन खाये। सूरदास हँस कहत राधिका तीन तिलक कहाँ पाये ॥ २२ ॥

भैरवी तिताला । साँची कहो हमसों मनमोहन आज कहाँ सारी रैन जगेहो ॥ रंगरँगीली मदभरी अँखियाँ कौन रँगीलीके रंग रँगेहो ॥ अन्तरा ॥ मुतियनहार चुभे उर ऊपर याहीते काहूके अंगलगेहो । सूरश्याम तुम तहीं सिधारो जाके तन मन प्राण पगेहो ॥ २३ ॥

परज कालिंगड़ा तिताला।वंशीको बजाय दिखाय झलक हरिलैगयो मन मेरो मार पलक ॥अन्तरा ॥ पीताम्बर पट शिरमोर मुकुट और नागिनसी रही झलक,कुंडल झलक २ झलकतहैं जैसे दमक दामिनी जात फलक॥ नैनन नीरधीर नाहिं धारत वहुत वार गिरें ढलक ढलक। अब रोकेते कब रुकत सखी भरि आयो प्रेमजल छलक छलक ॥ भइयो उचंग जिय जान परत मोहिं गगन भूमि करे थलक थलक ॥ पेंडा दूरि कठिन लागत सखी पहुँचों कबलों श्याम तलक ॥ दोऊ दृग रसिक रसीले हरिके चंचल चपल कठोर पलक ॥ है मानुष क्या माल निज़ामी रटत सकल सुर ललक ललक ॥ २४ ॥

कल्याण तिताला । बसौ मेरे नैननमें दोऊ चंद ॥ गौर वरण वृषभानुनन्दिनी श्यामवरणनँदनंद ॥ अन्तरा ॥ गोकुल देखत रूप लुभाने निरखत आनँदकंद । जै श्रीभद्र प्रेमरस बन्धन क्यों छूटैं दृढ बन्ध ॥ २५ ॥

राग देश तिताला । दम्पति दरपन हाथलिये । निरखत मुख अरविन्द कपोलन मिले मुदित गलबाँह दिये ॥ अन्तरा ॥ ललित किशोरी मदन तरंगें परस अंग सरसात हिये । छिनहूँ यहछवि जिन न विलोकी कहा कोटिशत कल्प जिये ॥ २६ ॥

राग परज तिताला । छवि अटकी छबि नागर नटकी । केसरि खौर मुकुट माथेपर उर बनमाल बिराजत हटकी ॥ अन्तरा ॥ मृदुमुसिकान भौंहकी मोरन नाक बुलाक हलन हिय खटकी ॥ वंशी अधर मधुरधुनि बाजत झमकि लेत गहि अंबर झटकी । कृष्णरंग प्रभु संग फिरूं वन अब न रहूं काहूकी हटकी ॥ २७ ॥

राग खम्माच तिताला । माथे पै मुकुट श्रवण कुंडल विशाल लाल अलकैं सो अलिन मदगंजनी ॥ अन्तरा ॥ काछिनी कलित कटि किंकिणी विचित्र चित्र पीतपट अंग सो विराजै दुति बैंजनी । दिये गलवाहीं प्रियाप्रीतम विहार करैं अति अनुराग भर आईं नई ढ्रैजनी ॥ कहैं जयदयाल प्रभु मेरो मन मोहि लियो मन्द २ बाजत गोविन्द पाँय पैंजनी ॥ २८ ॥

भैरव तिताला । भोरभयो जागो मनमोहन टेरत राधे प्यारी ॥ अन्तरा ॥ बोलत तमचर मुखर सुहावन निशिं तम विगत भई उजियारी ॥ दधि मथि माखन तुम पै लाई मिश्रित मिश्री मधुर सुधारी ॥ ललितादिक सखियाँ सब ठाढीं मेवा पान लिये जल झारी ॥ सुनि प्रिय वाणी सुख सरसानी नैन कँवल खोले गिरिधारी ॥ दरशपरश नैनन फल पायो वारि अपनपौ भई सुखारी ॥ आदि सनातन राधे मोहन विलसत हुलसत सँगसुकुमारी॥ दम्पतिलीला सुखद सुशीला गावत दीन मगन बलिहारी२९

भोर भयो जागे वनवारी ॥ बाम भाग राजै श्रीराधा शोभा निरख हरष बलिहारी ॥ अन्तरा ॥ लटपटीपाग नयन अरुणारे धारन करगर पिय सुकुमारी ॥ मलगज बसन लसन अंगन प्रति छूटी चिहुर छटा दुतिकारी । पेचन पाग सँवारत राधे सुरझावत मोहन कच प्यारी ॥ प्रफुलित गात दोऊ रसभीने चित्त परस्पर होहिं सुखारी ॥ चन्द्रावलि ललितादिक सखियाँ मेवा पान लिये जलझारी ॥ दीन सखी ठाढी करजोरे आरति मंगल हरष उतारी ॥ ३० ॥

विहाग तिताला । नाथ मोहे अबकी वेर उबारो ॥ तीनलोकके तुम प्रतिपालक दाता नाम तिहारो ॥अन्तरा॥ तारीहै जात अजात प्रभूने मोपर किरपा धारो।तुम अनाथके

नाथहो स्वामी मैंहूं दास तिहारो॥ कर्महीन मैं जन्मको अंधो मोसम कौन नकारो। पतितनमें इक नायक कहिये नीचनमें सरदारो॥ कोटिपाप इकपा सँग मेरे अजामिल कौन विचारो॥ नाटो धर्म नाम सुनि मेरो नरक कियो हर तारो॥ सूरज अधमकी होत कौन गति अपने विरद सँवारो॥ २१॥

बिहागड़ा तिताला—आरति करति प्रिया सुखदैनी। आरति सकल निवार लालकी गुही आयकर बैनी॥ भूप न वसन सिंगार बनाई श्यामसखी मृगनैनी। भगवत रसिक बाँह गहिलीनी कुंजपुंज रतिसैनी॥ २२॥

लट उरझी सुरझा जा मोकर मेंहदी लगीहै। शिरको चीर सरकि गयो मोहन ताको नेक उढाजा॥ मोकर०॥ भालकी बेंदी गिरगई प्यारे अपने करते लगाजा। लीलाधर प्रभु गुण नाहिं भूलों बीरी नैक खवाजा॥ २३॥

नींद तोहिं बेचूंगी आली जो कोई गाहक होय॥ नींद०॥ आयेथे मोहना फिरगये अँगना मैं वैरिन रही सोय॥ नींद॥ कहाकरूं कछु वश नाहिं आवे आयो धन दियो खोय॥ लछीराम प्रभु अब जो मिलो तो नैनन डारूंगी समोय॥ नींद०॥ २४॥

वेसर कौनकी अति नीकी॥अन्तरा॥ होड़परी ललता जूके आगे कौन ललित को फीकी॥ दामोदर हित बिलग न मानो झुकन झुकी प्यारी जीकी॥ २५॥

अलइया तिताला ॥ तेरो मुख नीकोहै कि मेरो राधा प्यारी ॥ अन्तरा ॥ दरपन हाथ लियो नँदनंदन सांची कहो वृषभानु कुमारी ॥ हमसों कहत तुमहिं किन देखौ हम गोरी तुम श्याम बिहारी ॥ तुम्हरो मुख जैसे रैनि अँधेरो हमरो मुख ज्यों चंद्र उजारी ॥ तुम नँदजीके ढोटा छैल छबीले हम गूजरिहैं दासी तिहारी ॥ रसिक प्रीतम जूकी छबि निरखत हैं नैनन अटक रहे गिरिधारी ॥ चंद्रसखी भज बालकृष्ण छबि दोउ उर प्रीति बढी अति भारी ॥ ३६ ॥

देश तिताला। यह ऋतु रूस रहनकी नाहीं ॥ अन्तरा ॥ बरषत मेह मेदनीके हित प्रीतम हरष बढाहीं। जे बेली ग्रीषमऋतु दाहीं ते तरुवर लपटाहीं ॥ उमडीं नदी प्रेम रसमाती सिन्धु मिलनको धाई। शूरश्याम प्रभु पगे प्रेमरस मिलि बैठो इक ठाईं ॥ ३७ ॥

झंझोटी तिताला। ताण्डव गति मुंडनपै निरतत वनमाली ॥ अन्तरा ॥ पंपंपं पग पट्टकत फंफंफं फन फट्टकत बिंबिंबिं विनती करत नागवधू आली ॥ संसंसं सनकादिक नंनंनं नारदादि गंगंगं गँधरबसब मिलय देत ताली। सूरदास प्रभुकी वाणी किंकिंकिं किन हूँन जानी चंचंचं चरण देत अभय भयो काली ॥ ३८ ॥

राग कान्हड़ा तिताला ॥ दिन नीके बीते जातेहैं सुमरण करलो रामनाम, और विषयके तजो काम, तेरे संगचलै नहिं एक दाम, जो देतेहैं सो पातेहैं ॥ दिन० ॥ भाई बंधु पुत्र परिवारा, तुम किसके और कौन तुम्हारा, किसके बल हरिनाम बिसारा, आपसमें मिल करो विचारा देखनहींके नातेहैं ॥ दिन० ॥ लख चौरासी भ्रमके आया, बड़े भाग्य मानुष तनु पाया, तापरभी नहिं करी कमाई, जब माँगेगा लेखा सांई, फिर पीछे पछतातेहैं ॥ दिन० ॥ जिसे लगी यह विषय बतासा, तबसे बांधी रक्खी आसा, मूरख फँसा मौजकी फाँसा, गये सांस नहिं आतेहैं ॥ दिन नीके० ॥ ३९ ॥

राग पीलू तिताला । बंशीवारे तू मोरी गली आजारे । कोरी रमटकिन दही जमायो मेरो माखन खाजारे ॥ वृंदावनकी कुंज गलिनमें टुक मुखड़ा दिखलाजारे । तेरे कारण भईहौं बावरी तनुकी तपत बुताजारे । चरण दास सुखदेव पियारे नैनसे नैना मिलाजारे ॥ वंशीवारे तू० ॥ ४० ॥

जिला । पिया तोरी साँवरी सूरत पर वारीरे । बतियाँ करत मानो फूलसे झरत मुख अलख बदन घुँघरारीरे ॥ बांकी चितवन मृदु हँसन दशन छबि भ्रुकुटि कुटिल लागै प्यारीरे ॥ करधरि कटिपै अदासों नारायाण ठाढो पकर द्रुमवर डारीरे ॥ तोरी० ॥ ४१ ॥

देश । सखी तोहिं ढूँढतहैं नँदलाल कहूँ मति जावैरी ॥ अन्तरा ॥ तेरीसों अबहीं ह्यां आयो घनी देर मोसों बतरायो तोहिं देखिवे कारण घात लगावैरी ॥ आज काल या ब्रजके माहीं रूपवान तेरी सम नाहीं तेरे वदनके आगे चन्द लजावैरी॥ नारायण मोहिं यह डर भारी जो वासों भई भेंट तिहारी फिर जाने वह कहा कलंक लगावैरी ॥ ४२॥

मलार। ब्रजपर बरसत आज फुई । दम्पति रंग महलमें बैठे शोभा अधिक हुई ॥ ब्रज ० ॥ निर्मल विटप सकल फल फूलन सोहत धरणिधुई । गिरिधर दास लालरस बोरी चूनरि परत चुई ॥ ४३ ॥

भैरवी । अँखिया हरि दरशन की प्यासी । देखो चहत कमल नैनन को निशिदिन रहत उदासी ॥ केसर तिलक माल मुतियनकी वृन्दावनके बासी ॥ नेह लगाय त्याग गये तृणसम डारगये गलफाँसी ॥ काहूके मनकी को जानत लोगनके मन हाँसी । सूरदास प्रभु तुम्हरे दरश विन लेहों करवट कासी ॥ ४४ ॥

झँझौटी—ऊधो जाके माथे भाग । बिलपत छाँड़ि सकल ब्रजयुवती चेरी चपल सुहाग ॥ अन्तरा ॥ आये योग की बेलि लगावन काट प्रेम को बाग । कुबजाको पटरानी कीन्हीं हमहिं देत वैराग ॥ लौंडीकी अब डौंडी बाजी बँध्यो श्याम अनुराग । निलज भये दोऊ खेलत

अब बारहमासी फाग ॥ सूरदास प्रभु ऊख छाँडिकै चतुर चिचोरत तांग ॥ ४५ ॥

भैरवी । जित देखौ तित श्याम भईहै ॥ जित० ॥ श्याम कुंजवन यमुना श्यामा श्याम गगन घन घटा छईहै ॥ सब रंगनमें श्याम भरोहै लोग कहत यह बात नईहै । मैं बौरी हूँ कि लोगनहींकी श्याम पुतरिया बदल गईहै ॥ चंद्रसार रविसार श्यामहैं मृगमद श्याम काम विजईहै । नीलकंठको कंठ श्यामहै मनहुँ श्यामता बेलि बईहै ॥ श्रुतिको आखर श्याम देखियत दीपशिखा पर श्यामतई है । नर देवनकी मोहक श्यामा अलख ब्रह्मछबि श्याम भईहै ॥ ४६ ॥

मलार–पिय बिन कूकत वनमें मोर॥अन्तरा ॥ दादुर रटत कूकरही कोयल करत पपीहा शोर ॥ बिजली चमकत बदरा झमकत बरसत जल घनघोर ॥ माधवी पिय विनु जानि अकेली मारत मदन मरोर ॥ ४७ ॥

ठुमरी खम्माच । डगर चलत मोसें कीन्हीं रार दधि बेचन मैं न जाऊँगी ॥ अन्तरा ॥ लपट झपट मेरी माथेकी मटुकी तोरी सगरो चीर बोरी । सनद पिया मैंतो गईरी हार । डगर चलत मोसे कीन्हीं रार ॥ ४८ ॥

मोहिका डगर चलत दीनीगारीरे । ऐसोरी ढीठ बनवारीरी गुइयाँ बिनती सकल करहारीरे ॥ अंतरा ॥ नीरभरन मैं

चलीहूँ धामसे बीच मिले पनघटमें कान्ह वोतो जानें न दीन पनघटको सनदपिया निरखत सगरी पनिहारीरे ॥ ४९ ॥

खम्माच। हाँ जोराजोरी मोरी बइयाँ मरोरी॥ वरजोरी कर पकरत पिय छतियाँ छुवत जोरा जोरी ॥ अन्तरा॥ देखो २ सारी मोरी चुरियाँ करक गईं, अँगिया मसकगई ऐसी कोई करत ठठोरीरे ॥ लाजमरूँ कछु बन नहिं आवै, मोरा जिय डरपावै ॥ आलम दिननकी मैं थोरीरे ॥ हाँ जोरा जोरी० ॥ ५० ॥

देश । मुरली धुन मधुर कहीं बाजीरे । मधुबन कुंजनमें देखो मोरी आली, नींद न आवै मैंतो सारी रैन जागीरे ॥ अंतरा ॥ शब्द सुनत मनमोहि लियोहै व्याकुलभई सुन धुन नारीरे । लाख जतन सों मुरलीबाजे सनद पिया मैं तोसे राजीरे ॥ ५१ ॥

खम्माच । कासों कहूँ सखी वाके बयन नटवर नित अटको रहत नयन ॥ अंतरा ॥ अजब छली ए गलीमें करत छल मोतन तक दृग कीन्ह सयन । मानदास ऐसी साँवरी सूरतको नहीं कोऊ भयो नहीं होनो हैन ॥ कासों कहों० ॥ ५२ ॥

तिलक कामोद । दुखवा मैं कासों कहूँ सजनी । तड़प तड़प निकसो जात जिया पिया बिन नाहीं परे चैन एक घरी पल छिन ॥ अंतरा ॥ ना जानूं कौन देश बिरम रहे

प्रेमदास कौन सौतन बैरन घर एरी, सखी मोहिं विकल बीती रैन तारे गिनगिन ॥ ५३ ॥

ए मैं नीरभरन कैसे जाऊं । सजनी बाट चलत मोसौं करत रार ।। अंतरा ।। ऐसो चंचल चपल नट खट हट करत–मानत ना काहूकी बात–विनती करत मैंतो गईरी हार ।।एमैं० ।। ५४ ॥

सिन्ध खम्माच । वशकीनों वाकी छबीली चितवन जि-या वश कीन्हों ॥ अंतरा ॥ ना मोहिं चैन पड़ै घड़ी पल छिन सखी नन्दको निठुर नटखट अटको वो नैना ॥ वशकीन्हों०।। वहतो अरज नहीं मानत काहूकी प्यारे आपी मिलेंगी धाय काहूसे ना डरें नैना ।। वश० ।। ५५ ॥

देश तिताला । निपट नटखट नटवर गही लाज । वहतो यमुनाके तट पकर पट झपट झगरत वाके संग लईं लाज ।।अंतरा ॥ बरज बरज हटकर हटगईरी प्यारे वह तो एकहू नमानें अतिहीं चतुर सिरताज । निपट नट खट नट वर गही लाज ॥ ५६ ॥

राग मलार । उमड़ घुमड़ बरसात बदरवा पिया बिन मैंका डर लागत तरसावत कछु लाज न आवत लगत जाय सौतनके गरवा ॥ अन्तरा ॥ बीतीरात बरषाऋतु सजनी नीको न लागत सकल सिंगरवा ॥ ऐसेई कहत मिले जब प्यारे कुंज महल सुख झूलनवा ॥ ५७ ॥

खम्माच तिताला ॥ साँवरी सुरत मोरा मन वश करली न्हो–वारी ननदी आज कहा कहूँ तोसों अपने जियांकी बात सखीरी । घरी २ पलछिन कल न परत मोहिं ॥ ॥ अन्तरा ॥ ऐसो कोऊ जतन बता मोरी सजनी जो पिया रीझमिले मोहिं आन सनद ॥ ५८ ॥

राग बिहाग तिताला । अलबेली लख लटक मुकुटकी । मान छोड़ वृषभानु नंदिनी मान कही अब नागरनटकी ॥ अल०॥ नख सों लिखत सिकत का सजनी कीन्ह चहत कछु टोना टटकी । है कछु सुरत तोहिं वा दिनकी जब बनमालहि बेसर अटकी ॥ गहि कर कमल कमल मुख तेरो सुरझायो तब नेक न मटकी । तेपर चलूं अबनाहिं बाँहिं गहि मानत नाहिं रहत बहु भटकी । युगल सखी प्रभुरस वश कीन्हें भुजभरि भेंट मेट सब खटकी ॥ ५९ ॥

परज तिताला । मग चलत कान्ह करं घटकी । हाँ दाधि बेचन जात वृन्दावन छीन झपट मटकी पटकी ॥ अन्तरा ॥ आन देशकी आलम गुजरिया भूली फिरत भटकी भटकी ॥ ६० ॥

मोरी छीन मटकिया पटकी । देखो २ एरी सखी ऐसो चतुर कान्ह दधिखाय–नाहक दइया करझटकी ॥अन्तरा॥ बाट चलत मोसों रारि करतहै ललिता श्याम नहिं मानत हटकी ॥ ६१ ॥

जिला तिताला। आज मन बशगई। साँवरेकी सूरति यों प्यारी २ सजनी कहूँ कासों अपने जियाकी बिथा सगरी। वाहूके बिन देखे कल न परत मोहिरी॥ आज०॥ हाहाखात तोरे पइयाँ परत हूँ जो पिया आन मिलें-मैंतो चेरी सनद भई तेरी॥ ६२॥

नेक नजर मोरा मन वश कर लीन्हेंरी आली साँवरि याने जोरा जोरी बाट चलत बँसिया बजाय॥ अन्तरा॥ नींदँ न आवै मोहिकूं दिनरैन सजनीरी उन बिन विरहा सतावै मोरी विनती सनद पियासों कहियो जाय॥ ६३॥

राग केदारा राधा तोरे नैननहीं के बान। एक मरत यक मुरछि परत हैं एक गह राखत प्रान॥ अन्तरा॥ क्षितिपर कमल कमलपर कदली कदली पर हरठान॥ हरपर कनक कनकपर कलसी जापै मुख शशिभान। शशिपर बिन्द शिखर ता भीतर कबरि बठे किरवान। बिच २ दामिनीकी छवि उपजत मधुप-यूथ असमान॥ एक सुन्दरी अनूप रूप और सकल कलाकी खान। सूरदास प्रभु और छबीलो कितहै श्यामसुजान॥ ६४॥

राग अलैया। नंदके लाल हरो मनमोर। हों अपनी मोतिनलर पोवति कांकरि डारगयो सखी भोर॥ अन्तरा॥ बंक विलोकनि चाल छबीली रसिक शिरोमणि नन्द किशोर॥ कहि कैसे मन रहत श्रवण सुनि सरस मधुर

मुरलीकी घोर ॥ इन्दु शुविन्द बदनके कारण चितवनको भये नयन चकोर ॥ ६५ ॥

विरहकी पीर सही नहिं जाय । कहाकरों कछु वश नाहिं मेरो कीजे कौन उपाय । हरीचन्द मेरीबाँह पकरके लीजै आय उठाय ॥ ६६ ॥

अकेली फूल बिननमें आई । संग नहीं कोइ सखी सहेली फूल देख बिलमाई ।या वनके कांटनसों मेरी सारी गई उरझाई । हरीचन्द पिया आय दयाकरि अपने हाथ छुडाई ॥ ६७ ॥

खेमेटा सांझीका श्याम सलोने गात मलिनियाँ । बड़े २ नैन भौंह दोऊ बांकी जोवनसों इठलात ॥ सुनत नहीं कछु बात कोऊकी राधेके ढिग जात । हरीचन्द कछु जानि परै नाहिं घूँघटमें मुसकात ॥ ६८ ॥

लगत इन फुलवारिनमें चोर । इनसों चौकस रहियो सजनी छिपरहे चारों ओर । अबहिं निकसि अइहैं गहवरसों लैहैं भूषण छोर ॥ हरीचन्द इनसे बच रहिये यह ठगिया बरजोर ॥ ६९ ॥

कहनवा मानो हो दिन जानी । निशि अँधियारी कारी बिजुरीचमके रुमझुम बरसत पानी । हाथ जोर ठाढी अरज करत हौं सुनत नहीं मोरी बानी । तुमहीं अनोखे विदेश जवैया हरीचन्द सैलानी ॥ ७० ॥

सखी वंशी बजी नन्दनन्दनकी। श्रीवृन्दावनकी कुंजगलिनमें सुधि आई सांवर घनकी। मगन भई गोपी हरिके रस बिसर गई सुधि तन मन की॥ सखि०॥ ७१॥

काफी। कठिन भई आजुकी रतियां। पिया परदेश बहुत दिन बीते नाहीं आई पतिया। बिरह सतावत दिन २ हमको कासों करौ बतियां। आय मिलौ पिय हरीचन्द तुम लांगू मैं तोरी छतियां॥ ७२॥

बजन लागी बंशी यारकी। सुनि २ तिय सब चकित होतहैं सुधि आवत दिलदारकी। मीठी तान लेत चित मोहे चितवन तीखी प्यारकी। हरीचन्द नयननमें गडगई छबि गुञ्जनके हारकी॥ ७३॥

बजन लागी वंशीलालकी। हौं बरसाने जात रहीरी सुधि आई वनमालकी। बिसरत नाहिं सखी वह चितवन सुन्दर श्यामतमालकी। हरीचन्द हँसि कण्ठ लगायो बिसरिगई सुधि बालकी॥ ७४॥

झिझोटी। रंगीले रंगदे मेरीचुनरी। श्याम रंगसे रँगदे चुनरिया हरीचन्द डनरीरे॥ रंगीले॥ ७५॥

दादरा। सैंयां वेदरदी दरद नाहिं जानैं प्राण दिये बदनाम भये पर नेक प्रीति नाहिं मानैं। हरीचन्द अलगरजी प्यारा दया नहीं जिय आनैं॥ ७६॥

सोरठ । ए कन्हैया मेरी गली नित आओ बजाओ बाँसुरी रसभरी । ए कन्हैया नयनसों नैन मिलाओ दिखाओ माधुरी रसभरी ॥ ए कन्हैया पीरो पट कटि कसि दिखराओ चातुरी रसभरी । ए कन्हैया राधा २ टेरि जताओ आतुरी रसभरी । ए कन्हैया और कहूँ जिन जाओ रहो यहँ मधुपुरी रसभरी । ए कन्हैया गिरिधर दास सुख देहु न मारो नैन छुरी रसभरी ॥ ७७ ॥

पीलू । काकरौं गोइयाँ । अरुझि गईं अँखियाँ । कैसे छिपाऊँ छिपत नहिं सजनी छैला मदमाती भईं मधु मखियाँ । साँवरो रूप देख परवश भईं इन कुललाज तनिक नहिं रखियाँ । हरीचन्द बदनाम भईं मैंतो ताना मारत सब संगकी सखियाँ ॥ ७८ ॥

नयनकी मतमारो तलवरिया । मैंतो घायल बिन चोट भईरे कहर करेजे करिया ॥ काहेको सान देत भौंहनकी काजर नयनन भरिया ॥ हरीचन्द बिन मारे मरत हम मत लाओ तीर कटरिया ॥ ७९ ॥

ठुमरी सहाना—आज तोहिं मिल्यो गोरी कुंजन पियरवा । काहे बोले झूँठे बैन कहे देत तेरे नैन देखु न बिथुर रहै मुखपर बरवा ॥ अंगियां के बंदटूटे करसों कंगन छूटे अपने पीतमजीके लगीहै तु गरवा । हरीचंद लाज मेटी गाढे भुज भर भेटी ह्वै ह्वैके उपटि भये चार हरवा ॥ ८० ॥

काहूसों न लागें गोरी काहूके नयनवा। हँसें सुनि सब लोग मिटे न विरह सोग पूछेंतें न आवै कछु मुखतें बयनवा॥ हरीचंद घबराय विपति कही न जाय छूटे खानपान मिटैं चित्तके चयनवा ॥ ८१ ॥

सजन छतियाँ लपटा जारे—दोऊ नैन जोर कछु भौंह मोर झुकि झूमि चूमि मुखदें चकोर अधरन पै धरके अपनो अधर रस मोहिं पिलाजारे ॥ दोऊ भुज बिलास गरबाहीं डाल मेरे गालनपै धर अपनो गाल उरझाय अंगमें अंग सबै रस रंग बरसाजारे ॥ मेरे खोल कंचुकी बंद हँसिके रसले जोबनको कसि २ के हरीचन्द रँगीली सेजनपै सब कसक मिटाजारे ॥ ८२ ॥

पीलू। पछिताात गुजरिया घरमें खरी। अब लग श्याम सुन्दर नहिं आये दुखदाइन भई रात अँधरिया॥ बैठत उठत सेजपै भामिनि पियाबिना मेरी सूनी सेजरिया॥ हरीचंद पिय आय मिले तुम बस जो गई मेरी उजरी नगरिया॥ ८३ ॥

भैरवी।नशीली आँखें वाले सोय रहो अभी है बड़ी रात॥ सगरी रैन मेरे संग जागत रहे करत रँगीली बात॥ चिड़िया नहीं बोलीं मेरी चूरी खनकत काहे अकुलात। हरीचन्द मत उठो पियरवा गर लागि करो रस घात॥ ॥ नशीली० ॥ ८४ ॥

जलभरन जात सखी आज प्रात मनमोहन मैंने पायोरी ॥ नंदनँदन घनश्याम सलोना देखतही डारत है टोना बहियां पकरि लई मेरी औचक हँसि २ कंठ लगायोरी ॥ घूंघट टारि बदनदिशि हेर्यो हाथ कमल मोतनुपै फेर्यो पूछत नाम अरी तू कोहै सुन्दर वचन सुनायोरी ॥ करिकै अपने मनको भायो भवन गयो यशुदाको जायो अपने हाथ मन लेगयो मेरो सुध बुध सकल गँवायोरी ॥ वैरिन लाजभई सखि मेरी सांचो कहत शपथ करि तेरी अव पछिताय कहा करों सजनी सुखको काल गँवायोरी ॥ गिरिधर दास पीर अतिबाढ़ी रहिगई मनहुँ चित्र लिख काढी काम धाम सब छोडि ग्वालिनी नैनन नीर बहायोरी ॥ ८५ ॥

काफी पीलू। क्यों फकीर बनि आयारेमेरे वारे जोगी। गई बैस कोमल अंगनपर काहे विभूति रमायावे मेरे वारे जोगी ॥ को वे मात पिता तेरे जोगी जिन तोहिं नाहिं मनायावे। काचे जिय कहु काके कारण प्यारे जोग कमायावे। मेरे वारे जोगी० ॥ बड़े २ नैन छके मदरँगसों मुखपर लट लट कायावे। हरीचन्द वरसानेमें चल घर घर अलख जगायावे मेरे वारे जोगी० ॥ ८६ ॥

सोरठ। हमारे घर अइयेहो सुन्दरश्याम।मनमोहन अति चतुर छबीले अंग अंग अभिराम ॥ वरसाने संझाकी

बिरियाँ कीरति जूके धाम । सखी रूप करि परम अनूपम श्यामा कहियो नाम ॥ तब मैं आय मिलूंगी तुमसों आनँद आठों याम । गिरिधर दास कहत यों राधा नख शिख रूप ललाम ॥ ८७ ॥

भैरवी । सुमिरो मन प्रातकाल गुणनिधि गिरिधरन लाल । पंकजलोचन विशाल कुंकमको तिलक भाल अरुझी उर मोतीमाल आवत लटकीली चाल ॥ कुंडल शत शशि प्रकाश श्याम अलक ताके पास उदै शैल कीनोवास कीधों बिंब व्यालवाल । शिरपै लटकीलि पाग देखहिं तिय भर सुहाग गोकुलके भूरिभाग गावती निहाल बाल ॥ कन्धधरे वसन पीत बरसत नव प्रीति रीति शोभित नवनीत भीत करुणाकर श्रीगोपाल ॥ वल्लभ पद कमल आश गावत गिरिधरनदास उरमहँ मम कीजै वास मोहन अतिही कृपाल ॥ ८८ ॥

राग सोरठदेश । चोरी दही महीकी करना घर घर घूमना हो लाल ॥ मटुकीके कर टूक पटकना अचरा गहि गहि हाथ झटकना उझकि उझकि उरलाय लाय मुख चूमनाहो लाल ॥ परनारिनसों नयन लगाना सुन्दर गीत मनोहर गाना यमुनाके तट ग्वालन लैले घूमनाहो लाल ॥ गिरिधरदास घूमनित करना लाज शङ्क कुछ जीनहिं धरना डरना नहीं किसीसे निधरक झूमनाहो लाल ॥ ८९ ॥

रेखता । श्यामको छोडके संसारका झूठा नाता । रात दिन बातकी बातोहिमें बीताजाता ॥ क्यों तू कहताहै ऐ नादान ये मेरा मेरा । ऐसीहि बातोंमें एक रोज तू खतरा खाता ॥ देख किस तरहसे आतेहैं और जातेहैं सभी । कुछभी परपञ्च न यह ख्यालके भीतर आता ॥ दास गिरिधर बिना उस यारके झूठेहैं सब । किसके यह भाई बेटा यार और पिता माता ॥ ९० ॥

मल्हार ताल रूपक ॥ पिय बिनु बिरह बरषा आई ॥ सघन घन दामिनिदमकि संग चमकि जुगुनू रमाकि बदरन झमकि बरसत बूंद अति झरलाई ॥ रैन कारी डरारी भारी छाई अँधियारी बिनु पीया बिहारी गिरिधारीके प्यारी घबराई ॥ हरीचन्द न धीर धरै पीर भई भारी बनवारी बिना मुरझाई ॥ ९१ ॥

मल्हार सूरदासी । यह ऋतु रूसनकी नाहिं प्यारी ॥ देखु न छायरहे घन झुकि झुकि भूमि छई हरियारी ॥ सीरी पवन चलत गरुईहै काम बढावन हारी ॥ वन उपवन सब भये सुहावन औरही छबि कछु धारी ॥ फूली जुही मालती महँकी सुन कोकिल किलकारी ॥ लहकि लहकि लपटीं सब बेली पीतम गल भुजडारी ॥ मगन भये जडजीव सबै जब तब तू रहति क्यों न्यारी ॥ हरीचन्द गरलग्गु पीतमके गाढे भुज भरि नारी ॥ ९२ ॥

रेखता । दिलदार यार प्यारेगलियोंमें मेरी आजा ॥ आंखें तरस रहीहैं सूरत इन्हैं दिखाजा ॥ चेरीहूं तेरी प्यारे इतना तौ मत सतारे ॥ लाखोंही दुख सहारे टुक अबतौ रहम खाजा ॥ तेरेहि हेत मोहन छानीहै खाक बन बन दुख झेले शिरपे अनगिन अबतो गले लगाजा ॥ मनको रहूं मैं मारे कबतक बतादे प्यारे सूखे विरहमें तारे पानी इन्हैं पिलाजा ॥ सब लोकलाज खोई दिनरैन बैठ रोई जिसका कहीं न कोई उसका तौ जी बचाजा ॥ मुझको नयों भुलाओ कुछ शर्म जीमें खाओ अपनोंको मत सताओ ऐ प्राणप्यारे राजा ॥ हरिचन्द नाम प्यारी दासीहै जो तुम्हारी मरतीहै वह बिचारी आकर उसे जिलाजा ॥९३॥

खेमटा । अब ना आओ पिया मेरी सेजरिया ॥ जात विदेश छोड तुम हमको हनि हनि हियमें विरह कटारिया ॥ कहत चन्द्रिका हरीचन्द्र पिय जाओ वहीं जहां लागी नजरिया ॥ ९४ ॥

रेखता । मोहन पियप्यारे टुक मेरे ढिग आव ॥ वारीगई सूरतके बदन तो दिखाव ॥ तरस गये अंग अंग गरमें लपटाव ॥ तेरी मैं चेरी मुझे मरतसों जिलाव ॥ वही रूप वही अदा दीने जिन घाव ॥ प्यारे हरिचन्दहि फिर आजभी दरशाव ॥ ९५ ॥

रागनी । अरे गोरी जोबन मद इठलाती चलै गज मस्तसी चाल॥अरे गोरी गिनै ना काहू वह मदमाती फिरत उतानी वाल ॥ अरे गोरी मत इतनो गरभावे यह ब्रज टेढो गांव॥ अरेगोरी अबहीं छैल ह्यां आवै मोहनजाकोहै नांव ॥ अरे गोरी गरलावे कर मनमानो मद तेरो देई उतार ॥ अरे गोरी हरीचन्द संगलीने लंग छैल लगवार ॥ ९६ ॥

होरी । मोहिं मति वरजोरी चतुर ननदिया होरी खेलन जाउँ॥फिर यह दिन सपनेसे ह्वैहैं पाऊँ कै ना पाउँ॥ ऐसो शकुन बताऊं जोपिय द्वारहि पै गरलाउँ ॥ हरीचन्द जनमनकी प्यासी कछुतो प्यास बुझाउं ॥ ९७ ॥

रागनी दादरा । श्रीराधावर कैसा सजीला ॥ देखोरी सखी नजर न लागै कैसा सजा शिरचीरा छबीला ॥ वारफेर जल पियो मेरी सजनी मतदेखो भर नैन रंगीला ॥ हरीचंद मिललैहो वलैय्या अंगरिन करि करि कंठ चुठीला ॥ ९८ ॥

रागनी दादरा । गेंद तकि मारी सांवरिया नटनागर चितचोर ॥ भयो निशंक अंक भरलीनो भ्रुकुटी नयन मरोर ॥ कहाकरौं कछु वशनहीं मेरो ऐसो जालिमजोर ॥ रसिकहठीलो जिय तरसावै मानत नहीं निहोर ॥ ९९ ॥

राग देश तालत्योरा ॥ तुमविन पतित पावन कौन ॥ तनकही सब दोप मेटौ सुनो राधा रवन ॥ और सुर-

की करत पूजा तुमहिं तजिकै जौन ॥ दास गिरिधर कूप खोदत गंग तटपर तौन ॥ १०० ॥

राग सोरठ । रंगीली सखी वंसी वनमें वजी ॥ धीर समीर तीर यमुनाके सुन्दर श्यामसजी ॥ श्रवण सुनत सब व्रजकी वनिता आतुर तुरत भजी ॥ जानकीदास श्याम मिलवेको कुलकी लाज तजी ॥ १०१ ॥

राग दादरा । चंचल चपलसे नयना दिखला गयो विहारी । जादिनसों देखे नयना, तादिनसोंकल पड़ेना, मुख सों न आमें वैना, सुध बुध सभी बिसारी ॥ एकदिवस मैं गईरी, दधि वेचवे सखीरी, पाछेसे आन अचानक मटुकी मेरी उतारी ॥ नादर सखी यों बोली हृदयकी गांठ खोली दरशन तो दीजो प्यारे मैं दासिहूं तिहारी ॥१०२ ॥

राग सोहनी । जायके येशुदासे कहूँगी ॥ सीधे रहो न गहो करसों कर बहुत सही अव नाहिं सहूंगी ॥ कोहै हमारी जो सारी छुवैगो गारी दिये विन नाहिं रहूंगी ॥ हार हमारेको हाथ न लगावो मैंभी लाल वनमाल गहूंगी॥ मोसे रारि करो जिन मोहन एककी लाख वनाय कहूँगी ॥ युगलसखी करों प्राण न्योछावर अभी अंकभर लाय रहूंगी ॥ १०३ ॥

राग खंमाच ताल सूल । अडंड डंडन पर अखंड खंडनपर शंभू नगरेकीरति श्रीनम् शम्भू हरे

गंगा धरे कामधेनु कर कल्पवृक्षतर चिन्तामणि संपूरण करे धाराध्रुप ध्रुप छंदत्रीवट तराना प्रबंध गीत संगीतनके न्यारे न्यारे कर वन्ध॥ कहै गुनी तानसेन सुनोहो गोपाललाल सबप्रकार गुनी गामें सुरसुधार शुद्धअंग १०४

राग खम्माच ध्रुवपद वर्षाती । वंशी धुनसों बजाय बाजत श्रीवृंदावन रंगघुमड रह्यो सुघन गरजत बादरसमान। रहस रहस बरषत गोपी दामिनीसी दमकत नयना रतनारे कारे भवैं सुहैं धनुषबान॥ चँवर चारु चीकने कुचन दशन बिराजत पिया औ प्यारी रटत छूटत छबिकी छटान॥ कुंजनबिहारि श्रीविहत मुख खोल मूंद जैसे बर्षाऋतुमें निकसत और छिपत भानु॥ १०५॥

रागनी पर्जे। मग चलत कान्ह कर झटकी रे मग चलत कान्ह कर झटकीरे॥ कौन देशकी अलम गुजारिया बहना माने हमारी हटकी॥ मगचल०॥ १०६॥

राग शहाना एकताला।रुम झुम वरषत आली सावन बदरवा॥ बहन लागि दक्षिण पवन बतियां मैं कहूं कवन सय्यां नाहिं मोर भवन वरतना दियरवा॥ मुखपर मोती बिशाल बिलसत अति युवति भाल देख देख अजब ख्याल तरसैरी जियरवा॥ आली चितधरो धीर मिलहै रघुबंश वीर ओढो शिर चीर वीर पहिरो उर हरवा॥ १०७॥

राग कल्याण ध्रुवपद। खेलन आयो मोसे सरिस फाग ब्रजको वसैया कन्हैया ॥ संगलिये ग्वालबाल फेंटन भर भर गुलाल ललितढप बजायो रे बलभद्र भैया ॥ इत उत बत ठन आई वरसानेकी नारि ता मध्य नायका श्रीराधिका दुलय्या ॥ धूममची नंदद्वार पड़नलगी रंगकी मार हर्षे निरख कान्हड़ वलिजात मय्या ॥ १०८ ॥

रागनी कल्याण। माई अवतो लागी प्रीति। प्रीतिराम सों प्रीति रमासों श्री गिरिवरधर ब्रजकुंजन वन,श्यामसुंदर बंसी वारेसों ॥ अब० ॥ अधर दशन घन तडित कम्बुसम ग्रीव कंठ वनमाल उदरबर कटि पटपीत कसे कोमल पद सूरदास आनंद मगन मन॥ अब० ॥ १०९ ॥

रागनी कल्याण दादरा । लव तुमसे लगी कृष्णकुमर भूल न जाना । अबतो लियाहै पहिन तेरे नामका बाना॥ दश इन्द्री पांच भूतोंके वशमें रहा यह मन । दिन रात इसे अपनेही मारगमें चलाना॥ बनता न योग कर्म न जप तप धरम दया। प्रभू नामकी वह्नीसे मुझे पार लगाना ॥ धन तुमको सनेहीका जनम द्विजके घर दिया। जबतक जिऊँ न छोडूं तेरे नामका गाना ॥ ११० ॥

राग काफ़ी। मुरलिया जो पाऊँ प्यारी तेरोही गुण गाऊं॥ सुनिये कुँवर किशोरी राधे राधे राधे सुनाऊं॥ चरण छुवाय पाग करि विनती तेरोही ध्यान लगाऊं॥ यह विनती वलिहार विहारिन तेरेही हाथ विकाऊँ॥१११॥

राग काफी । सखी याकी वंसी लीजो चोर ॥ जिनन गोपाल किये वश अपने प्रीति सबनकी तोर ॥ छिन इक घर भीतर निशि वासर धरत न कबहूं छोर ॥ कबहूं करपर कबहुँ अधरपर कबहुं कटि उर भोर ॥ ना जानै कछु मेल मोहनी राखि सबन इककोर ॥ सूरदास प्रभुको मन सजनी बांधो रागकी डोर ॥ ११२ ॥

राग सोरठ । पिया विन नागिन कालीरात ॥ कबहुँ यामिनी होत जुनय्या कबहुं उलटीसी होइजात ॥ यत्न न फुरत मंत्र नाहिं लागत आयु सिरानी जात ॥ सूरश्याम विन विकल विरहनी मुरि मुरि लहरैं खात ॥ ११३ ॥

राग सारंग । मोहन मुख देखत छूटो मान ॥ नयन लालची हँस लिपटाने छवि में दव्यो सयान ॥ मंद हँसन सबको धीरज हरि चितमात्यो कर गान ॥ घूँघटपट उरझ्यो चल सैनन लग्यो मैनको बान ॥ विकल जानि गहि पानि आनि उर विरच्यौ सुरत वितान ॥ व्यास स्वामिनी पियहि सुनायो रतिरणको जु निसान ॥ ११४ ॥

राग देश । चलो चलोरी आली वंसीवट तीरे ॥ रट लागी श्रीराधे राधे नागर नटवर श्याम शरीरे ॥ कहुँ लकुटी कहुँ मुकुट पीतांबर सिथिल अंग मन विरह अधीरे ॥ ललित किशोरी सुन व्याकुल गति चल मिल भेटो मदन की पीरे ॥ ११५ ॥

राग दादरा । कह्यो किन मानतहै मेरो ॥ मदन मोहन द्वारेपर ठाढो पंथ निहारत तेरो ॥ झगरो करत रैन सब बीती छिन २ पल २ झेरो ॥ साज सिंगार हार अपने लै और नांहि कछु केरो ॥ गोविंदप्रभुको कोउ न भेटत तुमविन रहत अँधेरो ॥ ११६ ॥

रागनी देश । पिया छायरहे माधों वनमें । क्यों न आग लगे मोरे तनमें ॥ दिवरा हमारे जुबना तकतहैं कैसे फिरूं आंगनमें ॥ मुस्तरी पियासे वश न चलतहै हूक उठै मोरे तनमें ॥ ११७ ॥

भजन । दिल मस्तहुवा मेरे को बोलै॥घटहीमें गंगा घट हीमें यमुना ताल तलय्या मेरे को डोलै ॥ कमतीहो उसें धरों तराजू पूराहुवा तो को तोलै ॥ कहैं कवीर सुनो भाई साधो सांई पाये तृण ओलै ११८ ॥

भजन । निरखत नारि सकल मिथिलापुर ब्याह समय दम्पति छवि नयनन ॥ काम कोटि शोभा नांहिं पावत विधि लाजत लज्जित रति मैनन ॥ मोहन हास विलास भले गुन मन रुचि करत माधुरे वैनन ॥ करत न्योछावर युगल परस्पर सीकलेत भर भर सुख ऐनन११९

भजन । मैंने हरि पतित पावन सुने ॥ हौं पतित तुम पतित पावन दुहूं वानक बने ॥ व्याध गणिका गज अजा- मिल साख वेदन भने ॥ और अधम अनेक तारे जात

कापै गने ॥ जानि नाम अजान लीने नरक यमपुर मने ॥ दास तुलसी शरण आयो ताहि राखे बने ॥ १२० ॥

ध्रुवपद । चन्द जो चकोरकीसी चितवन चपल चारु चंचल चलाके नयन बाणसे चलाकरैं ॥ सतरंगसारी वेस कीमत किनारी लागी न्यारी अलवेली गति चित्तको छला करैं ॥ दीपकी शिखासी उपदूने दुति गोरे तन पट आभूपण तेरे अंगमें खिलाकरैं ॥ अंग अंग मेरो मन तोसों दरशायरह्यो कहो प्राणप्यारी हाथ ऐसेही मलाकरैं ॥ १२१ ॥

राग झंझोटी । पियको नचन सिखावत प्यारी ॥ यमुना निकट विकट वंसीवट शरद रैन उजियारी ॥ मान गुमान छडीलिये ठाढी डरपत कुंजविहारी ॥ राधे श्याम युगल छवि ऊपर रासरसिक वालिहारी ॥ १२२ ॥

रान गट । दोउ जन भींजत अटके वातन ॥ सघन कुंजके द्वारे ठाढे अम्बर लिपटे गातन ॥ श्यामा श्यामरूप रस भीने बूंद बचावत पातन ॥ हित हरिवंश परस्पर प्रीतम मिलवत रति रस घातन ॥ १२३ ॥

राग झँझोटी । लगन लगी जामें लाज कहाँरी ॥ यह दृग लागे नंदनँदनसों औरनसों फिर काज कहारी ॥ तज कुलकान मर्याद वडनकी प्रेमरंगमें फँसी ॥ मीराके प्रभु गिरिधर नागर कछु कहा और आज कहारी ॥ १२४ ॥

वारहमासा धुन होली । ऊधोजी कब ऐहैं मुरारी ॥ चैतमास कैसे जिय लागै विमल चंद्र उजियारी ॥ एक एक क्षण पल युग वीतै कहा तकसीर हमारी । वैठिरहे सुरत विसारी ॥ १ ॥ वैसाख विपतिसों दारुण सजनी सब कहियो जी सम्हारी । शीतल मंद सुगंध पवन वहै फूलरही फुलवारी । करै पपिहा नित रारी ॥ २ ॥ जेठहि योग बतावत हमका भूषण वसन उतारी ॥ अंग विभूति गले मृगसेली कानन कुंडल डारी । तपै पंचाग्नि सिवारी ॥ ३ ॥ आषाढमेघा चहूँदिशिधावै लिये दामिन तरवारी ॥ ऐसे कठोर दयानहिं लावैं ढूंढैं हमें असि नारी । अग्नि विरहा तनुजारी ॥ ४ ॥ सावन घर घर गडे हैं हिंडोला पहिरे कुसुम रंगसारी । कर सोरहों शृंगार उमंगसों झूलैं सबै व्रज नारी ॥ किये उर आनंद भारी ॥ ५ ॥ भादौं रैन भयावन सजनी सरस भई अँधियारी । दादुर मोर पपीहा बोलत कल ना पड़त अटारी । उठैं तनुसे चिनगारी ॥ ६ ॥ कुवांर मास कुबजाने चंदन जादू अस कर मारी ॥ रूपस्वरूप कहांलगि वरणौं कूँवरि की वलिहारी । ताहि लखि मोहे मुरारी॥७॥कातिकमास जबलागोसखीरी दीपक वरैंदिवारी-हमरी दिवारी लई कुबरी ने व्रजमें परी अँधियारी । मोहे वहां कुंजविहारी ॥ ८ ॥ अगहन मास श्याम घर नाहीं जो हम जनती अगारी । खूंट पकारि उनके संग जाती अब

पछितात पिछारी । भूलगई सब होसियारी ॥९॥ पूसमास पड़ी लोटों सेजपै मनहु मीन अधमारी।एकतौ जाडा जोर करतहै दूजे विरहकी मारी । तीजे हरि सुरत विसारी॥१०॥ माघमास उमंग उठे अंग अंग चकित भई सब नारी । ऋतु वसंतको अगम जनायो सूनी सेज हमारी।लगै जैसे नागिन कारी ॥ ११ ॥ फागुन फीको पिया विन लागै देहभई सव कारी।धन्य २ सूरज मुनि तुमका पाउँ परों वलिहारी। सुरति जनि छाँडो हमारी ॥ १२ ॥ १२५ ॥

होरी काफी । श्यामरा मोसे खेलत होरी ॥ अबीर गुलाल गोपालने मेरे मुखसे आन मलोरी । भर पिचकारी गिरिधारी मोरे मारे सारी हमारी रंगबोरी । देह मोरी भीजै गोरी गोरी ॥ १ ॥ गोरी गोरी वहियां मोरी नरम कलैयां श्यामने दौर मरोरी । शिरकी चुनरिया फाड कन्हैया, वहुत करी झकझोरी ॥ मोतिनकी लर मोरी तोरी ॥ २ ॥ सुंदरसेज विछाय श्यामरो गरवा लगावै वरजोरी ।चुम्बनकर मोरी कुच गहलीनी अँगिया मसक दई मोरी । कमर मेरी लचको गयोरी ॥ ३ ॥ व्रजमें कन्हाई धूम मचाई नेकना जियामें डरोरी । वुलवुल कहै यशोदासे कोई झटपट जाय कहोरी । ढीठ भयो नवलकिशोरी ॥ ४ ॥ १२६ ॥

होलीकाफी । राधिका आई खेलन होरी ॥ इतसे संग कृष्ण गोवनके वंसीवट पहुँचोरी । उतसे संग लिये

ब्रजबाला गई वृषभानु किशोरी ॥ मारगमें भेंट भयोरी ॥ १ ॥ घेर लियो इत उतसे श्यामको करनलगीं वरजोरी॥भर पिचकारी रंगकी मारत मुखसे अबीर मलोरी। श्याम नकवानी कियोरी ॥ २ ॥ एक एक गोपीके संग कृष्णने एक एक रूप धरोरी ॥ पकड पकड सब रंगमें भिजोई अति आनंद भयोरी॥ विप्र नारदने कह्योरी ॥ ३ ॥ १२७ ॥

होलीकाफी ! चल खेलिये होरी मोहन अवतार भयोरी ॥ जाको जीतसके नहिं कोई आपही खेल रचोरी । रूप न रेख वरन नहिं जाके सोई प्रगट भयोरी । मोहन जाको नाम धरोरी ॥ १ ॥ मत्सरूप धर वेद ले आयो शंखासुरको हतोरी । कच्छरूप सागर मथडारे रतन प्रकाश करोरी ॥ कमलाको आप बरोरी ॥ २ ॥ सूकरहो धरणी ले आयो नरसिंह रूप धरोरी । खम्भफाड प्रगटे नारायण असुरको मान हरोरी ॥ प्रहलादको राख लियोरी ॥ ३ ॥ परशुराम दूजे रामचंद्र भये रघुकुल वंश वडोरी । मैथिलराज प्रतिज्ञा राखी व्याही जनक किशोरी ॥ रावण मारो लंका तोडी ॥ ४ ॥ वामनह्वे ऐसो छल कीनो तीनोंलोक ठगोरी । बलिको बांध पताल पठायो द्वारेपै आप ठडोरी ॥ वचनसे आप बँधोरी ॥ ५॥ खेलत गेंदगिरी यमुनामें पाछेसे फांद पडोरी। बैठ पताल कालीनाग नाथ्यो फन फन निरत करोरी ॥ श्याम रंग तबसे भयोरी ॥ ६ ॥

तेरोही रंग तुही पिचकारी लाल गुलाल उडोरी । यह संसार रैनका सुपना सबजग नाच नचोरी ॥ सो खुशदिल होरही होरी ॥ ७ ॥ १२८ ॥

होरीकाफी । कुबजा संग प्रीति लगाई ॥ हमैं छोंडकर वृंदावनमें मथुरा जाय बसाई । जाय करी कुबजा पटरानी यह क्या रीति चलाई । सखिनकी सुधि विसराई ॥ १ ॥ श्यामसखी कुबजाने वशकिये माथे तिलक चढाई । नैनन सैन चला कुवरीने मोहलिये यदुराई । श्यामकी सुरत भुलाई ॥२॥ वृंदावनमें कहैं सखा सब श्याम बडे हरजाई । कंसरजाकी दासीसे प्रभु कैसी प्रीति लगाई ॥ सखिनकी सुधि विसराई॥३॥सब सखियोंपै वृंदावनमें तुमविन रहोन जाई । बुलबुल कहैं वेग दरशनदो नामकी रटन लगाई । दरशदो श्याम कन्हाई ॥ ४ ॥ १२९ ॥

राग जोगिया ।.आलीरी अब कैसे जिऊँगी ॥ मेरे पिया परदेश सिधारे यह दुख कैसे भरूँगी ॥ मनमें मेरे ऐसो आवै जहरका प्याला पिऊँगी ॥ कटारी खाय मरूंगी ॥ १ ॥ मैन मुझे नित आन सतावै, विरहा अगनमें जरूँगी ॥ सूनीसेज डरावन लागी, मैं वैठी तडफूंगी ॥ हाय मैं तो रो रो मरूंगी ॥ २ ॥ फागुनके दिन आये सखीरी का सँग होरी खेलूंगी । सब सखियां पियाके संग सोवत मैं किसके गले लगूंगी ॥ पिया पिया किससे कहूंगी ॥ ३ ॥

बुलबुल कहैं त्यागके वस्तर अंगविभूति मलूंगी । करमें ले तुलसीकी माला पियको नाम जपूंगी ॥ जोगनको वेष करूंगी ॥ ४ ॥ १२० ॥

होली राग कल्याण । मोहिं डगरमें रोकैरी अकेली जानकर ॥ घरसे निकस चली पनियां भरनकू गागर फोड़तरी ॥ १ ॥ वहियां पकड मोसे हँस हँस बोलत घूंघट खोलतरी ॥ २ ॥ वारवार मोहिं आन निहारत धोरई डोलतरी ॥ ३ ॥ चटक मटक कर गरवा लगावत सखी मेरी पत खोवतरी ॥ ४ ॥ सहज २ मेरी कुच गहलीनी हरवाभी तोडतरी ॥ ५ ॥ भर पिचकारी रंगकी मारत सारी रँग बोरतरी ॥ ६ ॥ बुलबुल कहे यासे कुछ न वसावत काहेकू रोवतरी ॥ ७ ॥ १२१ ॥

होलीकाफी । पनघटपर धूम मचाई ॥ एक समय मैं गई जल भरने, शीश गगरिया उठाई । गगरी फांस पनघटमें डारी घेरलई यदुराई ॥ आन गगरी चटकाई ॥ १ ॥ वाहियां पकड जकड कर मेरी सब चुरियां मुरकाई । गरवाको मेरो हरवा तोडो कुचको हाथ चलाई । पकड अँगिया मसकाई ॥ २ ॥ सुंदरसेज विछाय श्यामने वनमाला पहिनाई । वाराजोरी मनमोहनने बहियां पकड बैठाई ॥ जो हँसकर गले लगाई ॥ ३ ॥ नैनन सैन चलाय श्यामरेने आंखसे आंख मिलाई । कदमतरे घन-

श्याम पियाने वँसुरी जाय वजाई । त्रिभंगी छवि दिखलाई ॥४॥ मोरमुकुट कुंडलकी शोभा नैननवीच समाई ॥ वुलवुल कहैं श्याम छवि ऊपर वारवार वलिजाई । दरशदो श्याम कन्हाई ॥ ५ ॥ १३२ ॥

होली रागकाफी । श्यामरेने सँदेशा पठाओ ॥ कहा लिख दीनोहै पतियामें, सकल भेद जतलाओ । गुण अवगुण नंदलाल ललाके, ऊधो सब प्रगटाओ ॥ यह पाती वांच सुनाओ ॥ १ ॥ कहन लगो ऊधो सखियनसे पातीमें मनलाओ । भोगकी आशा त्याग सखीरी योगसे ध्यान लगाओ। हरीचरणन चितलाओ ॥ २ ॥ पतियां सुनत मोरी छतियां दुखतहै, श्यामके मन कहा आओ। गोपीनाथ नामको त्यागो कुवजाको दास कहाओ । श्यामने नाम लजाओ ॥ ३ ॥ निज निज सवशृंगार तजोरी अंगमें भस्म रमाओ । करनफूल तज काननमुद्रा, माथे तिलक चढाओ ॥ वैठकर हरिगुणगाओ ॥ ४ ॥ विभूति रमाय योगिनहो वैठी तन मृगछाल उढाओ ॥ वुलवुल कहैं माल करमेंले आठों याम फिराओ ॥ ज्ञान हृदय में जमाओ ॥ ५ ॥ १३३ ॥

होली रागपरज । आज ब्रजमें श्याम खेलैं होरी रे॥ एकन रंगले धाइ मोहन पर एकन कर पकडोरी ॥ एक अवीर लिये मुख मींजत एक लगावत रोरी ॥ झांजत

ताल मृदंग झांझ डफ नाचत सब मिल गोरी ॥ प्रेम रसिकसों फगुवा मांगत चिरंजीव यह जोरी ॥ आज० ॥१३४॥

होली रागझंझोटी । समझ होरी खेलिये रघुवीर ॥ कल धोखे से रंग डार गयोहै लषण वीर रणधीर ॥ १ ॥ सम० ॥ चटकीले रंग वोर दियोहै महारानीजीको चीर॥ सम० ॥२॥ उतसों आई जनकनंदनी लिये सखियनकी भीर ॥ बाजत ताल मृदंग झांझ डफ देखो उडत अवीर ॥ सम०॥ रामसखा यह टेर कहतहैं सुनिये चारों वीर ॥ अब भाजे प्रभु नाहिं बनैगी तट सरयू के तीर ॥ सम० ॥ १३५ ॥

होलीकाफी । श्यामरा दुख देगयो भारी मेरी प्यारी ॥ देखोरी सखी श्याम भयेहैं कुवजाके हितकारी । नजानै वाने जादू कीना मोहे कृष्ण मुरारी ॥ सौत ऐसी कामनकारी ॥१॥ क्या कोई जानै पीर पराई क्याजानै वैद अनारी ॥ ब्रजवासी से मुझे मिलादो जिन मेरे फांसी डारी। वही देखै मेरी नारी ॥ २ ॥ थोडे जल विन जैसे मछली तडप तडप रहजारी। सोगति भई हम सब गोपिनकी मोहेगिरिवर धारी ॥ करेजवामें लागि कटारी॥३॥ नये नये भूषण नये नये वस्तर नये नये जोवन वारी । नये नये श्याम नंदघर उपजे सखियोंकी प्रीति विसारी।करी कुवजा हितकारी॥४॥ श्याम विना अब कुछ नहिं भावै दुखित भई ब्रजनारी ॥ सूरदास कहै सब गोपिनके भयेहैं प्राण दुखारी ॥ दरशदो कृष्ण मुरारी ॥ १३६ ॥

रागहोली । श्याम वरजो यशोदा रानी ॥ मैंतो गईथी दधि बेचनकूं आयो श्याम सैलानीं ॥ अचरा पकड लियो कृष्ण कुँवरेन हँस २ गले लगानी ।घूँघट खोलो महारानी ॥ १ ॥ दधिकी मटकी पटक दई मोरि सिगरी चुनरियां सानी।डगर चलत रोकत टोकतहै कीनी बहुत खिसानी । बात मोरी एक न मानी ॥ २ ॥ वरजो यशोदा अपने कान्हको नाहक रारि वढ़ानी॥ खबरकरूंगी कंस रजापै भूल जाउ ठकुरानी । बहुत पडिहैं हैरानी ॥ ३ ॥ तु ग्वालनहै वडी सयानी कहा तेरी मतवौरानी । दधिकी मटकियां पटक दई शिरसे श्यामको दोष लगानी । श्यामसे लडाई ठानी ॥ ४ ॥ व्रजकी विथा कहां लगि भाखूं को कवि करै बखानी । बुलवुल कहैं बात सुन ग्वालन मनमें बहुत लजानी । चली घरको खिसियानी ॥ ५ ॥ १२७ ॥

राग होली । श्यामरो तेरो करतहै चोरी ॥ ग्वाल बाल सब सखा संग लिये मंदिर आन घसोरी ॥ सखा संगके ढूँडन लागे, दधि कहिं नाहिं मिलोरी॥ छींका वाकी नजर पड़ोरी । सखाकी कनियां सखा चढायो तापर आप चढोरी॥ दधिको माट उतार लियोहै धरनीमें लाय धरोरी॥ सभीमिल मतो कियोरी ॥ तनक तनक गोपाल लालने सबको दही दियोरी । दहीखाय आनंद भये सब कृष्णने सबसे कह्योरी ॥ निकसकर भाग चलोरी ॥ सखासंगके

भाज गये सब कृष्णको झट पकडोरी। छल बल करके श्यामसुंदरने झटपट कर झटकोरी। कपटकर सटक गयोरी॥ कहन लगीं ग्वालन यशुमतिसे तेरो कुँवर कैसोरी। तेरे सुतको लाई पकडकर यशुमति सुत देखोरी॥ कुँवर अपनो बरजोरी॥ यशुमति कहनलगी ग्वालनसे कहा तोरी मत बौरी॥ किसको लाल पकडकर लाई कुँवर भवन बैठोरी। नजर भरकर देखोरी॥ सुंदर रूप स्वरूप विराजैं कृष्णके नयन चकोरी॥ बुलबुल कहैं श्याम दरशनकूं यह होरी रंग बोरी॥ प्रेममें उरझीं गोरी॥ कान्ह तेरो करतहै चोरी॥ १२८॥

राग भैरवी होली। मोपै रंग क्यों डारत बार बार। ऐसी तुम्हीं अनोखी चतुर नार॥ हमतौ आये तुम्हरे दरशको तुमने पकड़ करी मारधार॥ मोरी सुध बुध बिसरगई निहार॥ अबीर गुलाल न मारो मुखपै यही कहूं मैं बारबार॥ ना जानै होरी खेलनकी सार॥ समझ समझ कर खेलो फाग प्यारी तुम जीती हम मानी हार। मेरे नैनोंसे बहै आँसूकी धार॥ बुलबुल कहैं समझ कुछ प्यारी काहेको कीनी हमसों रार। अब कभी न आऊँ मैंतो तोरे द्वार॥ १२९॥

होली काफी। श्याम चटक मटक कर अटकै॥ बहियाँ पकड मेरी लटकन लागो दधिकी मटकिया पटकै॥

यमुना किनारे घेरी ग्वालन नटखट झपट झपट मोसों लटकै। पोरा मेरा चट चट चटकै॥ कोमलगात शरीर छुवतहै मोसों कहत चल हटकै॥ सैन चलावत गले लगावत नैन मिलावत मटकै। मुकुट वारो सटसट सटकै॥ डगर चलत घूंघटपट खोलत हँस हँस बोलत लपटै॥ कुचं पकड़त मेरो जियरा धडकत है उरमें श्याम मोरे खटकै॥ बहियां मोरी झटझट झटकै॥ श्याम छोड कुंजनमें सटकै गयो देखनको मन भटकै। बुलबुल कहैं सुरत सब भूली देखो रूप जब डटकै॥ गयो मोसे हट हट हटकै॥१४०॥

रागनी होली। फागुनमें घनश्याम मचोरी॥ टेक॥ ब्रजकी नार सिंगार किये अति हिल मिल सकल चलोरी॥ अबीर गुलालके थाल लिये कोई कोई लिये कर रोरी॥ कोई लिये केसर घोरी॥ १॥ हिल मिल कर सब सखियां धाईं और संग राधा गोरी। फाग परस्पर खेलन लागीं गिरिधर कर पकडोरी॥ प्रेम आनंद बढोरी॥ २॥ घेर लियो सब कृष्ण कुंवरको मुखसों अबीर मलोरी। सब मिल गुलचे मारो कृष्णके रोवत नंद किशोरी॥ श्याम आज भलो बनोरी॥३॥ रोवत क्यों मन मार मारके सुनहु बात अब मोरी। नंद बबाजू कहां गयेहैं कहां गई मय्या तोरी। तुम्हें लेती क्यों न छोरी॥४॥ फाग खेलकै मगनहो बैठी कृष्ण को रंग रँगोरी। बुलबुल कहैं फागदो मोहन तुम से सांच कहोरी॥ खेले बिन जाउँ न होरी॥ ५॥१४१॥

होली काफी । श्यामको सब ढूंढत हारी ॥ ढूंढफिरी कुंजन कुंजनमें नहीं मिलत गिरिधारी । हाय हमैं क्यों तज दीनाहै क्यां हमरी खोट बिचारी ॥ जो दुःख मुझे दीनो भारी ॥ १ ॥ सकल फिरत ग्वालन बौराईं हाहा करतहैं सारी । रेत बीच रेखा चमकतहै सबमिलि जाय निहारी ॥ आगे मिलहैं बनवारी ॥२॥ आगे जाय महा बन ढूँडो वाट मिली अँधियारी । राहदेख सबही घबरानी कह कह कृष्ण पुकारी ॥ प्राणसों भईं दुखारी ॥ ३ ॥ तजतीहैं प्राण सभी गोपी दो दरशन वेग मुरारी । बुलबुल कहैं तुमबिन सब गोपी मरती हैं विष खारी ॥ सुरत ना लई हमारी ॥ ४ ॥ १४२ ॥

होली खम्माच । फागुनमें श्याम रंग डार गयोहै ॥ रंगकी भरी पिचकारी मारी गगरी उतार गयोहै ॥ अबीर गुलालकी भर भर मुठियां आँखन डार गयोहै ॥ चंपकली सतलडी मोरी तोडी हरवा बिगार गयोहै ॥ अंगिया मसक गई चुरियां करक गई गुलचे मार गयोहै ॥ चुनर मोरी फार गयोहै ॥ श्याम आन मोरे ढिग बैठो चुम्बन कार गयोहै ॥ मैना बोली मनहींमें रोली मोहिं निहार गयोहै ॥ नामले पुकार गयोहै ॥ ढूँढ फिरी बृन्दाबन माहीं कितको बिसार गयोहै ॥ बुलबुल कहैं ढूँढतही ढूँढत कित को सिधार गयोहै । जानै यमुनापार गयोहै ॥ १४३ ॥

भजन । कुबजा के संग प्रीति लगाई हमको बिसार गयोहै ॥ नंदगांव त्यागो श्यामसुंदरने मधुपुरी द्वार गयोहै ॥ हमको छोड गये कृष्ण कुँवरबर गलबिच फांसी डार गयोहै ॥ बुलबुल कहै ब्रजकी सखियनकी ऐसी क्या खोट विचार गयोहै ॥ १४४ ॥

होली रागिनी भैरवी । मोहिं रंगकी भरी पिचकारी मार कहीं जाय छिपो नँदको कुमार । रंग मोपै छिडक अवीर उडायो आंखन मेरी गुलाल डार । अबहीं कहीं भाज गयो बिसार । आन अचानक मोको पकडत गर लिपटावत बार बार । गई अँगिया मसक टूटो गलको हार ॥ हाथोंकी मेरे चुरियां मुरकगई नईरे चुनरिया दीनी फार ॥ अबहीं पाऊं पकड श्यामको गाल छरूं मुँह मार मार ॥ प्रेमसखी कहै माता यशोदा हमैं नीको न लागै यह दुलार ॥१४५॥

होली भैरवी । ब्रजमें चलो फाग खेलोरी ॥ सब सखियां मिल साज सजावें ताल मृदंग झांझ जोडी ॥ कोई अवीर गुलाल उडावै कोई उडावतहै रोरी ॥ कृष्णलाल तौ वेन बजावे नाचैगी राधा गोरी ॥ ब्रजमें मोहन फाग रचायो दो नयना भर देखोरी ॥ बुलबुल कहै श्यामछवि देखत प्रेमानंद बढोरी ॥ १४६ ॥

भजन । कहत कृष्ण गोपाल गेंद मेरी तैंने चुराई ॥ खेलत खेलत गेंद कहीं कुंजन बिसराई ॥ माराटोल गिरी

जाय गेंद यमुना जल माहीं ॥ सखी कहैं घनश्याम हमें क्यों चोरी लगाई ॥ कहत चलीं सब नारि कहीं तोरि मत बौराई ॥ बोलत डोलत दौरगये तब कुँवर कन्हाई ॥ बाहियां पकड लीजाय ग्वालनी बहुत लजाई ॥ अँगियाको हाथ चलाय छीनली श्रीयदुराई ॥ ललतासों कह्यो मुसकाय गेंद अँगियामें छिपाई ॥ करी अरी सखी आज तैंने अतिही चतुराई॥बुलबुल कहै सुंदरता तेरीपै बलि बलि जाई॥१४७॥

होली रागनी बारवा । चलो सब देखन कोरी राचो रास गोबिंद ॥ बंसीबट तट बाजी बैन सभी शृंगार करोरी ॥ निज निज शीश गुहाय मांग सिंदूर भरोरी ॥ करनफूल भर कान तिलक दियो केसर उत्तमकोरी ॥ पहुँची बाजूबंद अरु कंगन हाथनमें पहिरोरी ॥ चंपकली सतलडी हार गल झतिधन कोरी ॥ झूमर बेंदी बैना चंदा शीश धरोरी ॥ चल यमुनाके तीर धीर मनमें राखोरी॥ बुलबुल कहै संग श्याम चलो हिलमिल खेलोरी ॥ १४८ ॥

होली राग बारवा । मेरे मंदिरके माहिं मारगयो को पिचकारी ॥ रंगमें मैं बोरी आज भीजगई चूनर सारी ॥ रोवन लागी नारि सास देगी मोकूं गारी ॥ इधर उधर कूं जाय ढूंढने लागी नारी ॥ जोकोई आवत नाह तो अब मैं दूंगी गारी ॥ बुलबुल कहै मुसकाय ग्वालनी देख निहारी १४९

होली राग बारवा। अबीर गुलाल उडाय गयो मोपै गिरिधारी॥ केसररंग बनायके भरमारी पिचकारी॥ आज कृष्ण रंगडार भिजो गयो सारी हमारी॥ सास ननदिया खूब करैंगी घरमें खुवारी॥ पिया हमारो सुनै जायगी लाज हमारी॥ सुन सुन वचन रिसाय गईं सब व्रजकी नारी॥ कहा गति करगयो आज साँवरो कृष्ण मुरारी॥ अब कहीं पावें श्याम बतावेंगी हम नारी॥ बुलबुल कहै बरजतना याय यशुदा महतारी॥ १९०॥

तथा। पकड लियोहै श्यामको यशुमति पास चलोरी॥ कहत ग्वालनी सुनोरी ग्वालन निज निज बात कहोरी॥ चलत ग्वालनी मति बौराई श्यामतो भाज गयोरी॥ माया अधिक जब हरि प्रगटाई सखाको हाथ गहोरी॥ बुलबुल कहै यशोदा द्वारे सब पुकार करोरी॥ १९१॥

तथा। बरजो यशोदा लाडलो अपनो गिरिधारीरे॥ सूने मंदिरमें जाकर मोरे मटकी फोडी हमारीरे॥ ग्वाल बाल सब माखन खायो कृष्ण मटकी उतारीरे॥ तेरे का-न्हको लाई दिखावन सुनय शुमति महतारीरे॥ यशुमति सुनत बहुत रिसमानी कहा तू कह हत्यारीरे॥ दोषदेत तू मेरे लालको घरबैठो बनवारीरे॥ देख ग्वालनी यशुमति सुतको मरी लाजकी मारीरे॥ बुलबुल कहै ग्वालनी रोवत निज घरको सिधारीरे॥ १९२॥

तथा ॥ शीश मटकिया लिये सखी दधि बेचन धाईरे ॥ चन्द्रावल ललतासी प्यारी और संग राधा आईरे ॥ एक सखी कहै सुनो सखी आये यदुराईरे ॥ देख श्यामको ब्रजकी नारी मनमें मुसकाईरे ॥ कहत कृष्ण दानदे ग्वालन कहा मटकीमें लाईरे ॥ दान नहीं कबहूं हम दीनो ब्रजबनन माहिंरे । बुलबुल कहे दधिपै तुमने कहा रीति चलाईरे ॥ १५३ ॥

तथा । डगर चलत मैं तौ जातही मोहिं गारी दीनीरी । जितको जात मेरे पीछेई आवत यह दय्या कैसी भईरी ॥ चटक मटक अँखियाँ मटकावे गरवा लगाय लईरी। बार बार उरसों लिपटावे तब मैंने कछु न कहीरी गुलबुल कैह झकझोरी करके फाडी चुनरिया नईरी ॥ १५४ ॥

होली रागनी काफी। पनियां भरनको आई मुझे जाने दे लाला ॥ गगरी शीश धरघर से आई ॥ काहेको झगडा डाला ॥ १ ॥ काहेको मोरी बहियां मरोरी काहेको तोडी माला ॥ जाओ जाओ छेडोमत फाडा सुरख दुशाला ॥ बुलबुल तोरे पय्यां पडतहैं छोडो कृष्णगोपाला ॥ १५५ ॥

होली राग काफी । श्यामरो बडो सुंदर माई ॥ क्रीट मुकुट शिर अधिक विराजत माथे तिलक चढ़ाई ॥ घूंघरवारे बाल कृष्णके माथे लट लटकाई ॥ मानो सर्पाकार बनाई ॥ १ ॥ कान कुंडल अतिही छवि छाजै, मुक्तमाल

गल माई ॥ हृदय झँगुलिया अधिक विराजै, कछनी कुँवर सजाई ॥ पीतमपर अति छविछाई ॥ २ ॥ नयन चकोरी दोऊ श्यामके अधरन लाली छाई ॥ ३ ॥ श्यामरी सूरत माधुरी मूरत श्याम आज दिखलाई ॥ सो मेरे जियामें समाई ॥ अधरनके ऊपर गिरिधरने वँसुरी आज बिठाई ॥ वँसुरी बजावत सुख उपजावत मीठी तान सुनाई ॥ आप रह्यो हर्षाई ॥ ४ ॥ झब्बीलालने गोपालजी तेरे नामकी रटन लगाई ॥ बुलबुल कहै तेरो गुणगाऊं चरणकमल चितलाई ॥ कृपा करियो यदुराई ॥ ५ ॥ १५६ ॥

राग होली । सोवत आन जगाई पियरवा ने छवि दिखलाई ॥ सोवतही मैं लाल पलंगपर आ छातियां चिपटाई ॥ मुख चूमो बाराजोरी मोसे कीनी आय मरोरी कलाई ॥ पियरवाने गले लगाई ॥ आय कृष्ण मोरी अँगिया मसक दई, सब चुरियां मसकाई । सैन चलावत नैन मिलावत कीनी बहुत ढिठाई ॥ गयो अँगियां मसकाई ॥ गोरावदन छुवत क्यों मेरो काहे करो इठलाई, गारी दूंगी पुकार करूंगी कैसी धूम मचाई ॥ छोडदे कुँवर कन्हाई ॥ झब्बीलाल हकीरके मनमें अब यह बात समाई ॥ बुलबुल कहै छोडदे सय्यां नींदरिया झुक आई ॥ करूं विनती मनलाई ॥ १५७ ॥

होली काफी। सारी रैन विताई पिया विन नींद न आई ॥ हर्ष हर्ष कर महलके अंदर सुन्दर सेज विछाई ॥ वैठ पियाकी वाट निहारत नाहकमें तरसाई ॥ देख सूनी-सेज डराई ॥ १ ॥ वैठरही मनमार हारकर कैसे करी जुदाई। जैसे जलविन मीन तडफरही सो गति आज वनाई ॥ सुरत तनुकी विसराई ॥ २ ॥ सारी रैन चैन नहिं पायो यह मनमें ठहराई ॥ लियो कटार उतार हाथमें जहर बुझी अनखाई ॥ कटारी जिगर लगाई ॥ ३ ॥ झब्बीलाल हकीर पियाकी छवि नयनन बीच समाई। बुल-बुल कहै यादगारीमें सारीरैन गमाई ॥ पिया कह कह पछिताई ॥ ४ ॥ १६८ ॥

होली काफी। फागुन फाग रचायो पिया अबतक नाहिं आयो ॥ सब सखियां मिल फाग मचामें केसर रंग वनवायो ॥ सकल नारि निज पियके ऊपर अविर गुलाल उडायो। अधिक आनंद बढायो ॥ १ ॥ मेरे मंदिरके माँह सखीरी पियाविना अँधेरो छायो ॥ नयननकी पिचकारी वनाई। अँसुवन रंग ढरकायो। पिया सोतन विरमायो ॥ २॥ पियाविन मोहिंको कछुना सुहा-वत ज़ोवन खाक मिलायो। त्याग दिये शृंगार आभरण वस्त्रन अगन जलायो ॥ पिया नयननमें समायो ॥ ३ ॥ झब्बीलाल पिया घर-आये प्यारीने दरशन पायो। बुलबुल

कहैं पियाके ऊपर सोना रूपा लुटायो ॥ पिया गलसौं लिप टायो ॥ ४ ॥ १८९ ॥

भजन । दान दीजै पियारी सुनो तुम ब्रजकी नारी॥दधि-बेचन वृंदावन आई शिरपै मटकिया धारी ॥ १ ॥ यमुना निकट पर दान लगतहै सुन वृषभानु दुलारी ॥ दानदिये जय्यो सारी ॥ कहन लगी सारी ब्रजबाला कैसी रीतिनि-कारी ॥ कैसो दान कान्ह तुम माँगत क्या दिलबीच विचारी ॥ हम बरसानेकी नारी ॥ जो तुम वरसानेकी नारी सूझत मोहिं गँवारी ॥ अबहीं चुकाऊँ दान दहीको छीन मटकिया भारी ॥ लगाऊँ गरसों न्यारी ॥ हँसबोली वृषभानु लाडली लेहु दही वनवारी ॥ मनमोहनारे नंदको छोना विनती कर कर हारी॥मानलो श्याम विहारी॥१६०॥

भजन राग झंझोटी । भजु मन रामचरण दिनराती ॥ रसना क्यों न जपत कोमलपद नामलेत अलसाती ॥ जाके जपे कटंत दारुण दुख तीनों ताप सिराती ॥ कहत पुराण सुयश रघुवरको सुनि जुडाति अति छाती॥ श्रोता सुबुधि सुशील सो हरिजन करत सलाह सुहाती ॥ रामचंद्र को नाम अमीरस सोरस काहे न खाती ॥ सम्वत सोलहसे इकतीसा जेठमास छठि स्वाती ॥ तुलसिदास यह विनय लिखत हैं प्रथम अरजकी पाती ॥ १६१ ॥

भजन । मन माधवको नेक निहारहि ॥ सुन शठ सदा रङ्कके धन ज्यों छिन छिन प्रभुहि सँभारहि ॥ शोभा शील ज्ञान गुण मंदिर सुन्दर परम उदारहि॥ रंजन सन्त अखिल अघ गंजन भंजन विषय विकारहि ॥ जो विन योग ज्ञान व्रत संयम गयो चहो भव पारहि॥तौ जन तुलसिदास निशि वासर हरिपदकमल बिसारहि ॥ १६२ ॥

भजन । रसना राम कहौ मन लाई ॥ राम विना कोइ काम न ऐहै सुत परिवार बड़ाई ॥ अंत समय यह तोहिं तजैंगे फिर पीछे पछि ताई ॥ निज मुख राम चरित जिन गायो भक्तिकल्पतरु पाई ॥ दुर्लभदेह फेर नहिं पैहौ छाँडु कपट चतुराई ॥ जब यमराज करैंगे लेखा सब कलई खुलजाई ॥ आतम ज्ञान योग अरु साधन यह जगमें कठिनाई ॥ देवीसहाय विमल गुण गावो कृपाकरैं रघुराई ॥ १६३ ॥

भजन ॥ मन पछतैहो अवसर बीते ॥ दुर्लभ देह पाय हरिपद भज वचन कर्म अरु हीते ॥ सहसवाहु दशबदन आदि नृप बचे न काल बलीते ॥ हम हम करि धन धाम सँवारे अन्त चले उठ रीते ॥ सुत बनितादि जान स्वारथरत न कर नेह सबहीते ॥ अन्तहि तोहिं तजैंगे पामर तू न तजै अबहींते ॥ अब नाथहि अनुराग जाग जड त्याग दुराशा जीते ॥ बुझै न काम अग्नि तुलसीकहुं विषय भोग बहु घीते ॥ १६४ ॥

भजन । रेमन कृष्ण नाम कह लीजे ॥ गुरु के वचन अटलकर मानहु साधु समागम कीजै ॥ पढिये गुणिये भक्ति भागवत और कहा कथ कीजै ॥ कृष्ण नामविन जन्म वादही वृथा जियत कह कीजै ॥ कृष्णनाम रस बह्यो जातहै तृपावन्त ह्वै पीजै ॥ सूरदास हरि शरण ताकिये जन्म सफल करिलीजै ॥ १६५ ॥

भजन । काया हरिके काम न आई ॥ भाव भक्ति जहां हरि यश सुनियत तहां जात अलसाई ॥ लोभातुरह्वै काम मनोरथ तहां सुनत उठि धाई ॥ जबलगि श्यामअंग नहिं परसत तबहीं लों भर माई ॥ सूरदास भगवन्त भजन विन विषय परमविष खाई ॥ १६६ ॥

गजल । हकीकत ब्रजकी ऊधो जरा तुम जाके समझाना । लगाके खत को छातीसे वह बोलीं गोपियां रोरो लिखाहै श्यामने ऊधो ये अपने हाथ परवाना ॥ जुदा होहो निकल जातीहै तनसे रूह गोकुलको नखुश आता बिरज हमको न वृंदावन न बरसाना ॥ खता क्या देखीहै प्यारे जुदा जो हमसे होवैठे । यही वस देखली उल्फत यहींहै शर्त याराना ॥ यहींहै अर्ज शाहे द्वारकासे आप ऐ अखतर । न रखना अपने चरणोंसे मुझे महरूम वेगाना ॥ १६७ ॥

भजन राग काफी । नन्दनँदन ब्रजचंद हरो तनु पीर हमारीरे ॥ ब्रजपर इन्द्र कोपकियो भारी महा प्रलयके मेघ सँभारी जाय वहाओ नंदगांव जहां वसत मुरारीरे ॥ शुंडाकार गिरत जल धारा झझि परत कछु वार न पारा मारुत चलत झकोरनसों डरपत नर नारीरे ॥ तब गोवर धन नखपर धारो जाके तर ब्रज सकल उबारो येही विधिसों करत नाथ जनकी रखवारीरे ॥ १६८ ॥

रागनी आसावरी । वसहु इन नयनन नन्दकिशोर ॥ कृष्ण विष्णु वामन मनमोहन लाजत मदन करोर ॥ मधुसूदन माधव नँदनंदन बिहरत ब्रजगिरि खोर ॥ गोवर धन प्रभु गिरिवरधारी ब्रजवनितन चितचोर ॥ १६९ ॥

वासुदेव राधावर नरहरि जय जय युगल किशोर ॥ जगन्नाथ गोपाल मुरारी मनरंजन रणछोर ॥ बेणीमाधव गयागदाधर मेटन अव वरजोर ॥ नाथद्वारका नरनारायण वन्दत मुनि करजोर ॥ सिंहज्झार चरणयुग वन्दत करहु कृपाकी कोर ॥ १७० ॥

ठुमरी सिंधकाफी । सांवरियाने कैसी बांकी तान सुनाई ॥ मोहिं घर अंगना न सुहाई ॥ शीशमुकुट श्रवणन कलकुंडल माथे तिलक मनोहरताई ॥ भ्रुकुटी मटक चटकचख चञ्चल अलक झलक छबिछाई ॥ उर वनमाल विशाल मनोहर कटिकिंकिणि आभा अधिकाई ॥

पीतबसन फहरात गातपर शोभा वरणि न जाई ॥ अंग त्रिभंग संग व्रजवनिता वंशीवट तट रस बरसाई ॥ शंकरके प्रभु सुधर अधर धरि मुरली मधुर वजाई ॥१७१॥

भजन । राखो पति गिरिवर गिरिधारी ॥ अवतौ नाथ रह्यो कछु नाहीं उधरत माथ अनाथ पुकारी ॥ विनय करों मैं राधावरसों शरण २ प्रभु शरण तिहारी ॥ रथविहीन पांडवसुत डोलत भीमगदा करते महि डारी ॥ रही न पैज प्रबल पारथकी जबते धरणि धरम सुत हारी ॥ भूप समाज वीर सब बैठे भीषम करण द्रोण व्रतधारी ॥ कहि न सकत कोउ बात परस्पर इन पतितन मोरी अपति बिचारी ॥ लाज गमाय दास दासिनसों फिर करिहो कहा आय मुरारी ॥ सूरदास प्रभु अधम उधारन पछितैहो मोहिं देख उघारी ॥ १७२ ॥

ठुमरी झँझोटी। कन्हैय्या व्रजके वसैयारे ॥ गैयां हमारी दुहिल्याव ॥ निशि अँधियारी कारी विजुरी चमके बाहर परत न पांव ॥ हम तुम एकहि गांव बसतहैं कबहूं तो कामे आव ॥ श्रीव्रजराज जानतहो हियकी तुमसन कहा दुराव ॥ १७३ ॥

तथा । गईं मैं पनघट आज गई ॥ श्याम वरन जानें काको ढोटा गगरी पटक दई ॥ सब सखियनके बीच गैलमें बहियां पकर लई ॥ हरि विलास अवको व्रजवासिहै यह अनरीत भई ॥ १७४ ॥

तथा ॥ आज वंसीवाजी यमुना तीर ॥ अब कैसी करों जिया धरै न धीर ॥ जब वंसीवाजी मोहनकी सुध न रही आली तन मनकी भई बेहाल तन उघरो चीर ॥ सुर नर मुनि जाको पार न पावें ब्रह्मा शिव नित ध्यान लगावें कोऊ कहै कान्हा ब्रजको अहीर ॥ जल थल जीव जहांलग जोहैं सुन वंसी त्रिभुवनपति मोहैं वहि न सकत यमुनाको नीर ॥ १७५ ॥

रागनी ईमन कल्याण। मन मनमोहनसों कर प्रीत ॥ यह मोहन जगके मनमोहन हरन सकल भवभीत ॥ मन तू समझ मनहिं मन मनमें जनके यदुपति मीत ॥ सिंहझुझार भजो मनमाधव करि मन प्रेम प्रतीत ॥ १७६ ॥

तथा। भज मन श्रीराधा गोपाल ॥ गोल कपोल अधर बिंबाफल लोचन परम बिशाल ॥ शुकनाशा भौं दूज चंद्र सम अति सुन्दरहै भाल ॥ मुकुट चंद्रिका शीश लसतहैं घूंघरवारे बाल ॥ रतनजटित कुंडल करकंकन गलमुतियनकी माल ॥ पग नूपुर मणि खचित वजत जब चलत हंसगति चाल ॥ गौर श्याम तनु वसन अमोलक कर महँदीसों लाल ॥ मृदु मुसक्यान मनोहर चितवन बोलन अधिक रसाल ॥ कुंजभवनमें बैठ दोऊ जन गावत अदभुत ख्याल ॥ नारायण या छविको निरखत पुनि पुनि होत निहाल ॥ १७७ ॥

तथा । भजो मन राधे कृष्ण हरी ॥ राधे के शिर सोहै चंद्रिका मोहन मुकुटधरी ॥ कृष्णके गर वैजन्तीमाला राधाजीको सोहै दुलरी ॥ कृष्णको सोहत पटपीतांबर राधे शिरचुनरी ॥ देखत युगल रूपकी शोभा नारद सुधि बिसरी ॥ १७८ ॥

तथा । आली मनमोहन मोहि लई ॥ यंत्र मंत्र जादू पढ टोना नयनन सैन दई ॥ नहीं चैन दिन रैन मैन वश सुधि बुधि विसरगई ॥ राय वहादुर वेग मिलहु हरि सीखी कहा नई ॥ १७९ ॥

तथा ॥ व्याहन आये दशरथलाल ॥ माथे मोर पीतअम्बरतनु राजताहिय वनमाल ॥ सुन्दर तरल तुरंग नचावत भावत नीकी चाल ॥ श्रीरघुराज निछावर याकी त्रिभुवन छबि तिहुँकाल ॥ १८० ॥

बारहमासा झब्बीलालका ।

छोडगये हरि वारी उमरमें मनकी रही ऊधो मनमेंरे ॥ चैत खिले वन वृक्ष लता अति आवत सुगंधि सब फूलन मेरे ॥ शीतल मंद सुगन्ध पवन नित चलत रहत वृंदावनमेंरे ॥छो०॥ हम बेसाख भई वैशाखमें लहर उठत सखी जोवनमेंरे ॥ मोर मुकुट मनमोहनकी छबि वसी रहत इन नैनन मेरे ॥ छो० ॥ जेठमें ज्वाल तपत नभ धरणी विरह अगन लागी तनमेंरे ॥ विन घनश्याम बुझत

नहिं हमसें लाख बुझावत अंसुवन मेंरे ॥ छो० ॥ आषाढ़में सखी बँगले छवातीं खसखस हरेहरे पानन सेरे ॥ सुन्दरसेज सकल सुख हरि बिन मानो रहत हम कानन मेंरे ॥ छो०॥ गाड़ हिंडोला ब्रजबालन संग झूलतहैं हरि सामन मेंरे ॥ अबके न आये पिया किन बिरमाये देरभई कहा आवन मेंरे ॥ छो० ॥ भादों गरजै निज पियके संग दामिनी दमक रहीं घनमेंरे ॥ हम तरसैं हरि कुबजाके संग बैठरहे माधो बनमेंरे ॥ छो० ॥ क्वाँरमें निर्मल चंद्र चांदनी छिटकरही मोरे आँगनमें रे ॥ का संग खेलूँ मैं रास श्याम बिन वृन्दा-वनकी कुंजनमें रे ॥ छो०॥ कातिक आया सजे सब मंदिर अंगन लिपाय सखी चंदनसे रे ॥ भईहै न हरि बिन दीपमालिका ब्रजमें और ब्रजबालनमें रे॥छो०॥यमुनाजलस्नान करतही ब्रजबनिता सब अगहनमें रे ॥ इकदिन चीर हरे मनमोहन आयगये कितसे छिनमेंरे ॥ छो० ॥ पूषमें रूप गये हरि जबसे फिर नहिं आये ब्रजबनितन में रे ॥ आप न आये अपने बदलेमें पठयो ऊधोको योग वियोगनमें रे ॥ छो०॥ माघ वसंत धरैं सबके शिर अतर लगावें सब वस्त्रनमेंरे ॥ हमरो वसन्त हरो कुबजाने मोहिलिये हरिसैनन में रे ॥ छो० ॥ फगुआ फीको रंग लाल बिन उडत गुलाल न ग्वालनमेंरे ॥ रोय रोय नयन भये पिचकारी होरी भई ऐसी फागनमेंरे ॥ छो०॥ बारहमास व्यतीत भये मन लाग

रह्यो हरि दरशनमें रे॥प्रेमसखीको यही वर दीजो राखिले-हुमोहिं चरणनमें रे ॥ छोड़गयो हरि वारी उमर में मनकी रही ऊधो मनमें रे ॥ १८१ ॥

प्रार्थना। भ्रातृ गण यह उपदेश हमारा॥ रघुवर चरण श-रण हो उतरो भवसागरके पारा।निर्गुण सगुण रूप दोउ वाके यह सिद्धान्त हमारा।। २ ।। छाँड़हु सकल कुतर्क आर्य्य गण जो होवै निस्तारा॥३॥ भक्तनहित दयालु नारायण भये मनुज अवतारा ॥ जाहि वेद कहैं शुद्ध ब्रह्म वही दशरथ राजकुमारा ॥ सर्व जगतव्यापी सर्वांतर यामी सर्वाधारा ॥ गुण अनेक वह एक रूपहै निराकार साकारा ॥ ऋषी मुनी सुर महिसुर सब मिल निजमत कीन विचारा॥ अन्त यही सिद्धान्त किया हरि माया अपरम्पारा ॥ सत्य नाम एक श्रीरघुवर का मिथ्या सब संसारा ॥ दीनदयालु धन्य नर जिन हिय रामनाम उजियारा ॥ १८२ ॥

भजन होली। मनमोहन रिझवारसी तोरे नैनसलोने ॥ तैं अलवेलीआन गांवकी अवहीं आई गोने ॥तोरे०॥आसौं की होरी तेरे नगरमें केतिक कौतुक होने ॥ रसिया ठाढो आठ पहरको तेरे घरके कोने॥ दयासखी या व्रजमें वस के मान निभायो कौन तोरे०॥ १८३ ॥

भजन ॥ हमतो शरण तिहारी रघुपति दीननके हित-कारी ॥ अजामील और गीध व्याधि सब गणिकासी तुम

तारी ॥ नरसीजीके काज सम्हारे गजकी विपतिनिवारी । द्रुपदसुताको चीर उबारो हिरनाकुशको उदर बिदारो भक्तनको प्रभु काज सम्हारो ऐसे हरि बनवारी ॥ कच्छ मच्छ बाराह रूप धरि दुष्टनको संहारी ॥ नारद ध्यान धरत निशिबासर सुधिलो वेग हमारी ॥ १८४ ॥

रागनी शाहाना । ब्रजनिधि तुमसे लगन लगीहै ॥ प्रेम प्रीति उर माहिं पगीहै ॥ हमरो ध्यान लगो तुमहींसों बिछुरत नहिं पल एक घरीहै ॥ सब तज चरणशरणले नारद रामनामकी टेक बडीहै ॥ १८५ ॥

भजन । करो उस नामका सुमिरण जो सबके घटमेंहैं प्यारे ॥ न जाओ गंगा और यमुना न सरयू और अयोध्या को सभी तीरथ इसी घटमें उन्हींसे ध्यान तू लारे ॥ हुये पैदा जो खोटेजन करैं नहिं नामका सुमरन लगे जब ज्ञान का सुमरण खुलैं तब आंखके तारे॥कहै नारद करो सुमरण तुम्हें हरि देवेंगे दरशन यह दुनियाहै महासागर हजारों पैरकर हारे ॥ १८६ ॥

भजन । नहींहै काम इस जगसे हमें उस देश जानाहै ॥ कोई कहता यह गाफिलहै कोई कहताहै दीवाना सफरके ताईं दुनियासे किया हमने पयानाहै ॥ रँगे कपडे बने योगी बहाने मांग खानेके हमारा रँग रहाहै दिल हमैं फिर क्या

रँगानाहै ॥ कहै नारद नहो गाफिल सभीको ह्वांहीं जानाहै ॥ गरूरी छोडदे दिलसे यह सब खोटा जमानाहै ॥ १८७॥

भजन । भज मन रामचरण सुखसार ॥ जो चाहत कल्याण आपनो तौ भज बारंबार ॥ काम क्रोध मद लोभ मोहमें मतिना फँसे गँवार ॥ आखर मृतक होयगो यह तन मनमें सोच बिचार ॥ अजहूं चेत अचेत रह्यो बहु नहिं चीन्हो करतार ॥ मान गुमान करत काहेपै काया जल ह्व छार ॥सिगरी आयु कटी सुखदुखसों कीन्हीं नाहिं सम्हार॥ अब आगेकू कहाकरैगो नारद कहत पुकार ॥ १८८॥

भजन । काहेको बिसारा मन हरिको भजन कर ॥ पापी अधम तारे दोष ना बिचारे कछु सदना कसाई आदि गणिकासी गई तर ॥ पीपाजू सुदामा तारे काज नरसीके सारे प्रहलादको उबारे नरसिंह रूप धर ॥ द्रौपदीकी लाज राखी ताको वेद देत साखी गजकी विपति टारी ग्राहसों छुडाय कर॥कहूंमैं कहांलौं गुण तुम्हरेहो दीनानाथ नारदकोअपनाय लीजिये शरण कर ॥ १८९ ॥

भजन । कर मन रामचरणको ध्यान ॥ जेहि सुमरेतें पाप दूरह्वों यह निश्चय कर जान ॥ पतित उधारन नामहै जिनको गावत वेद पुरान ॥जोतू चाहै पार उतरिबो तो भज कृपानिधान ॥ भूलरह्यो काहेकू मूरख अजहूं कहनो मान ॥ राईसों पर्वत कर डारत पर्वत रेणु समान ॥ वा कहा करोगे नारद जब यम घेरैं आन ॥ १९० ॥

भजन । विपतिपडे कोउ काम न आवत ॥ जिन मित्रन सँग निशदिन बैठत वेभी आंख छुरावत ॥ आवत नाहिं निकट कोउ अपने इत उत बात बनावत॥ घरकी नारी धीर धरत नांहि गारी मोहिं सुनावत ॥ बिनधन यह गति भई हमारी कोउ न तीर बुलावत ॥ सुत दारा सब सुखके संगी दुखमें सब विसरावत ॥ नारद सोच समझ सब जग तजि क्यों नाहिं हरिगुण गावत ॥ १९१ ॥

भजन । लीजै खबर द्वारिका वासी ॥ राखो लाज दास की स्वामी नहीं होयगी हांसी ॥ निज जनके प्रतिपाल नाथ तज और कौनपै जासी ॥ कहां भई देर टेर प्रभु सुनिये हो घट घट के वासी ॥ नारद मुनिके सब अवगुण तज लीजै प्रभु अपनासी ॥ १९२ ॥

भजन प्रभाती । श्रीपति ब्रजनाथ स्वामि तुमबिनको मेरो ॥ मूरख नाहिं कछू ज्ञान जानत नाहिं तुम्हरो ध्यान अपनो जन जान नाथ करो तुम निवेरो ॥ ब्रह्मा शिव शेष आदि गावत तवगुण अगाध पावत नाहिं पार नित्य धरत ध्यान तेरो ॥ जनपै करते सहाय दुष्टनको मारो जाय नारद के अवगुण प्रभु नेक नाहिं हेरो ॥ १९३ ॥

रागिनी आसावरी ॥ बसी जियमें तिरछी मुसकान ॥ कल न परत घड़ि पल छिन निश दिन रहत उन्हींको ध्यान ॥ भ्रुकुटि धनुषसी देख सखीरी नयना बान समान॥ नारद नयना कबहुँ न छकिदैं विनाकिये छबि पान॥१९४॥

रागिनी देश ताल पस्तो ॥ मुरली मनोहर मुरली बजा कर गया टोना ॥ मन हर लियो हमारो इस नंदके छौना ॥ एकबारही विरहकी पीड़ा उठी बदनमें ॥ सुध बुध कछू रहीना भूली सेज बिछौना ॥ नहिं खान पान भावै निश नींदहू न आवै विरहा अधिक सतावै जाने क्या सखीहोना ॥ नारद को दरश दीजै अपनी शरणमें लीजै श्रीनंदके दुलारे अब देर करो ना ॥ १९५ ॥

रागिनी सुरपरदा । करत रार नंदरानी तेरो विटवा ॥ डगर चलत रोकत मारगवा ॥ हम जो गई गोकुलकी डगरमें दौड झपट खोलत घूँघटवा ॥ मोरमुकुट शिरअधिक विराजत पहररह्यो तनु पियरे पटवा ॥ मानत नाहिं काहूको नारद छैल गैल रोकत नट खटवा ॥ १९६ ॥

होली रेलकी । हरिने कैसी रेल चलाई ॥ तनुकी गाडी बलको अंजन क्रोध की अग्नि जलाई ॥ पानी रुधिर अपार भरोहै मनको वेग ले जाई ॥ सांसकी सीटी बजाई ॥ १ ॥ नारी तार सम खबर देनको दशों द्वार फैलाई । इन्द्रिनकोतौ बनो स्टेसन ज्ञान की घन्टी बजाई । धरमकी खेप लदाई ॥ २ ॥ उत्तम मध्यम अधम तीन हैं दरजे इसके भाई । जीवात्मा बैठतहै यामें कर्मकी टैक्स दिखाई ॥ कहत नारद समुझाई ॥ ३ ॥ १९७ ।

होली चाल चारवेत । मार पिचकारी किधर को चला, वह कान गया। मुखसे अबीर मला चूंदर मेरी सान गया॥ मैंतो जातीथी वृन्द्रावनकी डगर दधि वेचन । गालियां देके मुझे वह कृपानिधान गया ॥ ऐसी भिजोई रंगमें नारही तनुकी सुधबुध । सुनासुनाके वांसुरीकी नई तान गया ॥ कियाहै दिल मेरा वश तिरछी दिखाके चितवन । लाज नारदकी गई सारा जगत जानगया ॥ १९८ ॥

भजन । तृपित निशि वासर हरिरस पाय ॥ बुंद भिन्न कहुँ जान न पावत कबहुँ न पेट अघाय ॥ पात्रहिलघुता दीर्घ पदारथ कैसेकै तामें समाय॥ मम मन विषय वासको भोगी ताहीमें रह्यो समाय ॥ नारद भ्रम विहाय भज रामहिं सर्वताप मिटिजाय ॥ १९९ ॥

भजन । रामरटु जीहा कह्यो मेरो मानले ॥ महिमा रामनाम नहिं जानत सज्जन वचनको कानले ॥ हेमन मूरख हठ तज हरिभजु निजस्वरूप पहिचानले॥फिर फिर मानुप जन्म न पैहो कर विवेक तू जानले ॥ यह तनु हाड मांसको पिंजरा पक्षी जीवकू मानले ॥ विछुरे भ्रमर घने दिन बीते अबतो निज गृहथानले ॥ नाम महातम हियें धर नारद प्रेम प्रीति कर पानले ॥ २०० ॥

भजन । अरे मन काहे हरि विसराये॥ जिन यह तनु अनमोल दीन्ह तोहिं ताके शरण न आये ॥ हियके नेत्र

खोल क्यों न देखत समता कतहूं कि पाये ॥ स्वारथ परमारथको दाता ताको काहे भुलाये ॥ नारद मन स्थिर जब ह्वै है सुमति सुचाल चलाये ॥ २०१ ॥

भजन । स्वामीजी तुम दयालु ह्वै रहिये ॥ केवल कृपा दयामूरतिकी और नहीं कछु चाहिये ॥ तुम सर्वज्ञ सकल उरवासी तुमसन कहा प्रभु कहिये ॥ तुम्हरो रूप सकलसुखरासी तासुखसों सुख लहिये ॥ मनमतंग मानत नहिं कहिबो कहांलौं यह दुख सहिये ॥ अब करि कृपा निवाजहु जन कहँ जासों मन थिर रहिये ॥ मोह नृपति बलवान सेनयुत तासों प्रीति न लइये ॥ और सकल . बलहीन दीन जन निज प्रभु हाथ निवहिये ॥ नारद दृढ विश्वास चरणरज ताको शीश चढइये ॥२०२॥

भजन । दरश लखि सब दुख दूर भये ॥ दैहिक दैविक भौतिक तापन अबलों बहुत तये ॥ ब्रह्मरूप सुखसागर दरशत तिनहूं राग लये ॥ पाय प्रसाद पुनीत भयेकर पगमग सुचित दये ॥ नेत्र दरशलहि सब दुख मेटे श्रवण सु वचनठये ॥ मनविश्राम काम सब पूरण ललक-सुबीज बये ॥ अघ अवगुण विसराय कृपाकरि निन निज दरशदये ॥ अब नारद अनुराग भरी गुरु मूरति निरख रये ॥ २०३ ॥

भजन। राखो हरि शठ सेवकको मान॥ जाके कछु आचरण न नीके रति मतिमद अभिमान॥ आरत विनय सुनतही ताकी दीन्ह तुरत जीदान॥ जैसे द्रुपद-सुताके कारण धाये पग विनुत्रान॥ वैसेहि महिमा प्रगट दिखाई मम दासिहि दै प्रान॥ अतिशय सोक समुद्रमें डूबत दुखसमूह जियजान॥ गतआयूको शतआयू कियो तुमसम को निर्वान॥ मेरी कुकृति मेरिही कीनो दीनो वर वरदान॥ सो प्रभाव ततकाल प्रगट कियो जानत सकल जहान॥ आरत गजके बैन सुने जब ग्रसो ग्राहको जान॥ इकक्षणमें प्रभु ताहि उबारो कहांलग करों बखान॥ कहत सुनत कछु बनत न मोसों तुम्हरी योंही बान॥ सदाकरी हरि ये किरपा तुम शठसेवक जिय जान॥ नाम सकल व्याधिनको बाधक कर लीन्हीं पहिचान। अबतो शरणलई नारदने तज ममता अभिमान॥२०४॥

भजन। गोविंद भजु गोविंद भजु हेरे मन भजुरे॥ मानुप तनु ज्ञानधाम दीन्हों तोहिं जोपै राम तोतू पाय उचित ठाम विषय वास तजुरे॥ काम क्रोध मोह लोभ वैरी सब करत छोभ, तोको तो यहै शोभ, नाम साज सजुरे॥ अष्टादश पट्टचार थकितभये कर विचार, तासु नाम सर्वसार, जक्तजान रजुरे॥ नारद सब भ्रम विहाय निज गुरुकी कृपापाय एक नाम गहो धाय और नाम तजुरे॥ २०५॥

भजन। मेरो मन हरि पद नेक न लाग्यो॥ बार बार समझत समझावत चलत कुपथ पाछे पग भाग्यो॥ घोर नींदमें सोवत निशिदिन रह्यो जगावत कबहुँ न जाग्यो॥ सतसंगति तजि लग्यो कुसंगति विषयभोगसे त्रास नलाग्यो॥ नारद मुदित मनोरथ येही कबधों प्रेम प्रीति आराध्यो ॥ २०६ ॥

भजन। कबहुँ न श्रीहरिके गुण गाये॥ भोगत विलसत अरु हुलसतहिय चौंथे पन नियराये॥ यमयातना अन्तको ह्वैहै कोऊ काम न आये॥ द्रव्यवान धनवान याहि लखि लोभादिक मनलाये॥ श्वानसमान फिरत नित मूरख निज स्वरूप विसराये॥ माया मोह नीदमें सोवत सारी वयस जगाये ॥ अब जड़ जागु राम भज बौरे भजन करे गति पाये॥ नारद पतित अधम गतिपाई हरि सन्मुख जब आये ॥ सब अपराध क्षमाकर प्रभुने निज स्वभाव अपनाये॥ २०७॥

भजन। कौन ऐसो पाप जो मैं नाहिं कीनो ॥ जीवन वधन हरन परधनको अपने को मैं नेक न चीनो॥ धन तन मद मत महा मोहमय ताको सदा रहत आधीनो॥ विषय रहित मणि नामहि तजिके विधिवशभूल कांच गहिलीनो॥ प्रथमरेख पतितनमें मोरी नारद नाथ नाहिं मैं चीनो॥ २०८॥

भजन। धृक मन जे नर भाजे भजनसों॥ अपनो जान आपअपनावत तू कस विमुख रहत सुमरनसों। स्वारथरत परमारथ भूल्यो सार न निकस्यो प्यारे जनन सा॥ नेह न नेक भयो हरिपदसों नेहाकियो परिजन पुरजनसों॥ नारद भूल भुलय्यां भूल्यो दूरहि भागत करुणाभवनसों॥ २०९॥

भजन दादरा। तोहिं घेरे सकल दिश वैरी अरे मन भागुरे भागुरे भागुरे। मोहनींदमें वहुतक सोये भोरभई उठि जागुरे। काम क्रोध मद लोभ मोहवश अपनो मन मत पागुरे॥ सुरत शीलसों नारद ह्वैरहु भोगविषयरस त्यागुरे॥ २१०॥

भजन। स्वामीजी मैं मतिमंद गँवार॥ जिनकरकृपापात्र अमृतइव दीन्हा मोहिं कर प्यार॥ पदरज पराशे अमल भये लोचन उघरे ज्ञान किवार॥ त्रिविध ताप भये दूरि भूरिमय भाग्यपाय अधिकार॥ मोहजनित गयो तिमिर भाजि सब भा विवेक उजियार॥ मन थिर भयो गयो सब संशय आतमके निरधार॥जेनकेन विधि मोहिं उबारचो सतस्वरूप उपकार॥ मेरे पाप समूह दूरिकर लीनो शिरधरभार॥ अब स्वारथ परमारथ दोऊ सिद्धिभये संसार॥ नारद अमित भ्रमरसे उबारे केवल कृपा तुम्हार॥ २११॥

भजन प्रभाती ॥ अशरण शरण तुमविन कौन ॥ मोह मद कामादि कूकर और उनके छौन ॥ चलत मारग भोंक धावत बैठ रहियतु मौन ॥ १ ॥ पृथिवी जल आकाश पावक अधिष्ठाता पौन ॥ तासु प्रेरकके विसारे घुलत यह जिमि लौन ॥ २ ॥ देख मन तन सुभग रचना रचित ताको तौन ॥ सो रहत सूक्षम गतीसों कर्मकारक जौन ॥ ३॥ वेद शास्त्र पुराण मुनि जन यहै ठान्यो ठौन ॥ त्यागकै भ्रम देखु नारद तनक तनुको भौन ॥ ३॥ २१२ ॥

भजन राग कल्याण ॥ तिहारे गुण मंगल मोद भरे ॥ मोसे अधम अधीन दीनजन शरण गये उबरे ॥ मन वच कर्म किये अघ निशदिन अंत सुचरण परे ॥ ताके पाप मेट अपनायो तुमसम कौन खरे ॥ गिद्ध अजामिल सदना गणिका निशदिन पाप करे ॥ नाम प्रभाव मुक्ति तिन्ह दीन्हीं पातक पुंज जरे ॥ हरिणाकुश रावण कंसासुर हरि सन जौन लरे ॥ ताहि नेवाज धाम निज दीनों विन प्रयास उधरे ॥ पावक जल अरु मेरु खड्गसों नहिं प्रहलाद मरे ॥ नारद कस न आशकर हरिकी जिन यह कार्य करे ॥ २१३ ॥

भजन होली काफी ॥ होरी खेलों मैं राम छवीलेसों ॥ हरिपदरजले निज मुख मेलूं रंग डालूं रंगीलेसों ॥ सुरत सुषमना श्वास श्वास प्रति अवीर गुलाल समीरेसों ॥

जित देखूं तित सोई रंग दीखै तन मन रंग फबीलेसों ॥ रहत सदा मति मन मतवारो हरि रसपियत ढंगीले सों ॥ होनीथी सो होली नारद मति रतिराम रंगीलेसों ॥

भजन । आरामहै रामके पाँयनमें ॥ योग यज्ञ जप किये न सुखजग नाहिन तीरथ धायनमें ॥ १ ॥ इडा पिंगला सुषमना शोधे नाहिं सुख प्राण चढ़ायनमें ॥ श्रुति अरु वेद पढे निज सुखनहिं नाहिन व्रत चन्द्रायनमें ॥ सुत वित नारि आदिमें सुख नहिं सुख नहिं प्रभुता पायनमें ॥ नाहिं महत्व जगमान लहे सुख नाहिं सुख नृपति कहायनमें ॥ माला तिलक छापमें सुख नहिं नहिं सुख वेष बनायनमें ॥ नारद क्यों न विषय रस भूलत सुखतो रामपरायनमें २१४

गज़ल । क्योंकर मिलै दीदार खोटा भाग्य तुम्हारा ॥ फंदेमें फँसके चारके कुछभी खबर नहीं । दिलदारके दीदारका कुछ और इशारा ॥१॥ होवे नसीब क्यों बता तुझको जमाले यार । तू फिरता काम क्रोध लोभ मोह का मारा ॥२॥ अव्वलही सख्त और कठिन रास्ताहै यार । हरगिज नहीं होवेगा वहां तेरा गुजारा ॥३॥ बिन दीपके जहांपर रहता है चांदना । नहिं सूर्य नहीं चन्द्र नहीं है जहां तारा । नारद जो हैगी बात वह कहदी सही सही । समझाये तुम्हें देतेहैं यह काम हमारा ॥ ४ ॥ २१५ ॥

ग़ज़ल। दिखाके चितवन बजाके बंसी किधर गयाहै वह प्यारा बनमें ॥ आघेरी ग्वालन ले ग्वाल संगमें की लूट दधिकी नखौफ मनमें ॥ हँसहँसके मटकी जो दधिकी पटकी टोनासा करगया कुंजनमें ॥ वह श्यामसुन्दर रसिकबिहारी है जादू उसके जो बालेपनमें॥ लखाहै जबसे नहोस सजनी विरहके भाले लगे बदनमें॥ ना मैंने जाना अय प्यारे अबतक है ऐसा छलबल जो श्याम तनमें ॥ नादिल लगाती जो बर्ज रखती मैं उनके मोही मधुर वचनमें॥ तजलाज कुलकी लगाके दिलको मैं अबतो बैठी इसी परनमें। उन्हीं पियाके जो पाऊँ दरशन है तू सनेही जिसकी शरनमें ॥ २१६ ॥

भजन। ब्रजरज रेणुकापै चिन्तामणि वारडारूं वार डारूं विश्व शोभा कुंजके विहारपै ॥ लतानके पतान कोटि कल्पतरु वारडारूं वैकुंठको वारडारूं कालिन्दीकी धारपै ॥ ब्रजकी पनिहारनपै रती शची वारडारूं रंभा हूको वारडारूं गोपिनके द्वारपै ॥ कहत अभिराम एक राधिकाको जानतहों देवनको वारडारूं नन्दकेकुमारपै ॥२१७॥

भजन। मूल मलियानके समूह जर जइयो आली गुण जर जइयो या सुगंधि सियराईके ॥ कटिजइयो भूत लते केतकी कदम्ब फूल हूजो कतलकुल अलिन दुखदाईके ॥ मोतीराम सुकवि मालतीहूको मनोज हूज्यो हूज्यो

जिन हंस या विहर दल दहाईके॥२॥राजहंसवंशके वंश निरवंश हूज्यो अंश घट जइयो या कलानिधि कसाईके॥२१८॥

रागनी श्यामकल्याण। लेगयो चीर मुरारी, मैं कैसी करूं॥ चीर हमारे दीजे श्यामरे हम जल माहिं उघारी; मैं कैसीकरूँ॥१॥ चीर तुम्हारो जब हम देंगे जलसे होजाओ न्यारी, मैं कैसीकरूँ॥२॥ जो हम जलसे न्यारीहोंगी जायगी लाज तिहारी, मैं कैसीकरूं॥३॥ काहेको रारि करो मेरी प्यारी एक ना मानूं तिहारी, मैं कैसीकरूं॥४॥ पुरइन पात पहिर राधा निकसी कृष्ण हँसे देतारी, मैं कैसी करूं॥५॥ सूरदास सब ग्वालिन बोलीं तुम जीते हम हारी, मैं कैसीकरूं॥६॥२१९॥

होली राग पीलू। मेरी अँगिया भीजगई सारी लला॥ अँगियाके बदलेमें अँगिया मैं लूंगी पांच रुपय्या गुनेगारी लला॥१॥ भीजगयो मेरो सुरख चादरा चूंदर लाख हजारी लला॥२॥ जिन मारी मेरे सन्मुख आवो नाहिं दूंगी लाखन गारी लला॥३॥ घर पति देवरा बहुत रिसावे सास सुनै देगी गारी लला॥४॥ रामसखीकी प्रीति नछूटै मोहन मेरी तेरी यारी लला॥५॥२२०॥

रागनी सिंधु। तिहारे कृष्ण घूंघरवारे बाल। अति भौंरासे कारे कारे नटनागरसी चाल॥ ति०॥ चितवनमें

मन वश करलीनो डार मोहनी जाल ॥ १ ॥ मोरमुकुट पीताम्बर सोहै मोहलई व्रजबाल ॥ २ ॥ सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलनको चितचोरे नंदलाल ॥ ति० ॥ ३ ॥ २२१ ॥

होली काफी । यह मन निपट अनारीरे होरी खेल न जानै॥ उठी पठ सौदागर आया क्यारे करे व्यौपारी । काम क्रोध और लोभ मोहकी शिरपर गठरी भारीरे ॥हो०॥१॥ इस नगरीके पांच मवासी और पचीसों नारी । इन्हें मार होरी खेलो पियासे बात सुधरजाय सारीरे ॥ हो० ॥ २ ॥ और सखी जो पिया संग खेलें एक सखी खेलै न्यारी । एक सखी भर भरके लावै दुजी भरनकी वारीरे ॥ हो० ॥३ ॥ कुमति गुलाल उड़ाओ मेरी सजनी सुमतिकी भरलो झोरी। कहैं कबीर सुनो भई साधो या विधि खेलो होरीरे हो० ॥ ४ ॥ २२२ ॥

भजन । नादूंगी मैं नादूंगी श्यामकी वंसी नादूंगी ॥ श्यामकी वंशी पाई मैंने वनमें छिपाराखी अपने तनमें कुब्जा सौत कहैगी मनमें तो कुमर मैं क्या कहूंगी ॥ १ ॥ हमसे प्रीति छुटाकरमोहन कुब्जाके संग लागे सोवन हमको तौ तुम लागे खोवन हरिके द्वार पुकार करूंगी ॥ २ ॥ हटो सखी मोहि मति समझावो नातो जहर विष खाय मरूंगी । अपने जलेको क्या न कहूँगी एककी सोसो गारी दूंगी॥३॥ कभी न दिया दरश हरि हमको इत बैठे कहूं उत बैठे जैसा

नाच नचाया मुझको वैसा नाच नचा छोडूँगी ॥ ४ ॥ दयासखीकी साँची बातें नाकुछ छलबल नाकुछ घातैं कान्हा पाये अपने हातैं करसे कस बहियां गहलूंगी ॥ ५ ॥ २२३ ॥

रागनी खंमाच तैलंगी। राज म्हारी नीदडिया जगाइलो ॥ सोवतही में अपने मंदिरमें कभी न रंग पिया म्हारे डेरे आइलो ॥ सब सखियां मिल बन बन आई लो अचरजकी एक बात सुनाइलो ॥ २२४ ॥

रागनी देश। प्यारी पीतमके संग झूलैं रंग हिंडोलना। दोखम्भेहैं जडाउ जडे चितके चोरना। डांडी चौचारनीकी लगी चितकीचोरना ॥ १ ॥ पटली मलयकी साफहै क्या खूबहै बनी। लागेहैं जिसके बीचमें हीरा पन्ना चुनी ॥२ ॥ मुझकोतौ रसिकविहारीकी छबिहीमें झूलना। श्यामा अनूप रूपको कबहूँ न भूलना ॥ प्यारी० ॥ ३ ॥ २२५ ॥

रागनी खंमाच। देखो आली री लागी साँवलियासे प्रीत ॥ अपना बिगाना सब हम त्यागो अखतरकी यह रीत ॥ देखो० ॥ २२६ ॥

रागनी विहाग। तुम सब लायक हो गिरिधारी। पारब्रह्महै नाम तिहारो मेरेहू संकट दो टारी। आगे यह वृत्तान्त सुनाऊं कृपा दृष्टि कर सुनहु मुरारी। एक सखीसे मैं सुन पायो सभाइई ह्यां अतिशय भारी। मेरे पितुने कही

सभामें रुक्मिणि अबतक रही कुँवारी ॥ तब रुकमैया कहत सभा में शिशुपालाको खुशी हमारी ॥ मेरे पितुने ध्यान न दीनो क्रोधित भयो रुक्म तब भारी । रुक्मकेश मम छोटो भाई ताने पुनि यह बात विचारी । रुक्मिणि पिता कृष्णको दीजै यह सुनकै सब भये सुखारी । सकल सराहत रुक्मकेशको क्याही नीकी बुद्धि तुम्हारी ॥ यह सुन रुक्मैया झुँझलायो कारी पीरी आंख निकारी ॥ टीका भेजो वेग चंदेरी पिता बात मानो तुम म्हारी ॥ ग्वालाको ना करैं सगाई क्यों तुम सबरे भये अनारी ॥ नारद सकल गये निज निज गृह कहत दुष्ट यह बात बिगारी ॥ करजोरूं यह विनय सुनाऊँ राखो लाज आज गिरिधारी ॥ २२७ ॥

लावनी । रास रचो गोकुल बनवारी चलो छबि निरखन बनवारी ॥ क्या वीना बाजाताहै प्यारा, श्यामने मोहा जग सारा, शिरपर मोर मुकुट धारा, ओढ रहा पीताम्बर न्यारा । दोहा ॥ वृंदावनमें रास रचोहै श्रीकृष्ण भगवान । ग्वाल बाल सब सखा संग लिये क्रीडा करते कान्ह । श्यामके दरशन अधिकारी ॥ चलो० ॥ लगै धुन वंसीकी प्यारी, करो चलनेकी तइयारी ॥ किसीने ओढ़ा चीर सारी, कोई सखी होरहि मतवारी ॥ दोहा ॥ घडी घडीमें वंसी बाजी हरे हमारे प्रान ॥ देर न कीजै चलो सखीरी रहै

सभीका मान ॥ जहां वे हैंगे गिरिधारी ॥ चलो० ॥ सभी ने छोडा घरका वास, ग्वालिनी गईं कृष्ण के पास, किये दरशन सब मिटगये त्रास, श्यामने रचा प्रेमसों रास ॥ दोहा ॥ चौंसठ बाजे बाजते और छतीसों राग ॥ नृत्यकरै जहँ आप श्यामरे भले सबनके भाग ॥ खुली शिवशंकरकी तारी ॥ चलो० ॥ एक गोपी को लेगये कान्ह, कि इसको बडा हुवा अभिमान, श्याम मैं बहुत हुई हैरान, बात एक लीजो मेरी मान ॥ दोहा ॥ कांधेपर मोहिं चढायलो, नहिं चलने की बान ॥ नीचे होकर लगे चढाने, होगये अन्तरध्यान ॥ अकेली फिरूं बन बन मारी ॥ चलो० ॥ ढूंढ कर सारा बन आई, कहीं नहिं पाये यदुराई । श्याम दुखदे गयेरी माई, ऐसे कह गिरी धरणि आई ॥ दोहा ॥ आज श्याम तुम क्या किया हमसे प्रीति लगाय ॥ तरस तरस जियानिकसे हमारो अबतो कुछ न बसाय ॥ फिरैं हम सब दर दर मारी ॥ चलो० ॥ कोई कहैं भयो कृष्ण अवतार, कंसको, डारूं छिनमें मार, काहे डरो गोप और ग्वार, सभी दुष्टों का करूं संहार ॥ दोहा ॥ कोइ एक बंसी बजावतीरे कोइ शिरमुकट धराय-कोई पूतना बनगईरे कोई कृष्णा भई आय ॥ किसीने गोबर धनधारी ॥ चलो० ॥ ग्वालनी देख हाल बेहाल आयकर मिले नंदके लाल, श्यामरे बडे हैं दीनदयाल पलकमें करदेतेहैं निहाल ॥ दोहा ॥ शम्भूनाम भोला सुनो

कहते दुर्गादास ॥ गोपिनसे हरि आय मिलेहैं पूरण होगइ आश प्रेममें मगन भई सारी ॥ चलो० ॥ २२८ ॥

भजन एकताला। सीता विनु देख कुटी सोचत रघुराई ॥ लक्ष्मण तुम कहा कीन इकली सिय छोड दीन निश्चर कोउ दाँव चीन्ह लेगयो उड़ाई ॥ १ ॥ सिय विन व्याकुल शरीर तन मन नाहिं धरत धीर; कौनहरे पीर नीर दृग चले बहाई ॥ २ ॥ ढूंडोवन सकल जाय तिनको खोज कहुँ न पाय हमकोतौ भई मातु कैकयी दुखदाई ॥३॥ आगे गिद्ध भेंट भई ताने सकल कथा कही, सुनके वात मोक्षदई नारद बलिजाई ॥ ४ ॥ २२९ ॥

रागनी धनाश्री । छवि देखे विना हो नहिना पडत मोहिंको चैन। जबसे गये मोरी सुध हू न लीनी सोतनसों कटें रैन ॥ १ ॥ कर चाहत करसों मिलवेको श्रवण सुननको वैन ॥२॥ नारद कहत रहत नित व्याकुल मुख देखनको नयन ॥ ३ ॥ २३० ॥

रागनी देश । लाला कहूँ सौतनने विरमाये, गइबीत अवधि नाहिं आये ॥ कातिक लागो अगहन लागो पूसके जाडे खाये ॥ १ ॥ माह वसन्त कंथ विनु फागुन वीते चैत नआये ॥ २ ॥ पी वैसाख जेठ आवनको कुछ आसार नपाये ॥ ३ ॥ सावन तरसैं भादों वरसैं कुँवार करमसे आये ॥ ४ ॥ वारहमास व्यतीत भये जव श्याम सनेही पाये ॥ ५ ॥ २३१ ॥

भजन राग जिला। चितवन मेरी चितचोरसे अटकी॥ चंदा तजै न चांदनी, सूरज तजै न घाम। बादर तजै न श्यामता, भक्त तजैं नाहिं राम ॥चि०॥ मेरे आंगन केवडा मँगरी बोला काग। सोने चोंच मढ़ावती, जो पीतम आवैं आज ॥ चि० ॥ हम पीतमकी लाडली, तुम परदेशी काग। पीतम भये पराये वश, का संग खेलूं फाग ॥ २३२ ॥

भजन। भजन बिन जीवन जैसे प्रेत ॥ मलिन मंदमति घर घर डोलत उदर भरनके हेत ॥ १ ॥ कबहुँकि पाय पापको इतनो गाढ धरममें देत ॥ २ ॥ करनी धरनी कछू न जानै भयो लीलको खेत ॥ ३॥ नारिन को सुखनिशिदिन चूमत साधुनको दुखदेत ॥ सूरदास प्रभु कहांलगि कहिये डूबे कुटुम समेत ॥ ४ ॥ २३३ ॥

रागनी खंमाच। साँमरेकी आज मन बसगई,साँमरेकी सुरतियां प्यारी प्यारी सजनी मैं क्याकहूं तुमसे अपने जिया कि बिथा वाहूके देखे विन कल न परतहै॥ आज०॥ हाहा करतहूं पइयां परतहूं जो पिया आनामिलावै मोइको, हौंतो चेरी सनद भई तोरी ॥ आज० ॥ २३४ ॥

रागनी खंमाच। कहा करूं ना मानैरी सखीरी ॥ मोर मुकुटवारो ढीठ लंगर डगर चलत पनियां भरत ठठोली करत ॥ कहा० ॥ बरजोरी कर पकरत पिया मेरो बारबार मोसे बाराजोरी करत ॥ कहा० ॥ २३५ ॥

रागनी खंमाच। वाराजोरी मोरी वहियां मरोरीरे ॥ देखोजी देखोजी मोरी चुरियां मुरकाडारीं अँगिया मसकगई ऐसी कोई करत ठठोली मोरी वहियां मरोरीरे ॥ २३६ ॥

भजन। श्रीगणपति संतन सुखदाई ॥ मूषक वाहन सदा रहत हैं माथे तिलक सिंदूर लसाई ॥ सदासहाय करी संतनकी तुम्हरी महिमा वेदन गाई ॥१॥ तीनलोकमें ज्योति विराजत सुर नर मुनि सबके मन भाई ॥ २ ॥ विघ्ननिवारन काजसँभारन पतित उधारन नाम कहाई ॥३॥ एकरदन गजवदन विनायक सुमतिसदन दुख देत नशाई ॥ गौरीनन्दन असुरनिकन्दन नारद को लीजे अपनाई ॥ ४ ॥ २३७ ॥

रागनी देश हिंडोला। हिंडोला गोरी झूलत हरिके संग॥ १ ॥ कंचनके दोउ खम्भ बनाये,रतनजटित सुन्दर छबि छाये डांडी चारु लगी अतिनीकी पटली रँगी बहुरंग ॥ २ ॥ पचरँग रेसमकी लगी डोरी, मुतियनकी झालर चहुँओरी; पुष्पनसों शोभित अति कीन्हों, देखत उठत उमंग ॥ ३ ॥ घर वरसों कामिन उठधाईं, हिलमिल गावत सब हर्षाईं, तिनके मध्य अधिक छविराजत, श्यामल गौरव अंग ॥ ४ ॥ कोइ झूलत कोउ खडी झुलावत राग हिंडोल भरे सुर गावत, यह अदभुत छवि देख सनेही मन उठे प्रेम तरंग ॥ हिंडोला गोरी झूलत हरिके संग ॥५॥ २३८ ॥

भजन राग झंझोटी। माई तेरो कान्ह लगोई संग डोलै। जित देखूं तित ठाढोइ दीखै विना बुलाये बोलै॥ १॥ वरजरही इन लोभी नयना विन दामन भई मोलै॥ २॥ परमानंद दासको ठाकुर हँस हँस घूंघट खोलै॥३॥२३९॥

रागनी श्यामकल्याण। कठिन लगनकी प्रीतिपीर वोरी। डसगयो श्याम भुजंगम कारो लहरैं उठत शरीर वोरी०। नंदनँदन विनु कल ना पडतहै यह मन धरत न धीर। दयासखी वे कैसे जीवत विंधे हिये दृग तीर। वोरी०॥ २४०॥

भजन विहाग। साधुनकी महिमा अधिकाई। जैसे पारसके परसेते लोह तुरत कंचन होजाई॥ १॥ तैसेही गुणहैं साधुनमें वेद पुराण कहतहैं गाई। साधू संग वनत नाहिं मोसों गृह धन्दोंमें रह्यो लुभाई। अवसर मिलत नहीं नारद मुनि जो सतसंग करैं मनलाई॥ २४१॥

भजन सीताहरण। शिर धुन धुन रोवत जानकी। वंचक संत भयो दशकंधर भिक्षा मांगी आनकी। तज मतिमंद कुटिल अज्ञानी मैं दासी भगवानकी। लपण वचन मैं कान न कीनो मिथ्या दोप लगायोरे। सोइ फल हमको दिये विधाता कठिन बनी इन प्रानकी। केहरी भक्ष पकड़ मत जम्बू मरिये मौत अकालरे। तज मतिमंद कुटिल अज्ञानी मैं दासी भगवानकी। सुनत न मूढ

चलो ले रथमें ना कोइ निकट सनेहीरे । हम जानी कछु औरहै इच्छा हमपर कृपानिधानकी ॥ २४२॥

भजन राग वारवा । कवसे भये हरि दानी।कलह तलक तुमने दधि माखन घर घर जाय चुरानी । लेसँगग्वाल आज मारगमें नई दिखावत ज्ञानी । कैसे दान जानदे मोको भयो मूढ अज्ञानी । ठाढो जुलम करत मारगमें रोकत नारि बिरानी । जो तुमरे चित छाय रहीहै सो हमने अब जानी । तापर सूधो तुम्हें बतावत बैठी यशुदा रानी। कहत सनेही सुनो श्यामरे कंसाकी रजधानी । जो सुनपैहै पकड मँगावै बहुतपडै हैरानी ॥ २४३ ॥

भजन । घेरो मत मारग ब्रजनारी ॥ दधिपै कैसो दान आन तुम माँगत वनवारी ॥ या मारगके बीच आज लों भई नहीं ऐसी॥ वनमें घेर गूजरी ठाढे कहत बात जैसी ॥ कहत समझाय कान्ह तुमकू ॥ होत अबार बेच दधि आवें जानेदो हमकू ॥ नित्यकी दधि बेचन हारी ॥ दधि०॥ इतकू दिन दिन आय सखी दधि रोज बेचजाओ ॥ हासिल आज चुका सब दिनका जब जाने पाओ ॥ नहिं अबतक हुआ ख्याल मेरे ॥ सौदिन होंय चोरके आखर कभी शाह घेरै ॥ काढले कसर जभी सारी॥दधि०॥कबसे आप शाह हो बैठे हेनंदके ढोटा॥ हम सब कीनी चोर भयो क्यों पीपी छांछ मोटा ॥ जानूं मैं सब उपमा तोरी ॥ घर घर हमरे

करी आजलों माखनकी चोरी ॥ बाँधे ऊखलसों महतारी ॥ दधि०॥ जो नृप आय शत्रुकू जीतै पहिले लूट करे ॥ अपनो हुकम चलाय प्रजाको पाछे दुःख हरै ॥ नीतसोइ करै देख लेरी ॥ ब्रज चौरासी कोस दुहाई फिरै आज मेरी ॥ लगै महसूल सदा ह्याँरी ॥ दधि० ॥ जायो देवकी कान्ह पाल तोहिं यशुमति ने लीनो । बातैं करत राजकी ग्वाला तोहिं नंदने लीनो ॥ कंसकीहैं यह रजधानी ॥ जो सुन पावै पकडमंगावै निकस जाय ज्वानी ॥ दण्ड वह दे तुमको भारी॥दधि०॥करो बड़ाई जा कंसाकी तासों नाहिं डरूं ॥ तुम्हरे देखत केश पकर मैं ताके प्राण हरूं ॥ जन्म मैं याही हेत लीनो ॥ कर असुरोंको नाश सदा भक्तनको सुख दीनो॥ जानैं मोहिं सुर मुनि ब्रह्मचारी॥दधि०॥यह सखी निडर नाहीं डरमानै मारग रोक रह्यो ॥ लौट चलो सखी भवन हाल यशुदासे सकल कहो ॥ सैन सब गोपिनको दीनी । रह गईं झाडें हाथ लूट जो दधि मटकी लीनी ॥ खात दधि और देत गारी ॥ दधि०॥ अबतौ तुम भई मगन सखी नहीं मान बात मोरी॥करो जाय फिरयाद सभी जहां मन चाहै गोरी ॥ सनेही चली सभी घरको ॥ सिगरी कथा सुनाय यशोदासे पिटवावें हरको । करत यह पैन्है वनवारी ॥ द० ॥ २४४ ॥

भजन । ब्रज बनिता बन करवेकू जाई ॥ मधुवन ताल कुदर वौलावन सांतनकुण्डमें न्हाई । राधाकुण्ड और

कृष्णकुण्डकी महिमा वरणि नजाई।गोवर्धन की दे परिक्रमा मानसीगंगा न्हाई ॥ त्र०॥ परमदरोवर आदि वदरी सुखकर खौर रचाई ॥ वस वरसाने नंदभवन पुनि गोकुलावनकू जाई ॥ वट संकेत क्षेद्र वन वासिके तव यह जरन वुझाई ॥ त्र०॥ शेप नाग छाया हरि दरशन जहाँ पौढे यदुराई ॥ खेलन वन और चीरघाटहै नंदघाट दरशाई ॥ भीलभद्र भाडील सकल वन मानसरोवर न्हाई॥त्र०॥गोकुल और महावन महिमा शारदहू नहि पाई ॥ धन्य धन्य गोकुल वृन्दावन धन्य यशोदा माई । इनकी महिमा कहाँलगि वरणूं जन्मे कुँवर कन्हाई ॥ त्र० ॥ वारहवन वारह उपवनकी महिमा गाय सुनाई ॥जाने सुनी सुनाई जाने कोट यज्ञ फल पाई॥ विष्णुदास प्रभु करत सकल वन आवागमन मिटाई ॥ ॥ त्र० ॥ २४५ ॥

भजन । राम कृष्ण कहुरे जड मूल । थोडासा जीना वहुत सी भूल ॥ जिन हरि तेरी रक्षा कीनी,ताती व्यार लगन नहिं दीनी,ता हरिकी लीला नाहिं चीन्ही, पानीका बाँधा स्थूल॥ राम०॥ आया था तू लोभके कारण,उलटा पूंजी लागा हारन ॥ आगे शाह लैंगेगे मारन, गलमें फांस हाथमें शूल ॥ राम० ॥ नसा खाय और खेलै जूंआ,वहन भानजी ठगि ठगि फूवा,सारे जक्तमें थूथूहुआ, मारैंगे यमकंकर धूल ॥ राम० ॥ तू किसका और कौन तिहारा,जाके बल हरिनाम

बिसारा॥ ह्यां देखा झूठा संसारा,चेत सबेरा हरि मत भूल॥ राम०॥भूलगया तू सांचे पीकू, गर्भबास दीना सुख जीकू॥ ऊपर पैर शीश नीचेकू, जरत अगिनमें रहता झूल॥राम०॥ सुमरत क्यों ना श्रीपति देवा, जो तेरा पार लगादें खेवा, आवेंगे जब यमके लेवा, गलमें फांसी हाथ त्रिशूल॥ राम० ॥ लख चौरासी भुगतके आया, बडेभाग्य मानुष तनु पाया ॥ मुखसे राम नाम बिसराया, सूरदास चरणों की धूल ॥ राम कृष्ण कहुरे जडमूल ॥ २४६ ॥

राग भैरों चौताला ।प्रथम मान ओंकार देवनमान महादेव ज्ञानमान गोरख वेदमान ब्रह्मा ॥ विद्यामान सरस्वति, नदीमान गंगा। तालतौ मृदंगमान निरत मान रंभा ॥ गीतके संगीत मान संगीतके अक्षर मान अक्षरके सुरमान तालहू अगंवा।कहै बैजूबावरे सुनोहो गोपाललाल दिनमान सूरज रैन मान चंदा ॥ २४७ ॥

भजन। ऊधोजी कैसी पाती लाये श्रीब्रजराज क्यों नहिं आये ॥ जब आये अक्रूर लिवावन,उमड नयन भये भादों सावन, प्रेमके नीर भीजें सब कामन, जब हरि लगे सबै समझावन, राखो धीर वेग हम आवें, ऐसे कह समझाये ॥ ॥ श्री० ॥ श्री राधाजी अधिक पियारी, एक पल बिछुडत होत दुखारी, ताकीभी हरि सुरत विसारी, ऐसे कठोर भये वनवारी, ऐसी ना चाहिये नंदलाला, प्रीति लगा उत धाये

॥ श्री० ॥ पातीमें क्या लिखत मुरारी, योग बांच भई परम दुखारी,धन्य धन्य तुमको गिरिधारी,हो बैठो वैरागन सारी, क्या सोचो सखी भस्म रमाओ प्रीतिके फल हम पाये ॥ श्री० ॥ मार कंस महाराज कहामें, अब क्यों नंदकी धेनु चरामें, चतुर नारि मथुराकी भामें, गोपीनाथ सुनत सकुचामें, छापलगी श्रीराधाकृष्ण की सो नहिं छुटत छुटाये ॥ श्री० ॥ जो व्रज कौतुक किये कन्हाई, सो सब सखियन कथा सुनाई, वाने प्रेम सुरत बिसराई, मुखसे निकसत श्रीयदुराई, जबहीं ध्यान करन लगीं गोपी तबहीं दरश दिखाये ॥ श्री० ॥ २४८ ॥

भजन। दोऊ मेंसे एकहु नाहिं भई । ना हरि भजा न गृहसुख पायो वृथा विहाय गई ॥ सेमर सेयसुवा पछितायो लालच दम्भ दइ ॥ गहरी कर जब चोंच चलाई निकसी तूल मई ॥ दो० ॥ छूंछी छांछ बिलोवत लोगनि निकसत नाहिं मही ॥ सूर दाख कहांसे तुम पैहो पेड़ बबूर बई ॥ दोउ मेंसे० ॥ २४९ ॥

भजन । प्रभू मैं सब पतितनको राजा । को करसकै बराबर मरी करत पाप नित ताजा ॥ प्र० ॥ मेरे लोभ रीति निशि वासर दंभ छत्र शिर छाजा ॥ तृष्णा चवर ढुरत शिर ऊपर काम क्रोधके वाजा ॥ प्र० ॥ छरीदार पुर बीच पुकारत धमाह करत अकाजा । मन मतंग आगे

होय निकसत सूर पतित दल साजा ॥ प्रभू मैं सब पतितन को राजा ॥ २५० ॥

रागनी कान्हडा । अबतो लागी प्रीति माई अबतो लागी प्रीत । प्रीति रमासों प्रीति रामसों श्रीगिरिवरधर व्रजकुंजन वन श्यामसुंदर वंसीवारेसों ॥ अब०॥ मोर मुकुट मकराकृत कुंडल कुंचितकच कपोल श्रवणनपर भ्रुकुटि भाल पर तिलक विराजत कोटि काम नाशा नैननपर । अब० ॥ अधर दशन घन तडित कम्बुगल ग्रीव कंठ वनमाल उदरवर । कटि पटपीत कसे कोमल पद सूरदास आनंदम गनमन ॥ २५१ ॥

भजन । हौंतो सब पतितनको टीको ॥ नाहिन कोइ संग करवेको चलत सवनसे लीको ॥१॥ और पतित दिन चार चारके हौं प्रभु जन्मतहीको ॥ २ ॥ ताहि नेवाज तुम सवही उधारे मिटत शूल क्यों जीको॥३ मैंतौ कुछ करकै नहिं छाडों काहेते परो फीको ॥ ४ ॥ लाज मरत यह सूर कहतहैं मोसम पतित न नीको ॥ ५ ॥ ॥ २५२ ॥

भजन । हरिहौं सब पतितन को नायक ॥ दंभ कपटको कटक वनायो लोभ मोह किये पायक ॥ ममता मंत्री मित्र रंगीलो आठोयाम सहायक ॥ काम क्रोध सेनापति कीने महाबली सबलायक ॥ चलो धर्मसे युद्ध करनको लै मधुको धनुसायक ॥ देख सूरको धर्म परानो जान मोहिं दुखदायक ॥ २५३ ॥

कृष्णगारी ।

यादववंशी जजमान हमारे आयेरी ॥ यह उग्रसेन हैं लालजूके नाना ॥ डाढी रंगके आया भडुवा पगियाके वीच बताना ॥ रंगरंगीली और चटकीली लालनजूकी नानीजी । जैसे बूढे उग्रसेनहैं वैसी नारि पुरानीजी ॥ बलदेवजी हरिके भइया छलबल वहुत अनूठे । सखियनके सँग लीला कीनी तिनके जोवन लूटे ॥ यह ऊधोजी हरिके संगाती बातनके बड जटनाजी । सखियनको समझावन भेजो यहहै पूरा कुटनाजी ॥ २९४ ॥

गारी । यादववंशी देवन अंशी खांय वहुतसे लडुवाजी ॥ दो लडुवा खीसामें राखत जोरूके कारण भडुवाजी । भीषमनृपकी परम सुन्दरी पहिरे माणिक मोतीजी । जो तुम्हैंहै लडुवनका धोखा खोलो जामा धोतीजी ॥ २९५ ॥

गारी । भोजन जीमो श्याम पियारे । सत्य कहो तुम नन्दनँदनहो कै वसुदेवदुलारेजी ॥ कै तुम दोऊ हिल मिल जाये हैं दो तात तुम्हारेजी । गोरेहैं वसुदेव देवकी हलधरहू उजियारेजी ॥ नन्द यशोदा दोनों गोरे तुम कांहेको कारेजी ॥ मथुरामें वसुदेव कैदमें रोहिणी रहीं अटारेजी । कहो वलदेव कौन विधि जाये यह शंका उर म्हारेजी ॥ वहन तुम्हारी वडी सुभद्रा अर्जुन पकड सिधारेजी । भइया लागतहै नातेमें फूफी सुतन विचारेजी ॥

मोहन तुमने चेरी चेरी दो कुल लाजन मारेजी । अब सखियन सँग नाचन सीखे नाचो भवन हमारेजी॥२५६॥

गारी । देखो मनमोहनकी बात भोजन करता मटकै ॥ सखीरी याको दूध दहीको भोग गरे घेवर अटकै ॥ वहतौ नेक नहीं सरमाय बैठा पानी गटकै । जाको नाचन विद्यायाद रह्यो काहू नटकै ॥ धन धन नगरीके भाग दरश भयो बेखटके । पद्मइया बलिहार गरे माल लटकै ॥ २५७ ॥

गारी । सुन समधन मेरी जिजमान रसीले तेरे दोनयना । समधी समधन चिरजियो खुश राखैं भगवान॥ छोरी तुम्हारे नितानित होवैं हम आवैं लडुवा खान । समधन पौढी सेजपै समधी दाबै पांव ॥ हम तुम खेलैं नयन मटक्का लोग करैं बदनाम ॥ सभी बराती मोहे समधन कर सोलह शृंगार । तुम्हरा रूप सलोना कहिये पदमइया वलिहार ॥ २५८ ॥

गारी ॥ गारी सुन्दर श्याम सुनो चितलायके । तुमको देहिं सुनाय मधुर धुन गायके ॥ उग्रसेनकी नारि सुन्दर एक कामिनी ॥ नानी लगै तुम्हारि मनोहर भामिनी ॥ असुर काल एक नाम आय उन हर लियो । उग्रसेनको रूप धार कौतुक कियो ॥ तासुत जन्मो कंस ममा नंदलालको । और सुनो एक हाल लाल ततकालको ॥ दोपति किनहूं नासुने ना काहू नारके । किये द्रौपदी पांच लाज

जनि मारकै । सो भामी घनश्याम तुम्हारी लाडली सभामें नगिन जब भई तुम्हारी आडली । गारी हलधर पार्थ सुनो चितलायकै । मधुर मधुर मुसिकाय कछुक शरमायकै ॥ २५९ ॥

दोहा–कर चाहत कर मिलनको, श्रवण सुननको वैन ॥
मनचाहतहै मिलनको, मुख देखनको नैन ॥१॥
पीतम पाती वे लिखैं, जिनके पी परदेश ॥
तनमें मनमें नयन में, उनके कौन संदेश ॥ २ ॥
पीतम बसत पहाड पर, हम यमुनाके तीर ॥
अबके मिलना कठिनहै, पैरन पड़ी जंजीर ॥३॥
प्रीति जो कीनी ईखसे, सब विधि रसकी खान ॥
जहां गाठ वहँ रस नहीं, यही प्रीतिकी हान ॥४॥
पीतम तुम मत जानियो,तोहिं बिछुरत मोहिं चैन॥
जस दाझी वन लाकडी, सुलगतहै दिन रैन ॥५॥
नयना तोहिको पटकदूं, टूक टूक होजांय ॥
जहँ तुम देखत रूपको, ह्वाहीं रहत लुभाय ॥६॥
नयननकी करूं कोठरी, पुतरी देहुँ बिछाय ॥
पलकनकी चिक डारकै, पीतम लेहुँ बुलाय ॥७॥
सोना लेने पीगये, सूना करगये देश ॥
सोना मिला न पी फिरे, रूपा होगये केश ॥ ८ ॥
चल सखि चौसर खेलिये, कर बाजीकी होर ॥
हारूं तौ मैं पीवकी, जीतूं तौ पिय मोर ॥ ९ ॥

स्मरण । हमैं वह याद रही मुसिक्यान ॥ मोरि २ मुख झिझकर२कै इत उत आवन जान॥१॥कबहुँ कह्यो हम नाहिं भूलिहैं तुमकहँ प्यारेप्रान ॥ तुमविन पल छिन होंय बरस-से शीलसनेहनिधान ॥ २ ॥ वह चितवन वह रूप रसीलो वह मनभावन बान । बार बार करि मान रूठिबो वह रिसानको बान ॥३॥ कबहुँ संग लै फूलडोल लखि भई मुदित सुखदान ॥ कबहुँ रास लखि हास करन अरु छाँडन मनसिज बान ॥ ४ ॥ दिनप्रति पढ़न प्रेमसागरको वह पढ़िबो, रसखान ॥ होय मुदित एक संग विहरिबो ब्रंजवन कुंजलतान ॥ ५ ॥ राग समयके वचन निबलसे वह उरहन सरसान ॥ प्रेमदृष्टि कर दीनमिश्रपै सुरपुर कियो पयान ॥ हमें वह याद रही मुसक्यान ॥६॥२६०॥

भजन ध्यान । तेरे बदन विधुकी ओर ॥ सुन प्रिया मम तृपित लोचन रहत चहत चकोर ॥ तेरे०॥लसत तव दृग मनहु प्रफुलित शरद पंकज मोर ॥ भ्रमत तापर रहत निशिदिन भ्रमरसे भ्रम छोर ॥ ते० ॥ तव तरन ताटंक श्रुति लखि ये भये अलि चोर ॥ सदा अटके रहत लटके, ललित लटके छोर ॥ते०॥ दशन द्युति दामिन निरख घन अधर अरुण वहोर ॥ पलक पंथ पसार नाचत मनहु मंजुल मोर ॥ ते० ॥ उदर अमल उदार सरतृवली तरंगहिलोर ॥ तहां विचरत मुदित मानहुँ युगल जलचर जोर ॥ ते० ॥

सुनि वचन रचना चतुर चितई विहँसि मुखमोर ॥ रहे सो छवि निरखि जकि थकि चकित दास किशोर ॥ तेरें० ॥ २६१ ॥

परज सरस्वती । जियरा घबराये सखिमोरा । सखीरी तरफत उनबिन,निशि दिन चैन न आये, हाय मोरी प्रीतम सुधि बिसराये, निपट निठुराई कीन्हीं घरजाये । जियरा घबराये ॥ १ ॥ कटत रैन मोहिं तारे गिन गिन, बरस समान बितावत हैं दिन । व्याकुल पिया बिन बिरह अगन, तन मनको हमरे जराये ॥ जियरा घबराये ॥ २ ॥२६२॥

एकताला रामकली । कृष्णचन्द्र दीनबंधु भक्ती हितकारी ॥ ऊर्ध्वपुंड्र तिलक भाल कंठ मध्य गुंजमाल निजजन प्रतिपाल नाथ पीताम्बरधारी ॥ श्यामगात कंजनयन दुष्टनको कष्टदेन कंसादिक सैनहने गरुड़की सवारी ॥ ब्रह्मा महेश औंर शारदा गणेश शेष करतेहैं नाथ नित्य वंदना तिहारी ॥ नारद श्रीकृष्णदास चरणनकी सदा आश चितमें प्रभु करो वास निशदिन वनवारी ॥ २६३ ॥

राग भैरव ध्रुवपद । यादवनाथ जक्तपति जगजीवन यज्ञपुरुप जगन्नाथ जगवंदन ॥ श्रीधर भूधर शंख चक्र गदा मुरलीधर कंस निकंदन ॥ नरहरि नारायण श्रीविट्ठल वासुदेव मथुरापति मर्दन माधो मधुसूदन योगध्यान वद्री जनारदन हृषीकेश धीरज प्रभू नंदनंदन ॥ २६४ ॥

राग खंमाच ध्रुवपद। इन्दीवर लोचन दुखमोचन करुणानिधान जानराय रामचन्द्र पतितपावन दीनबंधु॥ प्रणतपाल अतिदयालु भक्तवत्सल भुजविशाल, पाणिकमल सरकोदण्ड जनरक्षक कृपासिंधु॥ मंगलमय श्यामरूप सुखसागर जक्तभूप यातुधान मारण तुम खर दूपण और कबंध॥ लछनदास श्रीविलास याको नाम मुक्ति बास युग युग तव कीर्ति गान करत अगम निगम छन्द॥ २६५॥

राग भैरव ध्रुवपद। वंशी नाद सुरसाधिके बजाई। प्रवीन कान सप्तसुर साधेरी मधुरी धुन॥ श्रवण सुनत मोहि सुधि नारहीरी आली भनक पडी मोरे कान धुन॥ सप्तसुर तीन ग्राम इकईस मूरछन उनचास कोटि तान कहैं गुणी तानसेन सुनोहो गोपाललाल प्रथम राग भैरव जो गावैं मुनि२६६

राग भैरव प्रभाती। शीश भुजंग गंग जटाजूट भस्मअंग अरधंगी लिये संग भोरई मेरे आयोरी॥ डिमडिम डमरू बजाय सींगी धुन पूरलाय लालनको देख देख अति हुलसायोरी॥ भिक्षादेत लेत नाहीं आये विन रहत नाहिं ऐसो योगी दास कान्हड मन विरमायोहैरी॥ २६७॥

भजन। गाइये श्रीशक्ति देवि सुर मुनि भयहारी। रुधिर छीज रक्तबीज रण प्रचार मारी॥ शुम्भ औ निशुम्भ हतन सन्तन दुख टारी॥ हो प्रसन्न देतदान असुरनको हन्यो

मान,सेवक सुखदानि, मानि वेद कहैं पुकारी ॥ विपुलवल प्रवल अतिप्रचंड, चण्डमुण्डनाम दैत्य । देवन दुख जानि तानि खड्गसों प्रहारी ॥ दुर्गे दुर्गति निवारि नारद की हेतुकारि शत्रुनमन मान मर्द गद पर्द डारी ॥ २६८ ॥

भजन । अलख लख कोउ नहीं पायो, ढूँढत जन्म सिरायो । वेद विदित जाके गुण महिमा नेति नेति कहि गायो ॥ १ ॥ नामरूप व्यापक सबकाहू सबसे रहित बतायो ॥ २ ॥ निर्गुण गुणाकार कहलावत सबगुण रूप दिखायो ॥ ३ ॥ भक्तहेत वपु धार प्रगट भयो सबमें समता छायो ॥ ४ ॥ जीवकर्म वन्धनमें कर पुनि कर्मप्रधान वनायो ॥ ५ ॥ आपहि सब कर्मन फलदायक मुक्तिवान ठहरायो ॥ ६ ॥ ब्रह्मअपार अकथ तव महिमा कहत शेष सकुचायो ॥ ७ ॥ सोइ लखि अलख नामकी महिमा नारद तब गुण गायो ॥ ८ ॥ २६९ ॥

रागनी जिला । दृढ प्रेम नेमसे मानो मना, रघुनाथहैं नाथ अनाथनके ॥ हैं पुरषोत्तम मर्य्याद धाम, जेहि वेद पुकारत रामनाम, जेहि जपत मुनीश्वर आठोयाम, हिये वसत सो सत्य सनातनके॥ १॥सुर नर मुनि प्रेमाभक्ति लिये रसना रसनामको पानाकिये, निशिवासर प्रभूपद ध्यानदिये पगुधार कही श्रुति पाथनके ॥ २ ॥ हरि हेतु अकारण-मानसही,श्रुतिमत सहसानन यहै कही,कलिमें काहू नहिं

लब्धलई चेरे वनिकै नरनाथनके ॥ कछु और न नारद भाषतहै, एक राम नामरस चाखतहै, याहीको बल उर राखतहै चहैशीशकृपा हरिहाथनके ॥ २७० ॥

भजन । हम बूझकै सूझ लयो हियमें प्रणपाल दयालहैदासनके । जब भीर गंभीर पड़े जनको तब बेधत खेदत निज मनके ॥ मन मानस वास त्रिलोचनको लवलेस न राखत पापनके ॥ १ ॥ जिन प्रेमसुधा हरि यशचाखो तिन नेकछु नाय विषय राखो आनंद यहरसना भाषो बस प्रेममें नाम निवासनके ॥ २ ॥ निर्वाण निरंजन निराकार सगुण पुरुषोत्तम निराविकार त्रैलोक्यरूप सोइ धराधार भंजन गंजन भवफाँसनके ॥३॥ मैं विनय सवनकरजोरकरौं जप राम नाम मनमोह भरों विनु श्रम यह भवसागर उतरों नारद भक्तदाता दातनके ॥ ४ ॥ २७१ ॥

होरी ताल चांचर । ऐसी होरी मचाऊँ जोपै पदरज हरि पाऊं ॥ प्रेम नेम रंग घोरि बोरिकै लाल गुलाल बनाऊँ । गदगदकर नयनन पिचकारी रामललाको न्हवाऊँ । सो तन मन वारी जाऊँ ॥ १ ॥ अब अवगुण समूह अपनेको पवन प्रसंग उड़ाऊँ । पाओं पकारि अपने प्रभूजीको देख दरिद्रमिटाऊँ । आधिक आनंद बढाऊँ ॥२॥ जो जो आप पतित पावन किये सो सो तुमहिं लखाऊँ ॥ गणिका गिद्ध अजामिलकी गति तेहि गिनती में आऊँ ।

क्यों न प्रभुको पतियाऊँ ॥ ३ ॥ मैं अनाथहो शरण लईहै तुम्हरे नामको गाऊँ ॥ पाऊँ अचल भक्ति निज प्रभुकी नारद हृदय सिराऊँ ॥ नाम हियमें दरशाऊँ ॥४॥२७२॥

होरी काफी । दशरथ अजिर विहारी शरण तकिआयो तिहारी ॥ भवभंजन रंजन मन मुनिजन वेदहु कहत पुकारी। अघ अवगुण अपराध क्षमाकरि निज जन लीन्ह उवारी॥ जबहिं प्रहलाद पुकारी ॥ १ ॥ द्रुपदसुताकी लाज राख लई कौरव सभा मँझारी ॥ सबहिं विदित गजग्रस्यो ग्राहने पाओं त्राण नहिं धारी ॥ छिनकमें जाय उवारी ॥२॥ भय आतुर गयो शरण बिभीषण कह लंकेश पुकारी ॥ ह्वै प्रसन्न तेहि राज्यतिलक दियो जाउँ नाथ बलिहारी । कियो निश्चर अविकारी ॥ ३ ॥ अनपावनी भक्ति हरि दीजै कीजै नाथ सुखारी। सुत दारा धन धाम सो मन वच जानत प्रभु हितकारी ॥ नाम नारद उर धारी ॥ ४ ॥ २७३ ॥

होरी काफी ॥ रघुवर अवधविहारी लाज रख लीजै हमारी । प्रणतपाल प्रतिपालक निजजन घालक कुल सुर-आरी ॥ दानव दैत्य विदारि मारिकै कीन्ह यज्ञ रखवारी । अभय मुनिजन मखकारी ॥ १ ॥ पांच पचीस तीनके प्रेरक खल वल गर्भ अहारी । शुद्ध बुद्ध सतता विस्तारक तारक जन अघहारी । नाम सोइ जप

त्रिपुरारी ॥ २ ॥ शीलनिधान शिरोमणि शिव प्रिय उरशिरमालाधारी । राम सुजान प्रेम लखि श्रीपति पूजाकीन्ह तुम्हारी । नाथ यह महिमा भारी ॥ ३ ॥ दास आश पुरवहु करुणानिधि गावत वेद पुकारी ॥ नारद अधम अधीन दीन जन तुमसन कहत पुकारी । प्रभूसुधि लीजे हमारी ॥ ४ ॥ २७४ ॥

भजन । उमरभर मोहनींदमें सोयो ॥ सत विचार अरु ज्ञान विवेकहि सुनि गुनि हृदय न लोयो ॥ १ ॥ असत अविद्या काम क्रोध मद नीचहि कीच बिगोयो ॥ २ ॥ जासे कलिकल्याणतिहारो ताहि तनक नहिं जोयो ॥ ३ ॥ मलते मल नित धोवत बीते मिथ्या जन्म डुबोयो ॥ ४ ॥ जबतब सतसंगति स्वभावते मन तोहिको समझोयो ॥५॥ तबहिं अभेदित क्रोधित ह्वै ह्वै कटु कटिबाधित रोयो ॥६॥ अब अन्तहु सन्तहु स्वभाव गहि नारद पापन धोयो ॥ ७ ॥ २७५ ॥

रागनी प्रभाती । राम काम धाम तुम्हीं दीनन दुखहारी ॥ अधमनको अधम हरन पापिनको पारकरन जन उधार कृपासार विरद यह तुम्हारी ॥ १ ॥ धोखे में नामलेत पारहोत पापसेतु खगमृगको मुक्तिदेत पगसे शिलातारी ॥ २ ॥ भक्तनकी टेक राखि ताको वेद देत साखि पांडवन सहाय कियो लियो जन उबारी ॥ ३ ॥ नारद हिये पतित

मान पावनकर रामनाम जानि बिसार मन अयान टेक यह हमारी ॥ ४ ॥ २७६ ॥

भजन। हरिचरणनकी आश दास उर भास रहीहै ॥ चकित चितव सब ओर न दीखत तुम विनु राम सों नाम सहीहै ॥ १ ॥ जप तप योग समाधि आदि करि मुनि मन नामकी टेक गही है ॥ २ ॥ चारवेद षटशास्त्र सार मत सुरति सोमत सत्यता लहीहै ॥ ३ ॥ सन्त समाज साधु अनुशासन साधन रामहि नाम सहीहै ॥ ४ ॥ नाम प्रभाव विदित सब काहू गजगणिका गति पाय लही है ॥५॥ पाप पहार अपार तिहारे ताहि जरावत गिरिधरही है ॥ ६ ॥ नारद भ्रमत फिरत केहि कारण तारनहार तेरो हरहीहै ॥ ७ ॥ २७७ ॥

भजन देवीका। मातु मैं तव चरणन बलिहारी ॥ सौतिक शाक्तिक स्वस्तिक तववपु मैंहूँ दीन भिखारी ॥ १ ॥ अबुध न बुद्ध दानदातारी गिरागँभीर सुधारी ॥ २ ॥ ज्ञान ध्यान सब हीन छीनमति चहत सहाय तिहारी॥३ ॥ सुर नर मुनि गंधर्व आदिकी गति मति भक्ति सँभारी॥४॥ कवि कोविद पंडित मंडित जन सुर नर मुनि दुख हारी ॥ ५ ॥ जब जब देव दनुज दुख दीनो तब तब सुनेहु पुकारी ॥ ६ ॥ प्रबलखेद जब होत सुरनको अवनि त्रास भय टारी ॥ ७ ॥ शिव चतुरानन विष्णु वरा

नन जनके दुःख निवारी ॥ ८ ॥ पुरवहु आश वास हिय दीजै करहु भक्ति अधिकारी॥९॥नारद भ्रमित श्रमित चक्र तहै तुम सन करत पुकारी ॥ १० ॥ २७८ ॥

भजन । जो राम न सुमरत शुद्ध हिये भयो लाभ कहा बहुकथन किये॥चेतन चोला परम पदारथ जिन तोहि करके दया दिये ॥ ताको नाम कबहुँ नहिं लीन्हें मिथ्या जीव जिये न जिये ॥ १ ॥ कर्म मिमांसा ब्रह्म ज्ञान सिखि योग वैरागहि कहा किये ॥ सबको सार ताको भार जानि तजि हरिरस मूरख क्यों न पिये ॥ २ ॥ तनु गुदडी जीरण भई तेरी मोह सुई चितलाय सिये ॥ अंत समय लौं टांके मारे काल न एकक्षण क्षमा किये ॥ ३ ॥ द्वै अक्षर मुक्ती के दाता भावसहित जिन ग्रहण किये ॥ यह संसार घोर अति नारद विनु प्रयास तिन जीत लिये ॥ ४॥ २७९ ॥

भजन । प्रभु जगपालन गिरिवरधारी ॥ नाभि कमल से ब्रह्मा उपजे रचनासृष्टिविचारी ॥ द्वादशवर्ष कमल में बीते प्रभु माया बल भारी॥भरमत फिरेउ भेद नहिं पायो वाणी शब्द पुकारी॥नीलकमलके ऊपर राजे माया प्रबल तिहारी ॥ प्र० ॥ १ ॥ प्रथम रूप कूर्मके ऊपर शेष सहस फन धारी॥दिग्गज अष्ट लगे ता ऊपर सुभग शुण्डि सुर भारी॥ ता ऊपर वाराह दाढपर रचना रचित विचारी ॥ वसुधा धरी तासुके ऊपर माया अलख तिहारी॥तल और अतल सुतल

नीचे वितल तलातल भारी ॥ ताके नीचे वनेउ रसातल है पाताल अगारी ॥ सप्तताल पाताल बरनके वेदन जुगति विचारी ॥ ताके नीचे आप विराजे जल स्वरूप वनवारी॥ ॥ प्र० ॥२॥ भू औ भुवर विष्णु शिव ऊपर ब्रह्म लोक शुभ कारी ॥ तपसतलोक चन्द्र रवि ऊपर गऊलोक वडभारी ॥ ध्रुवमंडलके ऊपर राजे सप्तऋषी मुनि धारी ॥ ताके ऊपर तेजपुंजहै अलख पुरुप विस्तारी ॥ प्र० ॥ ३ ॥ जम्बूद्वीप और प्लक्षद्वीपहै सिंहलद्वीप विचारी ॥ कुश कुरंच अरु श्वेतशिलामिल दशयोजन विस्तारी ॥ कोटिनजीव रचे याही में को बरणै वहुभारी ॥ सप्तद्वीप गोविन्द विराजैं दीननके हितकारी ॥ प्र० ॥ ४ ॥ रामखण्ड और हिरनखण्डहै कूर्म खंड मनधारी ॥ हरीखण्ड और क्रीटखण्डहै भारतखण्ड विचारी ।।मालकेतु और भद्रखण्डहै इलहा व्रत शुभकारी॥ पृथ्वीवाटखण्डनौ कीने राज करत रजवारी॥प्र०॥५॥ खारी समुद्र सेतसागर दधि मधु घृत रूप विचारी ॥ क्षीरसमुद्र भरेहैं सातों रहत अगम जलभारी ॥ द्रोणाचल अस्ताचल पर्वत विंध्याचल वहुभारी॥उदयाचल रत्नागिरि पर्वत मलया गिरि बहुभारी॥प्र०॥६॥सबके बीच सुमेरु उदितहै तीनलोक विस्तारी ॥ ताके ऊपर चार शिखरहैं चार पुरी मनुहारी ॥ यमपुर वनी वरन वरनावर अमर अलंका न्यारी॥कहैं प्यारे द्विज सोई नर गावें जिनको भक्ति पियारी ॥प्र०॥६॥२८०॥

रागनी झंझोटी। वालि वालि२ जाँदियां वे प्यारी झुलनके ॥ सखियां तो अंखियां रसपागीं झाकि झाकि झोटा खांदियावे ॥ प्या० ॥ प्यारी पहर कुसुम रँगसारी लालनके मन भांदियांवे ॥ प्या० ॥ पुरुषोत्तम प्रभुकी छबि ऊपर तन मन नयन सिरांदियांवे ॥ प्या० ॥२८१॥

होरी रागनी काफी। ना मिलोरी सखी कहीं बंसीको वजइया। श्यामरी सूरति माधुरी मूरति चित्त न टरत चितवनको चुरइया ॥ १ ॥ ग्वाल बाल सब सखा संगले घेर लई मोहिं कुँवर कन्हैया ॥ २ ॥ बृंदावनकी कुंजगलिनमें नाचत मोहन ताता थेइया ॥ ३ ॥ श्रीहरिवंश आशचरणनकी मेरी पतिके तुमहो रखइया ॥ ४ ॥ २८२ ॥

रागदेश ध्रुवपद । पियाविन मोहिको रतिया वैरनभई । छिनना कटत मोहिं अचल भई॥पिया०॥एरी अरी वीर कैसे धरों धीर उनतो निठुर म्हारी सुधिना लई ॥ १ ॥ इतना संदेशा मेरा पियासे कहौ जाय विरहा विथा तनु घेरलई॥ धीरजके प्रभू वेग दरश दीजो चरण कमल मनलागरही पिया० ॥ २ ॥ २८३ ॥

रागनी भैरवी । वहुतेरा समझायावे लाखन वार ॥ मानत नाहिं ढीठ मनमोहन करत आपनो चाहावे॥बहु०॥ दूध दही घरही बहुतेरा काहेको छुवत परायावे ॥ वहु० ॥ नेक दहीके कारण मोहन माखनचोर कहायावे ॥ वहु० ॥

सूरश्याम यशोदाके भागों विधिना तोहिं पठायावे बहु० ॥ २८४ ॥

रागपीलू होली । होरही रंग हों होरे होरी ॥ रंगमें बोरत नहिन डरत छैल नंद कोरी ॥हो०॥ डगर डगर वगर वगर धूम मची सिगरे नगर, मोद भरे नाचत नर नारि चहूँ ओरी ॥ हो० ॥ गहतहार कर विहार कुचपट सों करत रार कैसे घर जाऊँ दइया लाजरहै मोरी ॥हो०॥ वाजत मिरदंग ताल खंजरि वीणा रसाल छुम छननन छुम छननन आनंद घनघोरी ॥हो० ॥ श्री नँदनन्द आनंद कन्द सब ब्रज उजियारो चन्द आजुरंग वरसत ब्रजराजजूकी पौरी ॥ हो० ॥ २८५ ॥

रागकाफी होली । श्यामरो अजहूं नहिं आयो, आली री हगन झरना झरलायो ॥ श्या० ॥ ब्रजयुवतिनको संग छाडके मधुवन जाय बसायो ॥ दासीकरी जाय पटरानी गोपीनाथको नाम लजायो ॥ दास कुबरीको कहायो ॥१॥ लिख पतियां छतियां क्यों जरावत ऊधो वसीठ पठायो। कहाकरूं या मित्र विसासीको दासी संदेश पठायो। मनहुं विषघोर पिलायो ॥ २ ॥ भूषण वसन राधिकाने त्यागे अंग विभूति रमायो ॥ श्रवण तुडाय पहरकर मुद्रा शृंगीनाद वजायो ॥ फागुनमें अलख जगायो ॥ ३ ॥ विधिवश जन्म लियो या ब्रजमें नाहक वैर विसायो ॥

ब्रजविलास प्रभु अटल बिहारी करत आपनो चाह्यो। लला दो वापन जायो॥ श्यामरो०॥ ४॥ २८६॥

भजन श्याम कल्याण॥ गोपी गोपाल लाल रास मंदिर माहीं॥ द्रुम द्रुम द्रुम द्रुम मृदंग झननननन रूप रंग थ्रगता थ्रगता थिलंग उघटत रसनाहीं॥ १॥ यमुनातट सुघट घाट सरगम उच्चार गात उर्फ तुर्फ लाग डाठ दम्पति अतिसाजे॥ गावत रसभरे अनंद तान ताल सुर उमंग उपजत आनंद थिरक नाचत हरपाहीं॥ २॥ वीच ग्वाल वीचवाल प्रति प्रति प्रति दुति विशाल गावत अवगत उदार निरख दृग सिराहीं॥ ३॥ राधे मुख शरद चन्द पोंछत श्रमजल अनन्द श्रीव्रजचन्द लटक २ करत मुकुट छाहीं॥ ४॥ छाये व्योमन विमान निरखत सुर शक्र भानु देवांगना निधान रीझ प्राण वारे॥ थकित भयो यमुना नीर खग मृग डग मग शरीर धन धन व्रजके कुमार वलि वलि सूरदास सुखकहे नजाहीं॥ ५॥ २८७॥

इति द्वितीयभाग समाप्त।





॥ श्रीः ॥

महामनमोहिनी ।

तीसराभाग ।



(गज़ल संग्रह)

जहाँ देखो वहाँ मौजूद मेरा कृष्ण प्याराहै । उसीका सबहै जलवा जो जहाँमें आशकाराहै ॥ १ ॥ भला मखलूक खालिककी सिफ्त समझे कहाँ कुदरत । इसीसे नत २ ऐयार वेदोंने पुकाराहै ॥ २ ॥ नकुछ चारा चला लाचार चारों हार कर बैठे।विचारे वेदने प्यारे बहुत तुमको विचाराहै॥ ३ ॥ जो कुछ कहतेहैं हम यहभी तेरा जल वाहै इकवरना । किसे ताकत जो मुँह खोले यहाँ हर शरशहाराहै ॥ ४ ॥ तेरा दम भरतेहैं हिन्दू अगर नाकूस बजताहै । तुझेही शेखने प्यारे अज़ाँ देकर पुकाराहै ॥ ५ ॥ जो बुत पत्थरहै तो काबेमें क्या जुज़ खाको पत्थरहै । बहुत भूलाहै वह इस फर्कमें शिर जिसने माराहै ॥ ६ ॥ न होते जलवागर तुमतो ये गिरजा कबका गिरजाता । नसारा कोभी तो आखिर तुम्हाराही सहाराहै ॥ ७ ॥ तुम्हारा नूरहै हर शयमें कहसे कोहतक प्यारे । इसीसे कहके हर

हर तुमको हिन्दूने पुकाराहै ॥ ८ ॥ गुनह बख्शो रसाईदो रसाको अपने क़दमों तक । बुराहै या भलाहै जैसाहै प्यारे तुम्हाराहै ॥ ९ ॥ १ ॥

वह अपनी नाथ दयालुता तुम्हें यादहो या न यादहो। वह जो कौल भक्तोंसे था किया तुम्हें यादहो या न यादहो ॥ १ ॥ सुनी गजकी जोंहीं वह आपदा न विलम्ब छिनका सहागया। वहीं दौड़े उठके पियादे पां तुम्हें यादहो या न यादहो ॥ २ ॥ वह जो चाहा लोगोंने द्रौपदीको कि शर्म उसकी सभामें लें । व बढ़ाया वस्त्रको तुमने तुम्हें याद हो या नयाद हो ॥ ३ ॥ व अजामिल एक जो पापीथा लिया नाम मरने पै बेटेका । व नरकसे उसको बचादिया तुम्हें यादहो या न यादहो ॥ ४ ॥ व जो गीधथा गणिका वोथी व जो व्याधथा व मलाह था। इन्हें तुमने ऊँचोंका पद दिया तुम्हें याद हो या न यादहो ॥ ५ ॥ खाना भीलनीके वह जूँठे फल कहीं साग दासके घरपै चल । योंहीं लाखों किस्से कहूँ मैं क्या तुम्हें यादहो या न यादहो ॥ ६ ॥ जिन वानरोंमें न रूपथा नतो गुणहीं था नतो जात थी । तिन्हें भाइयों कासा मानना तुम्हें यादहो या न यादहो ॥ ७ ॥ वह जो गोपी गोपथे व्रजके सब उन्हें इतना चाहा कि क्या कहूं । रहे उनके उलटे ऋणी सदा तुम्हें यादहो या न यादहो ॥ ८ ॥ कहो

गोपियोंसे कहाथा क्या करो याद गीताकीभी ज़रा। यानी वादा भक्तउधारका तुम्हें यादहो या न यादहो ॥ ९ ॥ यह तुम्हाराही हरिचन्दहै गो फसादमें जगके बन्दहै। वहहै दास जन्मोंका आपका तुम्हें यादहो कि न यादहो ॥ १० ॥ २ ॥

साँवले प्यारे मुझे सूरत दिखाता क्यों नहीं। दिल धड़कता है मुझे धीरज धराता क्यों नहीं ॥ १ ॥ अर्जुन को तैंने सुनाई गीता रथपै बैठकर। एकभी मुझको वचन अपना सुनाता क्यों नहीं ॥ २ ॥ जंगली भालू औ बन्दर सेभी कीथी दोस्ती। वैसा तू मुझको भी किसमत वर बनाता क्यों नहीं ॥ ३ ॥ चश्मों पर रक्खूँगा तुझको औ न छोडूंगा कभी। एक बेर मुझको तू प्यारे आज़माता क्यों नहीं ॥ ४ ॥ क्या बजाता फिरताहै पेड़ोंमें बंशी यार तू। सामने मेरे कभी उसको बजाता क्यों नहीं ॥ ५ ॥ गिड़ गिड़ाताहूँ मैं इतना पर तू कुछ सुनता नहीं। दीन बंधु बनाहै क्यों निरदै कहाता क्यों नहीं ॥ ६ ॥ बानेके आगे तेरे ताना तनैगा क्या मेरा। पै तुही तानोंसे कुछ मेरा बनाता क्यों नहीं ॥ ७ ॥ जिन्दगीका क्या ठिकाना मिलनाहो तो आन मिल। गर नहीं तो लेके खंजर मार जाता क्यों नहीं ॥ ८ ॥ प्रेमकी तुझको कसम है गरन मिलनाहो तुझे। तो तू अपना हाल मुझसे कहके जाता क्यों नहीं ॥ ९ ॥ ३ ॥

बे वफाई क्या कहूँ मैं श्याम गुलरू यारकी । हमसे खामोशी करैं कुबजासे बातें प्यारकी । अब हमैं दरवेश होने का हुकुमनामा लिखा । मुंसफी क्या खूब देखी दौलते दरबारकी ॥ फुर्कते जानामें गो दिलको नहीं होशो हवास । पर अभी हसरतहै बाकी माहरुख दीदारकी ॥ दम बदमहै दम तड़पता देखे बिन उसकी अदा । ऐ तबीबे दो जहाँ अब ले खबर बीमार की ॥ नंदके फरजंदसे अब जा कहो यों हरि बिलास ॥ अबतो वे बातें निवाहीं कौल औ इकरारकी ॥ ४ ॥

राधे २ सुरसे बंशीमें जो हरि गाने लगे । गोपियोंके हेत प्रेमानंद बरसाने लगे ॥ देख बाल अलकोंके मुँह पर हरिके ललिताने कहा श्यामघन बे तरह अब मुखचन्द पै छानेलगे ॥ रात जागेहो कहाँ राधाने पूँछा श्यामसे । जब उनींद नैन मनमोहनके अलसाने लगे ॥ गोपियोंके प्रेम की सरिताका जल ऐसा चढ़ा । ज्ञान योग ऊधोके सब तिनकेसे बहजाने लगे॥खुलगई शिवकी समाधी सुर असुर मोहित हुए। बाँसुरी सुनके सहसफन शेष लहराने लगे ॥ मिलके सखियोंने पकड जब हरिका मुख चुम्बन किया।माय यशुमति दौडियो यह कहके मुसकाने लगे ॥ प्रीति दईमारीने बात अपनीको उलटा करदिया । जिनको समझातेथे हम वह हमको समझाने लगे ॥ हमसे ऐ ऊधो कभी वह

हरि जुदा होते न थे । अबहुए कुब्जाके मीत और हमको तरसाने लगे ॥ आनके सुखराम हरि दर्शन अमी से सींचिये । गोपियोंके प्राणरूपी पद्म मुरझाने लगे ॥ ५ ॥

जिनकी रसनापर निरन्तर रटहै सीतारामकी। प्रेममें हरिके मगनहैं सुधि नहीं बिशरामकी ॥ अंधकार अज्ञान माया स्वप्नमें आता नहीं। जिनके हिरदेमें बसी मूरत मनोहर श्यामकी ॥ जिनको श्रीहरिने दियाहै ज्ञानभक्तीका प्रसाद। उनको कुछ इच्छानहीं इन्द्रादि सुख धन धामकी॥ राम कृष्ण अयहरिजनो रटते नहीं जो यह अधम । तो न रखना चाहिये मुखमें यह रसना चामकी ॥प्रार्थना सुखराम दास अपनेकी सुन लीजे दयाल । लालसाहै कृपानिधि हरिभक्त पद परणामकी ॥ ६ ॥

कीजियो दरियाफ्त ऊधोजी किसीदिन श्यामसे । क्या कभी वाकिफ नथे वह राधिकाके नामसे॥ डूब कर यमुनामें मर जावें तो कैसी बातहो । शर्म दुनियाकी नहीं डरते नहीं इलजामसे ॥जाके वृन्दाबनमें रैहां ढूँढ कुंजे आफियत। जा बजा कबतक फिरैगा गर्दिशे अय्यामसे ॥ ७ ॥

शरण हरि भक्तिकी ऊधो अब आये जिसका जी चाहै। करोडों जन्मके पातक मिटाये जिसका जी चाहै ॥ भटकनेकी नहीं हम गोपियाँ इस ज्ञान निर्गुनमें। बिचारे क्याहो तुम ऊधो भुलाए जिसका जी चाहै ॥ नहीं मिलनेका मन

मोहन बिना हरि प्रेम सुमरनके । जती हो गेरुए कपड़े रँगाये जिसका जी चाहै॥ पियासी कृष्ण दरशनकीहैं जान आईहै ओठों पर । घरमले प्रेमका प्याला पिलाए जिसका जी चाहै।हमारा मनतो वस लवलीनहै उस मोहिनी छवि पर । यह योग और ज्ञान अय ऊधो सुनाये जिसका जी चाहै ॥ कहा ललताने मनमोहनसे राधे रूठ बैठीहैं। उन्हें अब पाँव पड़ पड़ कर मनाये जिसका जी चाहै ॥ चलाहै श्यामको ले निर्दयी अक्रूर मथुराको । सखी जी दें वो या आँसू बहाये जिसका जी चाहै ॥ जो साधूजनहैं हरएक साँसमें करतेहैं भगवत याद । यह दौलत उम्र की नाँदां गँवाए जिसका जी चाहै ॥ पुजानेके लिये जो ब्रह्म ज्ञानी बनके बैठे हैं । वे पाखण्डीहैं सुखराम आजमाये जिसका जी चाहै ॥ ८ ॥

वंशी बजाके हमको बुलाना नहीं अच्छा । घर बार को यों हमसे छुड़ाना नहीं अच्छा ॥ घर बार छुड़ातेहो तो फिर हमको न छोड़ो । अपनों को यों दामनसे छुड़ाना नहीं अच्छा ॥ करना किसीपै रहम इक अदनासी बात पर । मुतलक किसीपै ध्यान न लाना नहीं अच्छा ॥ हमतो उसीमें खुशहैं खुशीहो जो तुम्हारी । फिर हमसे छिपाकर कहीं जाना नहीं अच्छा ॥ गाओ जो चाहो वंशीमें हैं राग हजारों । रट नामकी मेरे ही

लगाना नहीं अच्छा ॥ मिल जायँगे हम कुंज में मौका जु मिलैगा । गलियों में हमारे सदा आना नहीं अच्छा ॥ हरिचन्द तुम्हारेहीहैं हमतो सभी तरह । यों अपने गुलामों को सताना नहीं अच्छा ॥ ९ ॥

असीराने कफस सहने चमनको याद करतेहैं । भला बुलबुलपै योंभी जुल्म अय सइयाद करतेहैं ॥ दमे रफ्तार आतीहै सदा पाजेबसे तेरी । लहदके खुफ्तगाँ उट्ठो मसीहा याद करते हैं ॥ बतादे अय नसीमे सुबह शायद मरगया मजनूं । ये किसके फूल उठतेहैं जो गुल फरियाद करतेहैं ॥ मसल सचहै बशरको कद्रे निअमत बाद होतीहै ॥ सुनाहै आज तक हम को बहुत वह याद करत हैं ॥ लगाया बागबाँ ने जख्म कारी दिलपै बुलबुलके । गरीबाँ चाक गुंचे हैं तो गुल फरियाद करते हैं ॥ रसा आगे न लिख अब हाल अपनी बेकरारी का । बरंगे गुंचे लब मजमूं तेरे फरयाद करतेहैं ॥ १० ॥

तेरी सूरत मुझे भाई मेरा जी जानताहै । जो झलक तूने दिखाई मेरा जी जानताहै ॥ अरे जालिम तेरे इस तीरे निगहसे हमने चोट जैसी कि है खाई मेरा जी जानताहै ॥ खाँयगे जहर नहीं डूब मरें गे जाकर जो है कुछ जीमें समाई मेरा जी जानताहै ॥ कत्ल करके न खबरली मेरे कातिल अफसोस । जाँ इसी दुखमें गँवाई मेरा जी जानताहै

प्यारकी वह तेरी चितवन व नशीली आँखें । दिलको किसतरहहैं भाई मेरा जी जानताहै ॥ देके जी औरपै जीने का मजा खो बैठे । जीते जी जीपै बनआई मेरा जी जानताहै ॥ सब्रकी फौजके पाँ उठगये दिलहार गया । आँख तूने जो लड़ाई मेरा जी जानताहै ॥ ख्वाबसा होगया शब को तेरी सोहबतका खयाल । हाथ वह फेर न आई मेरा जी जानताहै ॥ दाग ये दिलपे रहेगा कि तेरे कूँचे तक । थी रसाकी न रसाई मेरा जी जानताहै ॥ ११ ॥

दिल मेरा लेगया दगा करके । बेवफा होगया वफा करके ॥ हिज्र की शब घटाहीदी हमने । दास्तां जुल्फकी बढ़ा करके ॥ शोलारू कह तो क्या मिला तुझको । दिल जलोंको जला २ करके॥वक्ते रेहलत जो आये बालीं पर। खूब रोये गले लगा करके ॥ सर्वे कामत गजब की चालसे तुम । क्यों कयामत चले बपा करके॥खुद बखुद आज जो वह बुत आया । मैंभी दौडा खुदा २ करके ॥ क्यों न दावा करे मसीहा का । मुर्दे ठोकरसे वह जिला करके ॥ क्या हुआ यार छिपगया किस तर्फ । इकझलकसी मुझे दिखा करके ॥ दोस्तो कौन मेरी तुरबत पर । रोरहाहै रसा रसा करके ॥ १२ ॥

फिर मुझे लिखना जो वस्फे रूये जाना होगया । वाजिब इस जापर कलमको शिर झुकाना होगया । सरकः

शी इतनी नहीं लाजिमहै ओ जुल्फे सियाह । वसकि तारीक अपनी आँखोंमें जमाना होगया ॥ अय अजल जलदी रेहाई दे न बस ताखीरकर । खानए तनभी मुझे अब कैदखाना होगया ॥ आजतक आईना बस हैरानहै इस फ़िक्रसे । कब यहाँ आया सिकन्दर कब रवाना होगया ॥ बात करनेमें जो लब उसके हुए जेरो जबर । एक सायतमें तहो बाला जमाना होगया ॥ देखली रफ्तार उस गुलकी चमनमें क्या सबा । सर्वको मुशकिल कदम आगे बढ़ाना होगया ॥ जानदी आखिर कफसमें अन्दली बे जारने मुजदः ऐ सइयाद वीराँ आशियाना होगया ॥ तौस ने उमरे रवाँ दमभर नहीं रुकता रसा । हर नफ़स गोया इसे इक ताजियाना होगया ॥ १३ ॥

दिल मेरा तीरे सितमगरका निशाना होगया । आफिते जाँ मेरे हकमें दिल लगाना होगया ॥ होगया लागर जो इक लैली अदाके इश्कमें । मिस्ले मजनूं हाल मेराभी फँसाना होगया ॥ खाकसारीने दिखाया बादे मुरदनभी उरूज । आसमाँ तुरबतपै मेरी शामियाना होगया ॥ ख्वाबे गफ़लतसे जरा देखो तो कब चौंकेहैं हम । काफिला मुल्के अदमको जब रवाना होगया । फस्ले गुलमेंभी रिहाईकी न कुछ सूरत हुई । कैदमें सय्याद मुझको इक ज़माना होगया ॥ बादे मुरदन कौन आताहै खबरको अय रसा । खत्म बस कूँचे लहद तक दोस्ताना होगया ॥ १४ ॥

फसादे दुनिया मिटा चुकेहैं उसूले हस्ती उठाचुकेहैं। खुदाई अपनेमें पाचुकेहैं मुझे गले वह लगाचुकेहैं ॥ नहीं नजाकत से हम में ताकत उठायें जो नाजे हूरे जन्नत। कि न जे शमशीरे पुर नजाकत हम अपने सरपर उठाचुकेहैं ॥ नजातहो या सजाहो मेरी मिलै जहन्नुम कि पाऊं जन्नत। हम अबतो उनके कदमपै अपना गुनह भरा शिर झुका चुके हैं ॥ नहीं जबाँ में है इतनी ताकत जो शुक्र लायें बजा हम उनका ॥ कि दामे हस्तीसे मुझको अपने इक हाथमें वह छुड़ा चुकेहैं ॥ वजूदसे हम अदममें जाकर मकीं हुए लामकांके जाकर। हम अपनेको उनकी तेग खाकर मिटा मिटा कर बना चुकेहैं ॥ यहीहैं अदनासी इक अदासे जिन्होंने बरहमहैकी खुदाई। यहीहैं अक्सर कजा के जिनसे फ़रिश्ते भी जक उठाचुकेहैं ॥ यह कहदो बसमौत से हो रुख्सत क्यों नाहक आईहै उसकी शामत। कि दूर तलक वह मसीह खसलत मेरी अयादतको आचुके हैं ॥ जो बात मानें तो ऐन शफ़क़त नमानें तो ऐन हुस्ने खूबी। रसा भला हमको दख्ल क्या अब हम अपनी हालत सुना चुकेहैं ॥ १८ ॥

दश्त पैमाईका गर कस्द मुकर्रर होगा। हरसरे खारपए आबिला नश्तर होगा ॥ मैकदे से तेरा दीवाना जो बाहर होगा ॥ एकमें शीशा और एक हाथमें सागर

होगा ॥ हलकये चश्मे सनम लिखके यह कहताहै कलम ॥ वसकि मरकज से कदम अपना न वाहर लेगा ॥ दिल न देना कभी इन संग दिलों को यारो । चूर होवेगा जो शीशा तहे पत्थर होगा ॥ देख लेगा वह अगर रुखकी तजल्ली तेरे । आईना खानये मायूसी में शशदर होगा ॥ चाककर डालूंगा दामान कफन वहशतसे । आस्ती से न मेरा हाथ जो वाहर होगा॥ अय रसा जैसाहै वरगश्ता जमाना हमसे।ऐसा वरगश्ता किसीका न मुकद्दर होगा ॥ १६ ॥

नींद आती नहीं धड़केकी वस आवाजसे । तंग आयाहूं मैं उस पुरसोजे दिलके साजसे । दिल पिसाजाताहै उनकी चालके अंदाजसे । हाथमें दामन लिये आतेहैं वह किस नाजसे ॥ सैकडों मुरदे जिलाये ओ मसीहा नाजसे। मौत शरमिन्दा हुई क्या क्या तेरे अयजाजसे ॥ बागवाँ कुंजे कफ़समें मुद्दतोंसेहूँ असीर । अव खुलें परभीतो मैं वाकिफ़ नहीं परवाज़से । कब्रमें राहतसे सोयेथे नथा महशरका खौफ। बाज़ आए अय मसीहा हम तेरे अयजाजसे ॥ बाये गफलतभी नहीं होती कि दमभर चैनहो । चौंक पड़ताहूं शिकिश्ती होशकी आवाजसे ॥ नाजे माशूकानासे खाली नहीं है कोई बात । मेरे लाशेको उठाए हैं व किस अन्दाजसे ॥ कब्रमें सोएहैं महसरका नहीं खटका रसा । चौंकने वाले हैं हम कब शूरकी आवाजसे ॥ १७ ॥

फिर आई फस्ले गुल फिर जख्मे दिल रह २ के पकते हैं। मेरे दागे जिगर फिर सूरते लाला लहकते हैं ॥ नसीहतहै अबस नासिर यहाँ नाहकही बकते हैं । जो वहके दुखते रजसेहैं वह कब इनसे वहकतेहैं ॥ कोई जाकर कहो यह आखिरी पैगाम उस बुतसे । अरे आजा अभी दम तनमें बाकीहै सिसकते हैं ॥ न बोसा लेने देतेहैं न लगतेहैं गले मेरे। अभी कम उम्रहैं हर बात पर मुझसे झिझकतेहैं॥ व गैरोंको अदासे कत्ल जब शफ्फाककरताहै। तो उसकी तेगको हम आह किस हसरतसे तकतेहैं ॥ उड़ा लायेहो यह तर्जे सखुन किससे बताओतो । दमे तकरीर गोया बागमें बुलबुल चहकतेहैं ॥ रसाकीहै तलाशे यारमें वह दश्त पैमाई । कि मिस्ले शीशा मेरे पाँवके छाले झलकतेहैं ॥ १८ ॥

खयाले नावके मिजगाँमें बस हम शिर पटकतेहैं। हमारे दिलमें मुद्दतसे ये खारे गम खटकतेहैं ॥ रुखे रौशनपै उसके गेसुए शबगूं लटकतेहैं । कयामतहै मुसाफिर रास्ता दिनको भटकतेहैं ॥ फुगां करतीहै बुलबुल यादमें किस गुलके अय गुलचीं । सदा इक आहकी आतीहै जब गुंचे चटकतेहैं ॥ रिहा करता नहीं सइयाद हमको मौसिमे गुलमें । कफसमें दम जो घबराताहै सर देदे पटकतेहैं । उड़ादूंगा रसामें धज्जियाँ दामाने सहराकी । अबस खारे बियावाँ मेरे दामनसे अटकते हैं॥ १९ ॥

कहो बुलबुलसे लेजावे चमनसे आशियां अपना। पढे गर सद हजार अफसूँ न होगा बागबां अपना। उठा॰ कर लेचली बुल२ चमनसे आशियाँ अपना। कहो गुलसे कि लेओ वेवफा हमसे मकाँ अपना॥ हुई जब बाग से रुखसत कहा रोरो के या किसमत। लिखाथा यों कि छूटे फस्ले गुलमें खानमाँ अपना॥अरे सइयाद यों चाहे तो जी वो जाँसे हाजिरहूं। वलेकिन तौक कुमरीकी तरह करके निशाँ अपना॥ मेरा जलताहै जी उस बुलबुले बेकसकी गुरबत पर। कि गुलके आसरे पर यों लुटाया खानमां अपना॥ चली जब बागसे बुलबुल लुटाकर खानमाँ अपना। न छोड़ा हाय बुलबुलने चमनमें कुछ निशाँ अपना न तूने गुल किया अपना न बुलबुल बागबाँ अपना॥ चमनमें किस भरोसे पर लुटाया खानमाँ अपना॥ यह हसरत रहगई बश किसमजे से जिन्दगी कहती। अगर होता चमन अपना गुल अपना बागबाँ अपना॥ अलम कर इस कदर रोई कि रुसवा होगई बुलबुल। डुबाया हाय आँखों ने तमामी खानुमाँ अपना॥ मगर दिलसे बतारखता अली गौहरसे प्यारे को। वह हुक्मे शाही रखताथा चले था मिह्रबाँ अपना॥ २०॥

बतादें हम तुम्हारे आरिजो काकुलको क्या समझें। उसे हम सांप समझें और इसे मन सांपका समझें॥ यह

क्या तसबीहै बेहूदह यह क्यों मूंजीसे निसबत दें । उसे वर्क और इसे सावनकी हम कालीघटा समझें ॥ घटा और वर्क क्याहै क्यों घटाकर इनको निसवतदें । उस वर्गे समन और इसको संबुलकी घटा समझें ॥ नवाताते जमींसे इनको क्या निसबत मुआज अल्लाह । हुमा आरिजको और काकुलको हम जुल्ले हुमाँ समझें ॥ गलतही होगई तशबीह यहभी एक तायरसे । इसे जुल्मात और इसको चश्मये आवे वका समझें ॥ जो कहिये यह फकत मकसूदथी खुशरो सिकन्दरके । यदे वैजा इसे और उसको मूसाका असा समझें ॥ अगर है भी पसंदे खातिरे वाला न आवेतो । उसे वक्ते नमाजे सुबह और इसको अशा समझें ॥ जो इन तशबीहों सेभी दाग उन दोनोंमें आताहो । उसे कन्दीले कावः इसको कावः की रदा समझें । हकीर इन सारी तशबीहों को रद करके यह कहतेहैं । सवैदा इसको समझें और उसे नूरे खुदा समझें ॥ २१ ॥

अगर गफलतसे बाज आया जफाकी । तलाफीकीभी जालिम ने तो क्याकी ॥ मुझे उम्मेदथी मिहरो बफाकी । वले जालिमने जब देखो दगाकी ॥ अभी इस राहसे कोई गयाहै । कहे देतीहै शोखी नस्त पाकी ॥ सबाने उसके कूँचेसे उड़ाकर । खुदाजाने हमारी खाक क्या की ॥ ग्र

कुछ तेजी चली बादे सबाकी । बिगडने परभी जुल्फ उसकी बना की ॥ विसाले यारसे दूना हुआ इश्क । मरज बढ़ता गया जों जों दवा की॥मरीजे इश्क ये अच्छा न होगा । तबीबोंने बहुत इसकी दवा की ॥ मरज अपना नहीं अच्छा हुआ कुछ । तमामी उम्र ईसाने दवाकी ॥ तबीबो क्या दवा करतेहो मेरी । है दीदारे सनम सूरत शिफाकी ॥ हुआ मैं दर्दं उल्फतसे न अच्छा । तबीबोंने बहुत मेरी दवाकी ॥ लगी ठोकर जो पाये दिलरुबाकी । महीनोंतक मेरी तुरबत हिलाकी ॥ न आया चैन इकदम वस्लमेंभी । घटा की रात और हसरत बढाकी ॥ हमारे आइने दिल को न छेडो । कसम तुमको बुतों अपने खुदा-की ॥ नहानेमें जो अब्रे जुल्फ टपका । उलझ कर कानसे बिजली गिराकी ॥ हवासे जुल्फ आरिज पर हिलाकी॥ कि बदली चांदके सदके हुआकी ॥ सुँघातीहै हमैं बू गुलकी लाकर । करूं मिन्नत न क्यों बादे सवाकी ॥ तपे उल्फते उदू क्या २ जलाहै । हकीकत खुलगई रोजे जजाकी ॥ मेरादिल लेलिया बातोंहीं बातों । चलो बोलो न बस तुमने दगाकी ॥ मिले बोसे रकीबोंको हजारों । भला हमने तुम्हारी क्या खताकी ॥ न आओगे जनाजे पर अगर तुम । रहैगी रूह मेरी तुमसे शाकी ॥ अदमहै याकि यह कूये सनमहै । चली जातीहै ह्यां खलकत खुदाकी ॥

सवा जलदी खबरदे जाके उनको । कि हालत देखलें मेरे निजअकी ॥ किसीने गर कहा मरताहै मोमिन । कहा मैं क्या करूं मरजी खुदाकी ॥ २२ ॥

निगाहे यार हमसे आज बेतकसीर फिरतीहै । किसीकी कुछ नहीं चलती कि जब तकदीर फिरतीहै ॥ कभी तो खैंच लावेगी उसे गोरे गरीबाँ तक । कि मुद्दतसे हमारी खाक दामनगीर फिरतीहै॥तेरी तलवारका मुँह हमसे फिर जावे तो फिरजावे । हमारी खाक कब कातिलतहै शमसीर फिरती है।मकामें इश्कमें शाहो गदाका एक रुतबाहै।जलेखां हरगली कूंचेमें बेतौकीर फिरतीहै ॥ तेरा दीवाना जबसे लुट गया सहराये वहशतमें । वगोले की तरहसे ढूंढती तसवीर फिरतीहै ॥ मुरक्काहै मेरी आँखोंमें क्या याराने रफतःका । जो नजरोंके तले हरएककी तसवीर फिरतीहै ॥ मैं उस लैलीका दीवाना हूं जो सहरामें अय गाफिल । बगलमें अपने मजनूं की लिये तसवीर फिरतीहै ॥ २३ ॥

कटी गुनाहोंमें उम्र सारी इलाही तोबा इलाही तोबा। मैं बन्दा खाकी तू रव्वबारी इलाही तोबा इलाही तोबा ॥ गुनाहकी गठरी धरीहै शिरपर कदम जमींसे उठाऊं क्योंकर । कडी है मंजिल औ बोझभारी इलाही० ॥ १ ॥ क़बरकी सख्ती फसाने मरकब ख़तर फरिश्तोंका पहली मंजिल । यह घर अकेला वह कब्रतारी इलाही तोबा

इलाही तोवा ॥ २ ॥ गुनाहकी वसली रखीहै अपनी गिरहहै जैसे कुरॉपै ऑसू । करूंगा सिजदेमें समॅशारी इलाही तोवा इलाही तोवा ॥ ३ ॥ मुसाफिराना सरायें फानीमें ऐसे सोयेके फिर न चौंके । सरहाने आके अजल पुकारी इलाही तोवा इलाही तोबा ॥ ४ ॥ तलस्तडूबा हुआहै यारो गुनॉके दारियामें सरसे पातक । ये सर गिरानी वो समॅशारी इलाही तोबा इलाही तोवा॥५॥ २४ ॥

कोई है कलकसे शिकिश्तादिल कोई गमसे सीना फिगारहै ये । उठाये लोगोंने गमपै गम न हिसावहै नशुमारहै ॥ किये जोर जुल्मये मुत्तसिलके जमाना गमसे हय मुजमे हिल । वले बेकसोंकी तरफसे दिल अभी उस फलकको गुबारहै ॥ हुई एकबयक ये उदासियाँ न वो गुलरहे न वो बोस्तां । ये कहांसे आगई अब खिजाँ न वो बागहै न बहारहै ॥ रहे क्यूं न अश्कसे चश्मनम हुआ केसा देहलीमें हाय गम । पस रोज इसीकाहै एक अलमकि उजड़ गयाके दयारहै ॥ ये बला है गमकी गिरानियाँकेहै जिन्दगीसेभी नॉगजॉ । मुझे छोड़ गईहै अजल कहाँ जो साँस लेनाभी वारहै ॥ जो खुशीसे रहतेथे खन्दाँ लब वोहैं गमके हाथोंसे पुरतअब । पड़े यक बयक ये अलममें सब नतो सब्रहै न करारहै ॥ कहाँहै वो फरहते नोहगर न अलममें इतनाहो चश्मेतर । नहीं खूब रोना ये सरबसर कि जिगरपे गमसे बुखारहै ॥ २५ ॥

हुए दफन जोकेहैं बेकफन उन्हें रोना अब्र वहारहै। के फरिश्ते पढते हैं फातहा न नशानहै न मजारहै। नथा शहर खुल्दसेभी कम सभी जा खुशीथी नथा अलम। चली ऐसी बादे समूमें गम न वो रंज है न बहार है॥ कहूं क्योंके अपनी हो जिन्दगी कोई जाये अमन नहीं रही। कहीं तेग मौत खिचीहुई कहीं फाँसीहै कहीं दारहै॥ फिरे दश्त बदश्त तबाहं सब बुरे दिन दिखाये फलक ने। अब नहीं थमते अश्कहैं रोज शब यही शग्लहै यही कारहै॥ नवो लोगहैं नवो अन्जुमन जिसे देखो गममेंहै नारेजन। नवो सैरे बाग नवो चमन जहां गुलथे कसरते खारहै॥ जो दुशाला पोश थे मिस्ले गुल जो लबोंपे रखतेथे जामेंमुल। बने दश्त गमकेहैं खारे गुल न कबाहै तनपै नतारहै॥ हुई नंग उम्मते मुस्तफा नहीं उठता सदमा अजाबका। कहीं रहन जल्दहो याखुदा बुरे बख्तका तुही यारहै॥ कहीं वो गजलहै ये अय मुबीं जिसे सुनके रोतेहैं महजबीं वोहै कौन जिसको के गमनहीं हां सबका सीना फिगारहै॥ २६॥

दिल मेरा जुल्फ सिया डस गइ नागन बनकर। बेगुना दोस्तने मारा मुझे दुश्मन बनकर॥ मरमिटा जान गई रंज असीरीके सहे। पाये बुलबुलने ये फल आशके गुलशन बनकर॥ उस परीने लबे गुलरंगपे मिस्सी जो

मली । और समेटा वह दहन गुंचये शोशन बनकर ॥ हाथ उठाओगे मेरे कत्लको वेजुर्म जो तुम । तेग बाजूसे लिपट जायगी जोशन बनकर ॥ बाल उसने जो जनाजेपै मेरे खोलदिये । सबने जाना के परी आईहै जोगन बनकर ॥ आज उस गुलका अजब रंग हुआ पीकेशराब । चम्पई गाल दमकने लगे कुन्दन बनकर॥ दोस्त जब तकहै खुदा कुछ नहीं परवा मूनिस । क्या करेगा कोई हासिद मेरा दुश्मन बनकर ॥ २७ ॥

बदलीहै तूने हमसे नजर कुछ नकुछ तोहै । दिलमें गुबार रश्के कमर कुछ नकुछ तोहै ॥ है उनकी सुये दरजो नजर कुछ नकुछ तोहै । देताहै इन्तजार खबर कुछ न कुछ तोहै ॥ शाना उधर खिंचा तो इधर जुल्फ खिंचगई । खुलताहै कस्मो कशसे येशिर कुछ नकुछ तोहै ॥ कासिद जवाबे खत लिये आताहै शाद शाद ॥ बेशक खुशीकी आज खबर कुछ नकुछ तोहै ॥ तुम बद गुमां हुए जो इधर आके फिर चले । दिलमें खयाल और मगर कुछ नकुछ तोहै ॥ परदेम हमसे पर कहीं इकरारहै जरूर । आरास्ता जो आजहै घर कछ नकुछ तोहै । उम्मीद आज फिर शबे फुरकतमें चश्मे नम । तूफां फिराने वाला सहर कुछ । नकुछ तोहै । मिलने लगीहै हमसेभी अब गाहे २ चश्म । नालोंका अपने उनपे असर कुछ नकुछ तोहै । क्यों कर

कहूँकि वस नहीं आशक कहीं शरीर। तू रोताहै जो दो दो पहर कुछ नकुछ तोहै ॥ २८ ॥

यारथा गुलज़ारथा मयथी फिज़ाथी मय नथा।लायके पावोस जाना क्या हिनाथी मैं नथा ॥ हाथ क्यों बाँधे मेरे छल्ला अगर चोरी गया। ये सरापा शोखिये दुज़दे हिनाथी मैं नथा ॥ बेखुदीमें लेलिया बोसा खता कीजे मुआफ़। ये दिले बेताबकी प्यारे खताथी मैं न था ॥ नातवानीने बचाई जाँ मेरी इस हिज्रमें। कोने २ ढूँढती फिरती कज़ाथी मैं नथा ॥ मैं ससकता रहगया और मरगये फरहादो कैस। क्या उन्हीं दोनोंके हिस्सेमें कज़ा थी मैं नथा। मैंने पूंछा क्या हुआ वह आपका हुस्ने शबाब। हँसके बोला वो सनम शाने खुदाथी मैं नथा ॥ ऐ ज़फ़र दिलपर मेरे यह दाग़ कैसा रहगया। ख्वाने बागे यारमें खल्के खुदाथी मैं नथा ॥ २९ ॥

खरीदारे बुताँ जिस दरजा ग़म लेते तो हम लेते। क्यामत तकतो लेते कमसे कम लेते तो हम लेते ॥ कलाम अल्लाहको जैसे मुसल्मां चूम लेतेहैं। यूंहीं एक वोसये रूये सनम लेते तो हम लेते ॥ जो हम बिस्तर न होता वो कबावे सीखकी सूरत। उसे क्या करवटें शबभर वहम लेते तो हम लेते ॥ ज़बाने हालसे छाले ये मुझ वहशीसे कहतेहैं। कि तेरे पाँव पड़पड़के कदमलेते तो हम लेते ॥

खुदाकरता गर एवज़ आशकोंके दिल दुखानेका । तो फिर बदला बुतानेपुर सितम लेते तो हम लेते ॥ गोहर सीपोंसे पत्थरकी तरह लाले बदख्सानी । अता करता जो वो अब्रे करम लेते तो हम लेते ॥ जोकत्ल अय शाद सौबारीभी होते वो नुसेरी है । अली अल्लाहही कहकर जनम लेते तो हम लेते ॥ ३० ॥

बलाँये जुल्फे जानाकी अगर लेते तो हम लेते । बलायें कौन लेता जानपर लेते तो हम लेते॥उसे क्या कामथा वो बेखबर क्यों पूँछता फिरता । दिले गुमगश्तेकी अपने खबर लेते तो हम लेते॥न लेता मोल कोई सौदा बाज़ारे मुहब्ब-तका । मगर कुछ जान अपनी वेचकर लेते तो हम लेते ॥ कोई क्या तेरा करता नाले करते२मरजातेजो बदला तुझ से चर्खेकी नेवर लेते तो हम लेते॥नहोता हमसे हम बिस्तर अगर तू तेरा क्या जाता । तड़पकर करवटें ह्यां रातभर लेते तो हमलेते ॥ नहोता कोई मिन्नतकश तेरी शमशीरका हरगिज़ ये अहसाँ सरपै अय बेदाद गर लेते तो हम लेते ॥ लगाया जाम मय होठोंसे उसने हमको रश्क आया । के बोसा उसके लबका अय ज़फ़र लेते तो हम लेते ॥ ३१ ॥

तासीर तेरे इश्कने मुझपर जरी नकी । मैं क्या करूं नसीबने कुछयावरी नकी ॥ दिलबर समझके दिलको दिया उसके हाथमें । दिल लेगया मेरा मेरी कुछ दिलवरी॥

नकी ॥ अय रश्के मुशतरी तेरी खूबीके सामने।खुरशेदनेभी जरेंसे कुछ हमसरी नकी ॥ नजदीकथा केपहुँचे सिकन्दर लबे हयात । अय खिज्र हाँ तलक भला क्यों रहवरी नकी॥ ३२ ॥

बहार आतेही नकशा जमगया गुलशनकी महफिलका। समनका सर्वका कुमरीकी गुनचेका अनादिलका ॥ मैं शैदा एकका दोका नहीं उन सबपे आशकहूँ । जनखदाँका जबाँका चश्मका रुख्सारका तिलका । उड़ाहै देखकर रंग आफताबे रूए जानाँका । परीका हूरका मेहरे फलकका माहेकामिलका ॥ नहीं शक इस्में इश्के गुलरुखाँ इन सबका दुश्मनहै । जिगरका सीनेका जागेहजीका, रूहका दिलका ॥ जहरे सुंवहने सब कारखाना करदिया अबतर । फरोगे शमाका परवानेका अरबाब महफिलका ॥ बका अस्ला नहीं अहवाल सबका हय हुवाव आसा । सदफका मौजका गव्वासका दरियाका साहिलका ॥ फनाके बाद रहताहै तमन्नाजीके खैर अकसर । सखुनदांका सखुनका शअरका उस्ताद कामिलका ॥ ३३ ॥

फिर बहार आई चमनमें जख्मे दिल आलेहुए । फिर मेरे दागे जनूँ आतिशके पर कालेहुए॥ पाये नाज़ुक उसने जब रक्खे हमारी कब्रपर । पोर हाये संगे मरमर रुईके गालेहुए ॥ सुबह गरदानी रहे आमालमें जब इसकदर । दातोंकी मानिन्द मेरे हाथमें छालेहुए ॥ तुझपै अयरश्के

चमन नरगिश अगर बीमारहै । बागमें मालीको अपने जीस्तके लालेहुए ॥किसतरह छोडूं यकायक तेरी जुल्फोंका खयाल । एक मुद्दतके ये काले नागह पालेहुए ॥ जब शबे तारीकमें हम कुए जानांको चले । आगे २ जाय मशअल आतिशी नालेहुए । वाह क्या तासीरहै रुख्सार आतिश नागकी । शोलए जव्वाला तेरे कानके बालेहुए॥ याद जो आया चमनमें वो निहाले बागेहुस्न । मेरे अश्कोंसे लबालब एक कलम थालेहुए । वह परीपैकर कहाकरताहै अक्सर फक्रसे । अबतो नाशिखभी हमारे चाहने वालेहुए ॥ ३४ ॥

बुल २ को गुलिश्तांमें सताना नहीं अच्छा । दिल आशिके सादिकका जलाना नहीं अच्छा ॥ तू शमअके मानिन्द मैं परवाना सिफतहूँ । परवानेको अयशमां जलाना नहीं अच्छा । बोसेको तलब करनेसें होताहै खफा याराकहताहै ये पैगाम सुनाना नहीं अच्छा॥ तुम कौनहो जो रहमभी मुझपर नहीं खाते । हूँ खाकनशीं मुझको सताना नहीं अच्छा ॥ तनहाहूँ मैं उस बुतकीतरफ खल्कहै सारी । इज्जतरहै अल्लाह जमाना नहीं अच्छा ॥ कह ता है वो कातिल मैं उसे कत्ल करूंगा । सब कहतेहैं आशिक का मिटाना नहीं अच्छा ॥ इस इश्कका अपनेभी जमानें मेंहै शोहरा । कुछ लैली व मजनूंका फँसाना नहीं अच्छा॥

दिललेके मुकरजातेहो अच्छानहीं करते। सोते हुए फ़ितनेको जगाना नहीं अच्छा ॥ बेफैज अमानतहैं हसीनान जहांके। हरएकपै अब दिलका लगाना नहीं अच्छा ॥ ३५ ॥

अदमसे जानिबे हस्ती तलाशे यारमें आये। हवाए गुलसे हम किस बादिये पुरखारमें आये ॥ अगर बख्शेज़हे रहमत न बख्शे तो शिकायत क्या ॥ सरे तसलीम खम हैं जो मिजाजे यारमें आये ॥ न पूछो अहले महफिल हमसे दीवानोंकी बेताबी। यहां मजमा सुनायाभी तलाशे यारमें आये ॥ इशाराहै यही उनके लबे शीरींकी जानोंका। मिलानेको नमक हम शरबते दीदारमें आये ॥ खरीदारीमें आशक अपने नामों कोहैं लिखवाते। तमाशा क्या वो यूसुफ बनकेहैं बाजारमें आये ॥ ३६ ॥

कभी बन सवँरके जो आगये तो बहारे हुस्न दिखागये। मरे दिलको दाग लगागये येतो क्या शगूफा खिलागये ॥ यहीथी दुआके न आये दिल, कोई बेवफा न लगाए दिल,वो जो बेंचतेथे दवायें दिल सो,दुकान अपनीबढागये॥ यही कहताथा हमसे दमबदम, के बहार देखके भबके हम, छुटे जबके कैदे कफस से हम, तो सुना खिजाँके दिन आगये ॥ बँधे क्यों न आँसुओंकी झडी, के मुहब्बत

अपने गले पड़ी,वो जो काकुलें थीं जो अम्बरी, तो सुना कि पेंचमें आगये ॥ ओ अजब घड़ी थी कि जिस घड़ी वो हमारे रोग लगा गये । ये जफ़ा सितमका रिवाज है कोई साहेब आके रुलागये ॥ ३७ ॥

किसी बेकसको अय बेदाद गरमारा तो क्या मारा । जो आपही मररहाहो उसको गरमारा तो क्या मारा ॥ नमारा आपको जो खाकहो अकसीर बनजाता । अगर पारेको अय अकसीर गरमारा तो क्या मारा ॥ बड़े मूजीको मारा नफ्स अम्माराको गरमारा । नहंगो अजदहाओ शेर नर मारा तो क्या मारा ॥ खता तो दिलकीथी काबिल बहुतसी मारखानेकी । तेरी ज़ुल्फोंने मुश्कें बांधकर मारा तो क्या मारा ॥ नहीं वो कौलका सच्चा हमेशा कौल देदेकर । जो उस्ने हाथ मेरे हाथपर मारा तो क्या मारा ॥ तफंगो तीर तो ज़ाहिर नथा कुछ पास कातिलके । इलाही फिर जो दिलपर ताककर मारा तो क्या मारा ॥ जिगर दिल दोनों पहलू में हैं अपने उसने क्याजाने । इधर मारा तो क्या मारा उधर मारा तो क्या मारा॥गया शयतान मारा एक शिजदेके न करनेसे । अगर लाखों बरस शिजदे में सर मारा तो क्या मारा ॥ दिले बदख्वाहमेंथा मारना या चश्म बदबींमें । फलक पर जौक तीरे आहगर मारा तो क्या मारा ॥ ३८ ॥

तुझे है शौक मिलने का तो हरदम लव लगाता जा। जलाकर खुद नुमाई को भसम तनपर लगाता जा ॥

पकड़कर इश्ककी झाड़ू सफाकर हुजरये दिलको। दुईकी धूलको लेकर मुसल्लेपर उड़ाता जा॥ मुसल्ला फाड़ तसवी तोड़ किताबें डाल पानीमें। पकड़ दस्त मयपरस्तों का गुलाम उनका कहाता जा॥ न मर भूँखा न रख रोज़ा न जा मस्जिद न कर सिजदा। वजूका तोड़के कूजा शरावे शौक पीता जा॥ नहो मुल्ला न बन बाभन दुईको छोड़कर तू जा। हुकुम नाना कलन्दरका अनलहक तू सुनाता जा॥ ३९॥

जफ़ाकी इन बुतोंने या वफाकी। दिया दिल अबतो जो मरजी खुदाकी॥ नई शोखीहै चश्मे फितने जाकी। तगाफुल क्यों किया गोया हयाकी॥ हमारा दर्द देखा जाय किस्से। हमें शारूह खिस्तीहै दवाकी॥ शबे अन्दोह गमका पूछना क्या। बनाकीजो मेरे दिलपर बनाकी॥ लड़ें हैं गैरसे गुस्सा है मुझपर। कोई पूछेतो मैंने क्या खताकी॥ रहे ह्यां सुलहपरभी जंग बाहम। तबीयत उस्से मिल २ कर लड़ाकी॥ जवाबे कत्ल क्या कातिलने सोचा। कि उसको ईदहै रोजे जजाकी॥ अभी इकरार उस्का होचुकाथा। इधर देखोतो फिर हमने हयाकी॥ फिर उस बुतपर फिराहै हजरतें दाग। कसम खाईथी कावेमें खुदाकी॥ ४०॥

आशक शबे विसालमें घबराये जातेहैं। पीछेसे जान मुर्ग सहर खाये जातेहैं। बोसा किसूने चोरीसे उस गुलका

लोलिया । हम सोहबतों के नाम निकलवाये जातेहैं ॥ जारीहै उस निगारकी गैरोंसे रस्में खत।काग़ज़के घोड़े इन दिनों दौड़ाये जातेहैं ॥ लायेंगे आफतावको वह अपने जालमें । जुल्फोंके बाल धूपमें सुखलाये जातेहैं ॥ जालिमके कूँचेमें नहीं गोरो दफनका जिक्र । मुरदे वहाँ घसीटके फिकवाये जातेहैं ॥ मेरी बलायें लेके वह कहतेहैं वस्लमें । छोड़ो खुदाके वास्ते घवराये जातेहैं ॥ आँखोंपे इख्तियारहै अच्छा न रोऊँगा । कुछ आप मेरे दिलकोभी समझाये जातेहैं ॥ तुमको कसम खुदाकी खुदाके रसूलकी । हमसे छिपाके खत किसे भिजवाये जातेहैं । रेहाँ तुम्हें खुदाकी कसम सच बयाँ करो । किस गुलबदनके वास्ते गुल खाये जातेहैं ॥ ४१ ॥

आशक हुएहैं हम तेरे अय जाँ नये नये ॥ रखतेहैं दिलमें वस्लके अरमां नये नये ॥ लाखों तुम्हारी जुल्फ मुअम्बरकेहैं असीर । देखो खड़े हुएहैं परेशां नये नये ॥ वहशतने अय जनूं मुझे ऐसा कियाहै तंग । करताहूं रोज चाक गरेबाँ नये नये ॥ होताहै जब गुजर मेरा बाजारे हुस्नमें । मैं देखताहूँ यूसुफे कनआँ नये नये ॥ ह्यां दिलपे अपने दागहै हसरतके दोस्तो । ह्याँ गुल खिलारहाहै गुलिस्तां नये नये ॥ मजनूंकी तरह उस बुते लैलाके इश्कमें ।तप करचुकाहूं मैंभी बियाबाँ नये नये॥बैठेहो पास गैरके जाफिरके सामने। अब होगयेहैं आपके ख्वाहां नये नये॥ ४२॥

आमद हमारे घरमें किसी मेहलकाकीहै । ये शाने फ़िर दिगारपे कुदरत खुदाकीहै ॥ हर शअरमें सना किसी ज़ुल्फे रसाकीहै । क्यों कर नहोके अपनी तबीयत बलाकीहै ॥ जो देखताहै तेरे तजुम्मुलको अय सनम । वे साख्ता यह कहताहै कुदरत खुदाकीहै ॥ दोनों तरफहै शुक्र शिकायत का क्या मुकाम । आदत मुझे बफाकी उन्हें खू जफाकीहै । नादाँहैं जो तमीज करे खूब जीश्तमें । अच्छे बुरेहैं येक ये खलकत खुदाकीहै ॥ अंजामक्याहो देखिये सफदर फिराक में । तकलीफ इब्तदामें तुम्हें इम्तहाकीहै ॥ ४३ ॥

बाकी जहाँमें कैस न फरहाद रहगया। अफ़साना आशकों का फकत याद रहगया ॥ ये सख्त दिलतो कत्लसे नाशाद रहगया । खंजर चलातो बाज़ुए जल्लाद रहगया ॥ पाबन्दियोंने इश्ककी यकसूरखा मुझे । मैं सौ असीरियोंमें भी आज़ाद रहगया ॥ चश्मे सनमने यूंतो बिगाड़े हजार घर । एक काबा चंदरोजको आबाद रहगया ॥ मेहशरमें जाये शिकबा किया शुक्र यारका । जो भूलनाथा मुझ को वही याद रहगया ॥ उनकीतो बनपड़ी के लगी जान मुफ्त हाथ। तेरी गिरहमें क्या दिले नाशाद रहगया॥ अय दाग़ दिलही दिलमें घुले जब इश्क़से । अफसोस शौक नाले व फ़रहाद रहगया ॥ ४४ ॥

दर्दमंदोंसे न पूछो कि किधर बैठगये । तेरी मजलिसमें गनीमतहै जिधर बैठगये ॥ है गर जदीदकी ह्यां काम तकल्लुफका नहीं।ख्वाह इधर बैठगये ख्वाह उधर बैठगये॥ मुफ्त उठनेके नहीं।यारके कूंचेसे फकीर । एक बोसेके लिये बाँधके अड्ड बैठगये ॥ पीर मुरशिदकी कसमहै कि वही लेंगे वही । जबकि बिस्तर पै जमा खोलकमर बैठगये ॥ करगया काम जो माशूक सितम नेजा झुका । सैकडों मुर्ग हवा बाँधके पर बैठगये ॥ ४८ ॥

जल्वा तेरा अय सनम हरसू नजर आया मुझे । दिल रुबा किसमतसे क्या एक तू नजर आया मुझे ॥ कुछ नजर आया न जबके तू नजर आया मुझे । जिस तरफ देखा मकामेंहू नजर आया मुझे ॥ शाखमें संबुलमें गुलमें बर्गमें हर खारमें । हर गुलिस्तांमें तुही गुलरू नजर आया मुझे ॥ अपनाही बाहमो गुमांथा कुछ जोथा हमको खयाल।उठतेही परदानमें फिर तू नजर आया मुझे॥ अबतलक आखिर तुझीको देखता कायमहूं मैं। अर्शसे ताफर्श तूही तू नजर आया मुझे ॥ ४६ ॥

गज़ल फार्सी शेखसादी।कुजा शुद सर्वे मन यारबके दर बुस्तानमे बीनम्। शुदं मुस्ताक चूं कुल २ गुले रेहाँनमे बीनम् ॥ बजाये यार अगियारस्त बजाये गुल हुमा खारस्त । बजाये रोजो शबतारस्त महेताबाँ नमे बीनम् ॥

हुमा मजलिस हुमासाकी हुमा दौरानमे बाकी । कुजा याराने मुस्ताकी कसज आहानमे बीनम् ॥ कफन आलूदा पुरखूनं वजेरे खाक मदफूलम् ॥ परेशां हाल मजनूनं बजुज हैराँ नमे बीनम् ॥ जवाँ बरगस्तं अय सादी तसव्वरकूं दरी मजलिस । जबानाने अदबगश्ता कसज पीरानमे बीनम् ॥ ४७ ॥

होगा क्या दुश्मन अगर सारा जहाँ होजायगा । जबके वह बेमहर हमपर मेहरबाँ होजायगा ॥ गर हुआ इस आहे सोजांका कोई शोला बुलन्द । देख लेना खाक जलकर आस्माँ होजायगा ॥ वो जो दिलमें लगरहीहै आग बुझने की नहीं । चश्मेतरसे गरचे एक दरिया रवाँ होजायगा ॥ देखना उस चाँदके टुकडेको क्यों कर जानता। टुकडे२ दिल मेरा मिस्लो किताँ होजायगा ॥ अय जनूं तेरी बदौलत नाम मेरा आखिरश । दस्तमें हरखार के विर्दे जबाँ होजा-यगा । करतेहैं दावा मुहव्वत का जो उस शफ्फाक की । अय जफर एक रोज उनका इमतहाँ होजायगा ॥ ४८ ॥

कूंचेसे तेरे आशिके शोरीदा सरगये । सब अपने दमके साथ लिये शोरो शरगये ॥ मानिन्द बर्क चश्म जदनमें गुजरगये । येभी न समझे हम किधर आये किधर गये ॥ वादेपै तुम न आये तो कुछ हम न मरगये । कहने को बात रहगई और दिन गुजर गये ॥ कोठे पै जब चम-

कके यह नूरे जबीं चढ़ा । शमशो कमर नजरसे हमारी उतर गये॥ अहवाल किस्से पूछिये उस दिलरुबाका यार। वोभी न फिरके आये जो लेने खबर गये॥ आया न आज तक कोई लेकर जवाबे खत । कासिद गये सफीरगये नामेवर गये ॥ रोकर कहा ये मैंनेके मरताहूँ मेरी जान । हँसकर जवाब यूं दिया फिर क्यों न मरगये ॥ फूले फले न आके गुलिस्ताने देहरमें । हम वो शजर हैं बागसे जो बेसमरगये ॥ ४९ ॥

मौत उस दिनको तो तुझसे सितम ईजाद नहो । मैंतो मरजाऊं अगर जलवए बेदाद नहो ॥ जुल्फ वो दामके जिस दामसे आजाद नहो । आँख वो चोरके जिस चोर की फरियाद नहो ॥ बात का जख्महै तलवारके जख्मों के सिवा । कीजिये कत्ल मगर मुझ से कुछ इरशाद नहो॥ गैरका खून बहाना मेरी तुरबतपै जरूर । आबरूदार की मिट्टी कहीं बरबाद नहो ॥ बदगुमानी भी मुहब्बतमें बुरी होतीहै । वो यकींहो मुझे जिस बातकी बुनियाद नहो ॥ आदमी वहहै जो चितवनका इशारा समझे। मुझको मालूमहुआ मुँहसे कुछ इर्शाद नहो ॥ लाख बातेंहैं अजी दिल के फँसा लेनेकी । हमीं सइयादहैं उसके जो वो सइयाद नहो ॥ कोसतेहैं के इलाही वह दुआ देतेहैं । दागको देख के कहतेहैं कि नाशाद नहो ॥ ५० ॥

शवनमसे शबे हिज्रकी जुल्मत नहीं जाती। सो शौब-पड़े तोभी यह रंगत नहीं जाती॥ आईहुई आशककी तबीयत नहीं जाती।आतीहै तो आकर ये कयामत नहींजाती॥ खातीहै पसे मर्ग तेरे हिज्रके खंजर। दुनियासे कोई रूह सलामत नहीं जाती॥ सरजाताहै सरसे तेरा सौदा नहीं जाता। दिलजाताहै दिलसे तेरी उल्फत नहीं जाती॥ अल्लाहसे महशरमें कहूंगा तेरे आगे। मजबूरहूँ मैं उसकी मुहब्बत नहींजाती॥ बोसा तलब जो हमने किया हँसके यूं बोले। यह हुस्नकी दौलतहै लुटाई नहींजाती॥ मिलते हैं खुदही खाकमें हम फर्कहै इतना। इसदिलसे हमारेभी कुदूरत नहींजाती॥ अय दाग बुरा मान मत कुछ उसके कहे का। माशूककी गालीसे तो इज्जत नहींजाती॥ ९१॥

मुमकिन नहीं कि तेरी मुहब्बतकी बू नहो। काफिर अगर हजार बरस दिलमें तू नहो॥ क्या लुत्फ इन्तजार जो तू जल्वजू नहो। किस कामका विशाल अगर आरज नहो। महशरमें और उनसे मेरी दूबदू नहो। कहनेकी वातहै जो कोई गुफ्तगू नहो॥ कातिल अगर न शोखहो खंजर अगर न तेज। रगरगमें बेकरार हमारा लहू नहो॥ खिलवतमें तुझको चैन नहीं किस्का खौफहै। अंदेशा कुछ नहो जो नजर चारसू नहो॥ सुर्खी न तेगपर न हिना तेरे हाथमें। कातिल कहीं सफेद उदूका लहू नहो॥ ओ

आदमी कहाँहै वो इन्सानहै कहा । जो दोस्तका हो दोस्त अदूका अदू नहो॥दिलको मसल मसलके जरा हाथ सूँघिये। मुमकिन नहीं कि ख्रून तुम्हारे की बू नहो ॥ जाहिद मजा तो जबहै अजावो सवावका । दोजखमें वाद कश नहो जन्नतमें तू नहो ॥ माशूक हिज्र इस्से जयादा कोई नहीं । क्या दिल्लगीरही जो तेरी आरजू नहो ॥ ऐसे कहाँ नसीब जो वो बुतहो हम कलाम । हम तूरपरभी जायँ तो कुछ गुफ्तगू नहो ॥ दस्ते दुआको मलतेहैं तासीर अर्शसे । जो हाथ से हो या उसे वो जुस्तजू नहो॥गश आनजाय देखके कातिलको मौजखूं । नाजुक मिजाजका कहीं हलका लहू नहो ॥ है लागका मजा दिले वेमुद्दआके साथ । तुम क्या करो किसीको अगर आरजू नहो॥ये टूटकर कभी न बनेगा किसी तरहाजाहिद शकिस्त तूव शकिस्ता सबू नहो॥ अय दाग आके फिरगये वो इसको क्या करें । पूरी जो नामुराद तेरी आरजू नहो ॥ ९२ ॥

अय सखी घनश्याम बिन ये श्यामघन आने लगे। हाय ये काले बलाहक जीको डरपाने लगे ॥ देख कर कालीघटा और आली दामनकी छटा । घनके वदले नयन मेरे अश्रु बर्साने लगे ॥ आपतो कुब्जासे भूले हम को पाती योगकी । हाय ऊधोजीभी सूधो ज्ञान सिखलाने लगे ॥ रूठ जाने पर कभी जो पैर पड़तेथे मेरे । अब

पराये घर में जाकर आँख दिखलाने लगे॥ फिर कभी हमको मिलोगे या नहीं तुम कृष्णलाल। हाय गौरी तुम क्यों अब प्यारेको बिसराने लगे॥ ५३॥

रोते २ हमको ऊधो इक जमाना होगया। ख्वाब मुझको कृष्णका तशरीफ लाना होगया॥ वाहरे तेरी मुहव्वतकी सजा कैसी मिली। ऐसके बदले हम आँसू वहाना होगया॥ नामतकभी हम सभोंका उनको याद आता नहीं। इस कदर कुबरीसे उनमें दोस्ताना होगया। हम वियोगिनको भला योगन बनाने आये तुम। क्योंरे ऊधो तू जईफीमें दिवाना होगया॥ ५४॥

बजरहीहै वंशी मनमोहनकी वृन्दावनके बीच। आह क्या जादू भरीहै श्यामकी रागनके बीच॥ जीनहीं लगता मेरा जबसे सुनी वंशीकी धुन। आग ऐसी लगरही है हे सखी तनमनके बीच॥ ओ सखी चल देखि आवें छबि रँगीले श्यामकी। वह खड़ा वंशी बजाता होगा इन कुंजनके बीच॥ कृष्णजीको घेरे होंगे सब तरफ़से ग्वाल बाल। चंद्रमा जिसभांति शोभा पाताहै उडुगनके बीच। शोभासे लज्जित मदन है श्यामकी गौरी दयाल। ऐसे मनमोहनको रखना चाहिये नयननके बीच॥ ५५॥

हजारों ख्वाहिशें ऐसी कि हरख्वाहिशपे दम निकले। बहुत निकले मेरे अरमां वलेकिन फिरभी कम निकले।

अरे क्योंकर मेरा कातिल रहा क्या उसकी गर्दनपर । व खूँ जो चश्मतरसे उम्रभर यूं दमबदम निकले ॥ निकल ना खुदनसे आदमका सुनते आएहैं लकिन । बहुतबे आबरू होकर तेरे कूंचेसे हम निकले ॥ खुदाके वास्ते परदा न काबेका उठा जाहिद । कहीं ऐसा नहो ह्वाभी वही काफिर सनम निकले ॥ नहीं मुमकिन कि सीनेसे तेरा तीरे सितम निकले । जो यह निकले तो दिल निकले जो दिल निकलें तो दम निकले॥ भरम खुलजाय जालिम तेरी काकुलकी दराजीका । अगर इस तुर्रये पुर पेचों खमका पेचोखम निकले ॥ उलझनेसे न हम छूटे न तू गेसू बनानेसे । अजब जंजालथा जिससे न तुम निकले न हम निकले ॥ हुई जिसमें तवक्का खस्तगीको दाद पानेकी।वो हमसेभी जयादा खस्तये तेगे सितम निकले ॥ मुहब्बतमें नहींहै फर्क जीने और मरनेका । उसीको देखकर जीतेहैं जिस काफिर पै दम निकले ॥ ९६ ॥

चाँदसा मुख दिखाकर मुझको दीवाना किया । अपने जितनेथे सबोंसे मुझको वेगाना किया ॥ यादगारीमें सनम की होगई जंजीरपा । कुंजबनका जाना छूटा घरको बुतखाना किया ॥ हूँ तड़पती हिज्रमें तेरे नहीं इकदम चयन । शमे फुरकतको जलाकर मुझको परवाना किया । क्यूँ नहीं लेता खबर साकी दिले पज मुर्दोंकी । वादये

हिज्रांका अपने मुझको पयमाना किया ॥ कूबरीको चैन और मुझको अलमूदिन रातहै। मोहिनी अफसूँ पढ़ाकर मुझको अपसाना किया ॥ हयकनीजकसे हमागोशी हमैं क्यों पूछता । ऊधोजी उस कूबरीने उसको दीवाना किया॥ हाल हिज्राँका कहाजाता नहीं कुछभी नवल। है ठिकाना सहने दिल चश्मोंका खूंखाना किया॥ ९७॥

हाय मथुरासे कोई हरिकी खबर लाता नहीं। जिसके देखे बिन मुझे एक दम रहा जाता नहीं ॥ कूक कोयलकी मुझे लगतीहै इक बर्छी की हूक। चहचहा बुलबुलका अब मुझसे सहाजाता नहीं ॥ मिस्ले मुर्गे नीम जाँसा लोटताहूं खाकपर। क्याकहूं किस्से कहूं कुछभी कहा जातानहीं ॥ होके पानीसे जुदा जैसी तड़पती मछलियाँ। वैसे विनदेखे विहारीको रहाजातानहीं ॥ तेरे हिज्रांके मकाँ काहै सफर दूरोदराज। कूँचे फुर्कतके मैं उसके अब चला जाता नहीं॥ कहियो मधुकर जाय और उस श्यामको समझाय कर। है निकलतीजाँ सभोंकी अबभी आता क्योंनहीं ॥ हिज्रके बाइस जरा ताकत नहीं तनमें रही। सब्रके दरियामेंअब मुझसे रहाजाता नहीं ॥ ले मसीहा तू खबर जल्दीसे मुर्दा जानकर।प्राण सबके चलदिये तू दिलमें आता क्यों नहीं ॥ इश्कका सौदा नवल ऐसाहै कुछलाइन्तहा। गाहकोंसे मोल इसका कुछ कहाजाता नहीं॥ ९८॥

जाके मधुवन श्यामसुन्दर हमको तरसाने लगे। तुमभी ऊधो आके बरबस योग सिखलाने लगे॥ पीपी रटतीहैं पपइयेकी तरह घनश्यामकी । नयनजल भर २ के अपने मेह बरसाने लगे ॥ नेहमें प्यारेके कैसी रीत उलटी होगई । जिनको समझातेथे हम वो हमको समझाने लगे॥ राधे प्यारीकी दशा अफसोस क्या कीजै बयाँ । फूलसे हर अंग उनके हाय मुरझाने लगे ॥ कूबरी के संग हरिसुखराम करतेहैं विहार। अबतो गोपीनाथ कहनेसे वो शर्माने लगे ॥ ५९ ॥

क्योंकर खबर करेंगे किसी बेखबर से हम । ज़ख्मी हुएहैं आपकी तीरे नज़रसे हम ॥ अंग़यार मिस्ल सुरमा समाएहैं आँखमें । आँसकी तरह गिरपड़े उनकी नज़रसे हम ॥ देखें तो उन्पै किसतरह होतानहीं असर । लो आज नामः लिखतेहैं खूने जिगरसे हम् ॥ आगा मुझे यकीनहै मयदान हस्रमें । कौसरका जामा पायँगे खैरुल बशरसे हम ॥६०॥

जो दिल काबूमें हो तो कोई रुस्वाये जहाँ क्यूँहो।खलश क्यूँही तपिश क्यूंहो कलक क्यूँहो फुँगाँ क्यूंहो ॥ मज़ा आता नहीं थम २ के हमको रंजो राहतका । खुशीहो गमहो जो कुछहो इलाही नागहाँ क्यूंहो ॥ ये मिसरा लिखदिया ज़ालिमने मेरी लौह तुरबतपर ।जो फुरकतकीहो बेताबी तो फिर रुवाबे गिरा क्यूंहो ॥ हमेशा आदमीका

आदमी गमख्वार होताहै। यही बे ऐतवारीहो तो कोई राजदाँ क्यूंहो॥ गजब आया सितम टूटा कयामत होगई बरपा। ये पूछाथा के तुम आजुर्दा मुझसे मेरी जाँ क्योंहो॥ उन्हें गोरंजिशे बेजाहै लेकिनहैतो मुझसेहै। मुहब्बत गर नहो बाहम शिकायत दर्मियां क्यूंहो॥ नइ ताकीदहै जवसे मुहब्बतकी वह कहतेहैं। जिगर होतो फुगांक्योंहो दहन होतो जुबाँ क्यूंहो॥ खुदा शाहद खुदा शाहदहै क्यूँ कहतेहो वादों पर। खुदाको क्या गरज मेरे तुम्हारे दरमियाँ क्यूँहो॥ नहीं फूले समातेहो बदनमें आज क्या बाइस। बताओ तो सही तुम दाग ऐसे शादमाँ क्यूँहो॥ ६१॥

तड़पतेहैं जिन्हें गैरोंकी चाहत ऐसी होतीहै। खुदाकी शानहै ऐसोंकी हालत ऐसी होतीहै॥ जब आँखोंसे लगाताहूँ तो चुपके २ हँस २ कर। तेरी तस्वीरभी कहतीहै सूरत ऐसी होतीहै॥ अभीतो खेल समझेहो मगर एकदिन दिखायेंगे। कयामत इसको कहतेहैं कयामत ऐसी होतीहै॥ हमारी शक्ल तेरे गममें पहचानी नहीं जाती। बिगड़ जातीहै सूरतभी मुसीबत ऐसी होतीहै॥ कफनसे मुँह मेरा जब खोलकर देखा तो यूं बोले। हमारे चाहने वालोंकी सूरत ऐसी होतीहै॥ भरी महफिलमें गैरोंस इशारे यूं मेरे आगे। मुरव्वत आँखकी ओ बेमुरव्वत ऐसी होतीहै॥

वो देतेहैं तसल्ली और फिर तस्कीं नहीं होती । वनी वेचैन यें काफ़िर तबीयत ऐसी होतीहै ॥ मुझे वह देखतेही दूरसे मुँह फेर लेतेहैं । जो होतीहै तो अव साहव सलामत ऐसी होतीहै ॥ ग़जबमें जानहै बरसोंके शिकवे भूलजाताहूँ । कभी दो चार दिन उनकी इनायत ऐसी होतीहै ॥ ज़रासी वातपर अय दाग़ तुम इतना विगड़ वैठे । इसीका नाम उल्फ़तहै मुहब्बत ऐसी होतीहै ॥ ६२ ॥

तेरा वस्लहो ख्वाहिशे दिल यहीहै । मुहब्बतका उल्फ़-तका हासिल यहीहै ॥ तेरी तेग देखी तो विस्मिल ये बोला । गलेसे लगानेके क़ाविल यहीहै॥उसे देखकर मुझसे कहताहै ये दिलमें बिस्मिलहूं जिसका व क़ातिल यहीहै ॥ वो कहतेहैं मूँ देखकर आईनेमें । अगरहै तो मेरे मुका-बिल यहीहै ॥ महेताव फ़ुरकतमें गरदूं पे देखा । मैं समझा कि शमशीर क़ातिल यहीहै ॥ जनाजा मेरा जब सरे कब्र पहुँचा । कज़ाने कहा पहली मंजिल यहीहै ॥ कोई गुंचा देखा जो गुलशनमें सफदर । तो समझा कि शायद मेरा दिल यहीहै ॥ ६३ ॥

ज़रा वस्लपरहो इशारा तुम्हारा । अभी फ़ैसलाहै हमारा तुम्हारा॥बुतौं दीन दुनियामें काफ़ीहै मुझको । भरोशा खुदा का सहारा तुम्हारा॥ इन आँखोंकी आँखोंसे लूँ मैं बलाएँ । मयस्सरहो जिनके नजारा तुम्हारा॥ मुहव्वतके दावे मिले

खाकमें सब। वो कहतेहैं क्याहै इजारा तुम्हारा ॥ रुकावट न होती तो दिल एकहोता। तुम्हारा हमारा, हमारा तुम्हारा ॥ बुराईजो की तुमने ग़ैरोंकी हमसे। हुआ हाल सब आशकारा तुम्हारा॥ निकलकर मेरे घरसे ये जानलो तुम। न होगा किसीघर गुजारा तुम्हारा ॥ सुनाहै किसी औरको चाहताहै। वो दुशमन हमारा वो प्यारा तुम्हारा॥ करेंगे शिफारस हम ऐ दाग़ उनसे। अगर ज़िक्र आया दुबारा तुम्हारा ॥ ६४ ॥

हम न कहतेथे कि उल्फ़तमें मज़ा कुछभी नहीं। देखले तुझमें दिलेज़ार रहा कुछभी नहीं ॥ चोट वह इश्कमें खाई कि नहीं जिसका इलाज।दर्द वह दिलमें उठा जिसकी दवा कुछभी नहीं॥ सितमो ज़ोरके बाद आप पशेमां क्यों है। आपके सरकी क़सम मुझको गिला कुछभी नहीं ॥ तुममें अन्दाज भीहै नाज़भी है हुस्न भीहै। यहतो सब कुछहै मगर हाय वफा कुछभी नहीं॥ लेलिया ख्वाबमें बोसा जो तुम्हारा मैंने। है तो यह ज़ुर्म मगर इसकी सज़ा कुछभी नहीं ॥ नाजिगरहै मेरे सीनेमें न दिल अय शौकत। हशरतो यासो तमन्नाके सिवा कुछभी नहीं ॥ ६५ ॥

तलबगार ज़ुल्फ़े रसा हो रहीहै। मेरे दिलके सर यह बला होरही है ॥ ख़ुदाजाने क्या रंग लाए जवानी। अभी खैरसे इब्तदा होरहीहै ॥ मेरी चश्मेतर उनकी ज़ुल्फें सिया

से । खजल आज कालीघटा होरहीहै । सज़ापर सज़ा वस्लमें पारहेहैं । मगर फिर ख़तापर ख़ता होरहीहै ॥ वह आयेहैं महशर उठातेहैं हमको । कयामतमें आफ़त बपा होरहीहै ॥ जिसे देखताहूं वह आशक़है तेरा । खुदाकी खुदाई फ़िदा होरहीहै॥ मुझे दाग़ देकर वह कहतेहैं शौकत तेरे दिलकी क़ीमत अदा होरहीहै ॥ ६६ ॥

क्या कहा इस जुस्तजूसे तुमको क्या मिल जायगा । आप क्योंहैं ढूँढने से तो खुदा मिलजायगा ॥ मिलचुका तुमसा हसीं मुझको चलो यूँहीं सही । खैर तुमसे कमतो कोई महलका मिलजायगा ॥ मेरे मरजाने पै हो उनकी बला को रंजो गम । मैं न हूँगा कोई मुझसा दूसरा मिल जायगा॥हालदेतेहैं वह यह कहकर सवाले वस्लपर।रफ्तः२ तेरे दिलका मुद्दआ मिलजायगा ॥ जीमें आताहै रसाई कीजे उनकी ज़ुल्फ़से । कुछ दिले गमगश्तःका उस्से पता मिलजायगा ॥ माँगना बोसा मेरा और सर झुकाकर वस्ल में । हाय वह कहना तेरा मिलजायगा मिलजायगा ॥ है तरक्कीपर वहाँ जोशे जवानी आजकल। अब खुदा चाहै हमारा मुद्दआ मिलजायगा ॥ बनके हरजाई मिलेंगे सारे माशूकोंसे हम । कोई तो उसमेंसे आखिर बावफा मिल जायगा ॥ रश्क यह मानेरहा उनसे सवाले वस्लको । ख्वाहिशे दुश्मनसे अपना मुद्दआ मिलजायगा ॥ सैकड़ों

हैं माहपारे दिल सलामत चाहिये । ढूँढलेंगे और कोई महलका मिलजायगा ॥ दिलके गुम होनेसे शौकत इसक़द्र क्यूं फिक्रहै । ऐसे क्यूँ घबडारहेहो खोगया मिलजायगा ॥ ६७ ॥

लबसे नाला जो निकाला होता । अर्शे बालाः तहो बाला होता । हमदमों उनके यहाँ आनेका । कोई पहलूतो निकाला होता ॥ दिले सद चाकबचा बालही बाल । जुल्फ़ने मारही डाला होता ॥ खेंचते क्याहो जिगरसे पैकाँ । दिलसे अरमान निकाला होता ॥ अय मसीहा दमे आखिर आकर । मरने वालेको सम्हाला होता ॥ मारडाला दमे रुखसत तुमने । हाथ गरदनमें न डाला होता॥ दुश्मने जाँहै यः दिल अय शौकत । इसको पहलूसे निकाला होता ॥ ६८ ॥

इति तीसराभाग समाप्त ।





॥ श्रीः ॥

महामनमोहिनी।

चौथाभाग।

(नाटकके गान और कई भाषाओंके गीत)

दादरा।

प्यार मोहनियां निभाना होगा।गम जो होगा उठाना होगा॥ प्यार० ॥ भर भरके जामे शराबे मोहब्बत पीना होगा, पिलाना होगा ॥ प्यार ० ॥ आशकको बोसा शीरीं लबों पर, देना होगा, दिलाना होगा ॥ प्यार० ॥ चर्चे तो दुनियाके यूंहीं रहेंगे, हम न होंगे ज़माना होगा ॥ प्यार ० ॥

ग़ज़ल।

दिले नादांको हम समझाय जाँयगे।
हिज्रमें जिनके जान चलीहै, नवो अहले सितम बुलवाये जाँयगे ॥ दिले ० ॥

सख्त पत्थरसे जियादाहै तेरा दिल क़ातिल।
हुई आसान न जाँ बाज़की मुश्किल क़ातिल॥
उफ्रे वेदर्द सितम पेशओ जाहिल क़ातिल।
नक़िया जिवह गया छोड़के बिस्मिलक़ातिल॥
दहाने जख्म पुकारा किया क़ातिल क़ातिल।

किसे जख्मे जिगरके यह चर्खे दिखाय जाँयगे ॥ दिले नादांको हम ० ॥

बनरा ।

प्यारा प्यारा बना बना जोबना ॥

वाकी खबरिया तू लादे मोरी जनियाँ, मैंहारी, मैंहारी मैंहारी हाय हाय जान ;

वाकी खबरिया तू लादे मोरी जानियाँ ।

प्यारा प्यारा बना बना जोबना ॥

ढूँढा सारा नदी नाला वेईमान ॥

इधर उधर डगर डुगर चलत फिरतहूँ हलकान । वाकी खबरिया० ॥

सितार खानी ।

काहे कलपावे जलावे जानी जान हम सब तुम पर वारियाँ । क्यों कलसे बेकलहै, कल २ से कल परसों, साजनके आवनकी आस । गुलशनमें फूलनके जोबनको देखो तो मतकर तू दिलको उदास ॥ काहे कलपावे ० ॥ चाहतमें राहत आफत मुसीबत फुर्कतमें हिम्मत न हार । दो दिनके सर धुनके तिन २ के चुन चुनके मतकर तू दिलको उदास ॥ काहे कल पावे ० ॥

सितार खानी ।

पिया बिन रतियाँ हमारी कटैना । मिलूं तो कैसे मिलूं दो जनोंके वशमेंहूं । अभी तो वहरे खुदा चौदवें वरसमेंहूँ ।

कहदो पपइयासे पी पी रटैना ॥ पिया० ॥ मिलूं तो ऐसे मिलूं आँखके इशारेसे । दुगाना पढके मिलूं ईदके वहानेसे ॥ कहदो पपइयासे पी पी रटैना ॥ पिया० ॥

ठुमरी ।

सुरतिया दिखाजाओ छैल सइयाँ ।

दो०—हाय दई कैसी भई, अन चाहतके संग ।
दीपकको भावे नहीं, जल जल मरत पतंग ॥
ताकूं तोरी नजरिया, वजरिया डगरियाँ सवँरिया॥
सुरतिया दिखाजाओ० ॥

ठुमरी ।

ह्याँ आनेमें लाखों बहाने हुए । जान आनेमें०॥ अरेहो बे हिजाब, तेरे पीछे बेताव हुआ हवाना खराब,तुझे चाहा तो अपने बिगाने हुए ॥ ह्याँ आनेमें० ॥ चाल निराली है मतवाली, जोबन यह बरसे जीमनियाँके तरसे जी वाह, वाह वाह । तुम्हें पहलेसे हमतो थे जानेहुए ॥ह्याँआनेमें०॥

ठूमरी ।

कामनियां काहे खड़ीहो, चलके करो ना सिंगार । चलके करो ना सिंगार, वने दिलदार परी रुखसार ॥ कामनियाँ ॥ उमंगके संग अंग सजाया, ढँग वनाया, रंग जमाया वाह वाह वाह०॥ अहा रसीली छवीली नुकीली हो नार । हिलमिल चलिये सब गुलजार ॥ कामनियाँ०॥

सितार खानी।

ऐसे धोखा देनेवाले, मैंने लाखों देखे भाले। ऐसे राजा की आबादीको मैं गैरत नगरी जाने था। उसमें ऐसे जौहर निकले, क्या जानें था क्या जानें था। छोड़ो छोड़ो ऐसी बातें, करताहै तू कैसी बातें,तोबा तोबा वारी तोबा, करता हूँ सौबारी तोबा,देते ऐसे दम, तेरे दाओ समझें हम, अजी जाओ जाओ देखो भालो ॥ ऐसे धोखा० ॥ ऐसे चालाकीसे आनेवाले, बेबाकी दिखलाने वाले चालोंसे उलझाने वाले, जालोमें उलझाने वाले। मैंने लाखों देखे भाले ॥ ऐसे० ॥

चूरनका लटका।

मैंतोहूँ दिल्लीसे आया। उम्दा उम्दा चूरन लाया।
जिसने मेरा चूरन खाया। उसने दिलसे शोक मिटाया॥
चूरनखाते सब बंगाली। जिनकी धोती ढीली ढाली॥
चूरन वकील लोग जो खावें। खरचा साफ़ हज़म कर जावें॥
बाकी शुक़राना बतलावें। पूरी डिगरी पेट पचावें॥
चूरन खाँय एडीटर लोग। जिनको अक़ल अजीरन रोग॥
नाटकवाले चूरन खाँय। उमदा खेल बनाकर लाय॥
बदका बद अंजाम दिखाँय। सारा पैसा ठग लेजाँय॥

आओ, मेरा चूरन लेकर खाओ, सस्ता बेचा मत घबराओ, पैसे देदेकर लेजाओ॥

सितार खाना ।

मुझे नादान तू ऐ जान नाजान । प्यारी कहना मान कहना मान कहनामान॥मुझे०॥दिलहै परेशान जानहै लबे जान ॥ मुझे० ॥ आसानहै ह्यां रहजाना, दुशवारहै बाहर जाना, जाना जाना मतकर जाना, जाने मेंहै क्या पहँचाना । सौ जानसे जान, जीजान कुरवान पहँचान पहँचान ॥ मुझे नादान तू अयजान न जान ॥ मुझे० ॥

ठुमरी ।

ओ बाबाजान जियरा तलपे, प्यारी बिना हरवारी वारी ॥ अरज गरज यही तुमसे हमारी; सुन सुन गम तन मनको जलाये, कर जनम करम जल २ के न ख्वारी ॥ ओ बाबा० ॥

ठुमरी ।

प्यारे जाओ रैन बाकी थोड़ीहै—प्यारेजाओ० ॥ बैरी आयोरे सवेरा, आन गमों ने दिल घेरा—प्यारेजाओ० ॥ जोंजों सुबहु हुई जातीहै, चली त्योंही जान मेरी जातीहै—प्यारेजाओ० ॥ लाचारीहै क्या कीजै, आधीरात फेरा कीजै ॥ प्यारे० ॥



शेर ।

मुद्दतों बनमें फिरा कैस कभी बन बन कर ।
सर किया कोहसा फरहादपे दुश्मन बनकर॥

हरमे इश्कमें करतारहा अल्लाह अल्लाह ।
अबतो मंदरकेहूं चक्करमें विरहमनकर ॥
हाय दिन क्योंकर गुजारूँ क्या करूँ ।
सर दरे मन्दिर पै मारूँ क्या करूं ॥

टप्पा ।

क्या सुहाये रंगे जो मेरा रंग। मोरे रंगसे है खिलरहो हररंग ॥ नीलमकाहै रंग निराला, वरषाकी ऋतुमें झमके सो मेरा रंग॥ पुखराजहै हररंगसे बाला, फजले खिजाँपर चमके सो मोरा रंग॥ लालरंगसेहै जग गुललाला, फसले बहार पर दमके सो मेरा रंग॥सब्जपरी मैंहूं सबसे आला, ऋतु बेऋतुमें चमके सो मेरा रंग ॥

टप्पा ।

कोई हाल कहो जाके, मेरी परीको समझाके ।
तेरी खबरदे कौन मुझे और लावे कौन निशान ।
तुझे कहाँ में पाऊं जान, यहीहै ध्यान, रहाहयरान॥ कोई०॥
अय पंख पखेरू उड़े फिरे तुम जगे जगे पर दूर ।
कहीं नजर पड़ी वो हूर सरासर नूर जोहै मजबूर ॥ कोई ०॥
सुनो सुनो अय बनके दरख्तो सुनो मेरी फ़रियाद ।
कहां जमा मेरा शमशाद, करो इमदाद, मैंहूं बेदाद॥कोई०॥
अय जमीं फटजा, जरा तू हटजा, नजर पड़े इसरार ।
कहां छुपीहै वहदिलदार, गुले बेखार, मेरीगमख्वार॥कोई०॥

हवा सलामो पयाममेंहै जहाँमें तेरा नाम ।
जहां मिले वो गुलअन्दाम,तू दे पयगामयहीहैकाम॥कोई०॥

गज़ल ।

गर आपकी ख़ातिर मेरी दुनिया में यह तौक़ीरहो ।
गरदनमें मेरी तौक़हो और पाँवमें जंजीरहो ॥
आँखोंके ख़ातिर तीरहो मिलती गले शमशीरहो ।
सूली मिलै फाँसीलगे, फिर मौत दामनगीरहो ॥
मरकरभी शायद जानपर आफत बिला ताख़ीरहो ।
मेरीही ख़ातिर ख़ासकर दोजख नया तामीरहो ॥
इस्सेभी बढकर बात अगर वेहमो गुमासे दूरहै ।
मंजूरहै, मंजूरहै, मंजूरहै, मंजूरहै ॥

गज़ल ।

हम दिल किसी परीपे न हरगिज़ लगाँयगे ।
अबतो परीरुखोंसे परे घर बनाँयगे ॥
मंदिरमें बुतको पूजने हरगिज़ न जाँयगे ।
हम दूर डेढ़ ईंटकी मसजिद बनाँयगे ॥
हम इस जगहसे हिलके कहींको न जाँयगे ।
जिनको ग़रजहो दौडे हुएआपही आँयगे ॥
मरजाँय सिरको फोडके फरहाद वनके हम ।
शीरींकी तलख बात न हरगिज उठाँयगे ॥
फरहाद सर पटकताहुआ पीछे आयगा ।
हम जान शीरीं पहलेही अपनी गँवायगे ॥

गज़ल ।

बादे बहारी आके पुकारी गुलकी सवारी आतीहै ।
राजदुलारी राजकीप्यारी राजकुँआरी आतीहै ।
होगुलकारीकी तइयारी ऐश की बारी आतीहै ।
हर हर गुलचुन, गुलतरे चुनकर, रखो सब सरपर, फिर मसनदपर, वो गुले बरतर, दिलबर सरवर, अखतरे अनवर, करे दिल खुशतर, गुलको खजिल करे, कदम उसपर धरे, जोहै नाज़ुकतर गुलसेभी बढ़कर ॥ बादे बहारी० ॥

टप्पा ।

सइयां काहे पइयां तोडे छइयां प्यारी छोड ॥ सइयां०॥ हमने हुनरबरी सरबरी छोडी वानें दिलवरी छोडी मोरी आश अब तोड़॥ है इन्तिजारी प्यारी करे दिलदारी जारी हसरतहै करजोड ॥ सो मोरी प्यारी नज़र हयासे कुछ मन नधरत और नज़र करत हरदम मुँह मोड ॥ काहे पइयाँ०॥



मोहे यकताई हरकी ध्यानमें पड़ी । मोहे० ॥ वो मौला मौला, आला औला वाला, बाला शानो वाला वो प्यार दाता॥मोहे०॥ माली बिन चमन, चमन बिन माली, क्या माली क्या चमन रहै । जां बिन तन, बदन बिन जाँ क्या जानरहै क्या बदन रहै॥मोहे०॥जोबन बिन फबन, फबन बिन जोबन क्या जोबनक्याफबन रहै।दुलह बिनदुलहन, दुलहन बिन दूलह, क्या दुलहा क्या दुलहन रहै ॥मो० ॥



घड़ीमें जिसदम नहो कमानी । चलै न चक्करकी जाँफिसानी
जो गुमहो चक्करकी कुछनिशानी। तोफिरनिकम्मीरहेकमानी
इसी तरह ये घड़ी जहांनी । है औरतो मर्दसे चलानी ॥
नहो जो दोनोंमें एक जानी । तो फिर निकम्मी रहै ये सानी॥



अबतो दुनियांकी घड़ी मुझको चलानी चाहिये ।
दिलके चक्करके लिये कोई कमानी चाहिये ॥
बिनघड़ी चलनेके सब पुर्जोंपै ज़ँग आजायगी ।
जब निकम्मी होगई दुनियाके क्या काम आयगी ॥



खूब तेरी बात अब मेरी समझने पाईहै ।
तू क़मानीके लिये चक्करसी जो चकराई है ॥
देर कारे नेकमें फिर किसलिये ठहराई है ।
खुद बखुद तेरे लिये घर बैठे न्यामत आई है ॥



जब के कलन्दर बन वन फिरकर बंदर लेकर आतेहैं ॥
ताली बजाना निशदिन पल छिन बंदरको बतलातेहैं ॥
तूने आकर क्यों दिखाये मोहे बंदरवाके खेल । तूने० ॥
भोले भाले मनको नभाये तोरा खेल,
इन्सानोंसे कैसे पाये हैवानोंका मेल ॥ तूने० ॥



कहाँ तुम्हारी दुपटिया, कहाँ हमारी शाल ॥
कहाँ जरासी रुमालिया, कहाँ बड़ा रूमाल ॥

वहाँ तुम्हारी खिरद रद, जहाँ हमारा ख्याल ॥
कमरके सामने जुगनूंका नूरहै कंगाल ॥
अरी ओ अँधियारी नजर बनवा डाल ।
बदन मेरा चंदा चलन तेरा गंदा, तेरे फंदेमें आये न बंदा,
जनम फिरवा डाल ॥ अरी ० ॥
तुम्हारे कौलसे साबितहै औरतें कंगाल ।
मगर कामीनकी खातिर ये मर्द काहै हाल ॥
देखतेही हुस्न औरत बिलबिलाते रहगये ।
शहद पर मक्खीकी सूरत भिनभिनाते रहगये ॥
अरे ओ मतवारे नजर बनवा डाल ॥
कहाँ तेरी टोपी कहाँ मेरा जामा ।
मेरे जामेपै टोपी अमामा सभी बिकवा डाल । अरे ओ०॥



आतिशे इश्क वहहै जिससे समन्दर जलजाय ।
एक शरर जापड़े पत्थर में तो पत्थर जलजाय ॥
परें परवानाहै क्या शमे रुखे जाना पर ।
गर फरिस्ताभी कोई आय तो शह पर जलजाय ॥
तन बदन फूंकदिया हयतपें फ़ुरक़तने मेरा ।
क्या अजबहै जो मेरे जिस्मसे बिस्तर जलजाय ॥



इश्की आरा क़ातिल बनकर मार मार करता ।
तन मन सारा आखिर धुनकर तार तार करता ॥

आशक प्यारा काफिर वनकर दीनख्वार करता ॥इश्की०॥
इश्को मारा बन वन फिर फिर जाँने जार करता ॥इश्की०॥
तनमन रजकर, अनधनतजकर, मजहबरदकर, अनसुनीसुन
कर, पड़कर गिरकर, दर दर फिरकर, निशदिन मरकर, इक
दिन मरकर; खातिरे दिलवर जांनिसार करता ॥ इश्की०॥



न बोलो तारा तारा, वोताराहै न्यारा नबोलो तारा तारा ।
वोआँखोंकातारा, नसीबोंकातारा, खुदानेउतारा ॥नबोलो०॥
चन्दरपै दाग कारा, सूरजहै आग सारा, चन्दसूरजसे प्यारा,
चन्द सूरजसेप्यारा, नसीबोंकातारा, खुदानेउतारा॥नबोलो०
साफ़ कहदूंगी जो पूछेगा कोई हस्रके दिन ।
मैं गुनहगार नहीं हैं यह गुनहगार आँखें ।
मजनूँको देखिये लैलाकी आँखसे ।
वामिकको देखिये उजराकी आँखसे॥ नबोलो० ॥



मैं दुखिया नहीं आई भाईरे ।
शाने खुदाई मोहे खेंचलाई, नूरपै खाक जमाई भाईरे॥मैं०॥
राखके अन्दर आग दबीथी, आज हवाने उड़ाईभाईरे ॥मैं०॥



हिन्दी गायन संग्रह (नाटक)
कियोहै कठिन तप आली मुरलिया ताहीते हरिने मुखधारी।
मुरली निज तपके फल लीन्हें, ब्रह्मा रुद्र इन्द्र वश कीन्हें ।

चेतनहैंसोजड़करदीन्हें,अधरनचढीबिहारेप्यारी॥कियो०॥
एक मंत्र हरि विधिसों पावें, ताते इतनी सृष्टि उपावें।
हरियाकोनितमंत्रसुनावें,अचरजभयो कहारी प्यारी॥कि०॥
हरि ब्रज में नित बेणु बजावें, तीनलोक धुनसुन सुख पावें।
झव्वीलालमनावें ब्रजको बासमिले बनवारीप्यारी॥कियो०



नाचन लागे बनके मोर, वदरी किधरसे आयी ॥ ना० ॥
यह कालीघटा आतीहै, मेघ गरजे घनघोर॥वदरीकि०॥
जारीहै नहर गुलशनकी, पानीकरताअपनाजोर॥बदरी०॥
कहैं प्रेमसखीसुनप्यारी,देखत लरजेहियामोर॥वदरीकि०॥



नाम हमारा चौपट सिंहहै गारत करें जमाना हम।
डाह वैर और फूटसे रखतेहैं गहरा याराना हम ॥ नाम०॥
महाराज कलियुग जीकेहैं सच्चे दिलसे तावेदार।
वेद वचनसे बढकर गिनते हैं उनका फरमाना हम ॥ नाम०॥
खुदा हमारा रूपया और अपना दीन खुशामदहै।
खूब जानते हैं अहमक,जरदारों को फुसलाना हम॥नाम०॥
ब्राह्मण क्षत्री वैश्यके लड़कों को सिखलाकर मयख्वारी।
होटलवालोंका भरते रहते हैं सदा खजाना हम॥नाम०॥
भलेमानसोंके लड़कोंका करदेतेहैं सत्यानाश।
वी मुगलानीका दिखलाकर झूंठा इश्क जताना हम॥

बिनपिया मोहिं कल न परत, मनमें रहत यही अँदेश ।
जुबनाझुरताजियराजरत,पातीनलिखी न भेजोसंदेश॥बि०॥
कैसेकै पियाको दरश पाऊं, बिरहा सताये जरीरे जाऊं।
निशिदिन जिया तलमलात, जरत मेरो सबगात ॥
बसन रँगाऊं सेली बनाऊं, अंग विभूती बीन बजाऊं ।
अबकेऐसे न आवें जो द्वार,कररहूं योगनका भेश ॥बिन० ॥
कासों कहों मैं मनकी व्यथा, जबसों गये लीनी न सुता।
जरत २ पीलीरे पड़गई,जबसेबालम गये बिदेश ॥बिन०॥

हमैं जिन रोको, कपट व्रत धारी ।
मो मनमेंयह सांचनआवत, रूठेहो श्याम मुरारी ॥कपट०॥
दूरहिते क्यों बात बनावत, बोलो बदन संभारी ॥ कपट०॥
हाय दईविधिकोकहा सूझी, तुमसेरचेअवतारी॥कपट व्र०॥
द्वारपालबन मनुराजाभये,कूरकुटिलकुबिचारी॥कपट व्र०॥
आये बड़े बन"मिश्र"देशसे, माँगतभीख तिवारी ॥कप०॥

प्रीतिमें तेरी हे मनमोहन अब सब जगको छोड़ाहै।
तात मात गुरु इष्ट कुटुमसे तृण सम नाता तोड़ाहै॥प्रीति०॥
तन मन धन सब तुझपर वारा, ब्रजवासिनसोंनेह बिसारा।
तेरे बिनानहीं कोईपियारा, नेह तुम्हींसे जोडाहै॥ प्रीति० ॥
निशदिनहो ममहृदयनिवासी, मैं तवरूप सुधाकी प्यासी ।
लोसुध बेगश्यामअविनाशी, क्योंहमसेमुँहमोडाहै॥प्रीति०॥

हमैं होतीहै निरखेसे भारी व्यथा ये विचारहै क्या ये विचार।
हैशोककोकारणईशकहा ये विचारहैक्यायेविचार ॥ हमैं०॥
हो ब्रह्म सनातन खलदलनाशन दीनदयालु सुजान ।
माता पिता नहिं कोई तुम्हारे मित्र न शत्रु अमान ॥
हो मायाकारी सबगुणधारी तारन भक्त अपार ॥ हमैं ०॥



लै मुरली नेक बजाओ रसिया ॥ लै० ॥
पीताम्बर पहरो बनवारी, वनमाला गर बिच गिरिधारी ॥
शिरधार मुकुट कछु गाओ रसिया ॥ लै० ॥
रुन रुन रुन नूपुरुन बजाओ, ह्वै त्रिभंग छबिदरशदिखाओ।
माखनको चुराय लै खाओ रसिया ॥ लै० ॥
दरश दिखाओ पिया श्याम सनेही,प्रेम सखी माँगै बर येही ।
यमपुरते मोहिं बचाओ रसिया ॥ लै मुरली० ॥



झूलें नवल किशोर कुंजभवनमें आली ॥
राधे पियाको मुख निरखत जैसे चंद्रचकोर ॥ कुंज० ॥
कारी २ घटा छाईहैं, नाचैं वृन्दावनके मोर ॥ कुंज० ॥
अंबापै कोयलिया बोलै, चातक बोलैं एक ओर ॥कुंज०॥
कहै प्रेमसखी तुम दोऊ , मेरे चितके चोर ॥ कुंज० ॥



आआके याद तेरा रुलावेगा बालपन ॥
दिन २ मुझे सतावेगा यह तेरा बालपन॥ आआके०॥

जब घरमें बैठेबैठें लगेंगा न मेरा जी ॥
तब तबहीं धीर लावेंगा यह तेरा बालपन ॥आआकें० ॥
जों जानाहै तों जाओ मगर यह विनयभीहै ॥
क्या फिर कोइ दिखावेगा यह तेरा बालपन ॥
माताकी आत्माहै तड़पतीहै बिना तेरे ॥
इनकी अगिन बुझावेगा यह तेरा बालपन ॥



बस मेरे चले अब प्रान ॥

कपटी कुटिल दगा क्यों कीन्हीं कहालई मन ठान ॥
उझकत, झिझकत, तलफत, बिलपत, कलपत निशिदिन
पलछिन तोबिन, जल जल बल बल दुर्बल निर्बल,
कृपाकरो भगवान ॥



बेग खबर लीजो मनमोहन प्राण हमारे जातेह ॥
निरपराध नाहिं दोषनेकहू नाहक मारेजातेहैं ॥
प्रेमकी चौसर बिछीथी जीते अब पीछे पछतातेहैं ॥
माल जो हमने जमाकिये वह दावपै हारेजातेहैं ॥
जो पददियो सोई हम लीन्हों प्रेम तुम्हारे भई मगन ॥
मोक्ष परमपद पाय जीव कहा जगत उतारे जातेहैं ॥
हाहा बिनती सुन दर्शनदो यह कठोरता नहिं नीकी ॥
नाहिंतो सबके प्राण मिश्र पिया संग तुम्हारे जातेहैं ॥



हाय प्राणप्यारे आज ब्रज छोड़ जाँयगे ॥
छोड़ जाँयगे मुख मोड़ जाँयगे ॥ हाय० ॥
कपट जालमें फाँसके पहले अब छोड़ेहै क्रूर ॥
देखोरी लेबेको आयो, मथुराको अक्रूर ॥ हाय० ॥
डोलन गलिन २ को आली फिरिवो कुंजलतान ॥
हूलैगी नित चित्त हमारे कान्हरकी मुसकान॥हाय०
प्यारे विन जीवो नहिं नीको कैसे राखें प्रान ॥
बूडेंमिलसबयमुना जलमें यहीलई मनठान॥हाय०॥
मथुराकी नारिनपै रीझे और नहीं कोई काम ॥
चलो पकरि कुंजनमें राखैं रथ घेरैं सब बाम ॥हा०॥



साधो हम बैरागन हरकी । हरकीरे, गिरिधरकी॥साधो०॥
उन बिन लोक लाज तजि दीन्हीं, सुध बुध रही न घरकी॥
वन २ कुंज २ लख हारी गलियें नगर नगरकी ॥ साधो० ॥
उठीं जो प्रातहिं गृहकारजको, आंख दाहिनी फरकी ॥
कुशल न भई गये पियप्यारे, बाटलई मधुपुरकी॥साधो०॥
अब यमुना गिरि प्राण दीजिये, लीजे राह उधरकी ॥
परे मिश्र हम प्रेमफंदके शरम श्यामसुन्दरकी ॥ साधो० ॥



लोमैं बन चलीहूं मालिनियाँ ॥
ले हाथमें छबड़ी चटकत मटकत ज्यों चले कामिनियाँ॥
मैं श्यामा बनके आई बागके भीतर ॥

फूला गुलाब मोतिया चमेली खुशतर ॥
चहुँ ओर बोलते मोर गरजरहे इन्दर ।
चमकत दमकतहै वैरिन दामिनियाँ ॥ लै० ॥
कहीं खिली चमेली अलवेली बेलीसी ।
कहीं गेंदा गुलदाउदी कँलगी सेलीसी ॥
कहीं चढ़ीं लता वृक्षनपै लखैं मेलीसी ।
बन ठनके चलती सैर करैं भामिनियाँ ॥ लै० ॥



तुम्हारीही खुशीसे खुशहैं ह्याँ अपनी रज़ा क्याहै ।
दिलो जाँ लीजिये इसमें हमें उज्रो गिला क्या है ॥
पोथी पढ़ २ जग मुआ, पंडित हुआ न कोय ।
ढाई अक्षर प्रेमके, पढै सो पंडित होय ॥
जो उसको जानतेहैं जानना उनको रहा क्याहै ॥ १ ॥
नृपति सैन संपति सचिव, सुत कलत्र परवार ।
करत सबनको स्वप्न सम, नमो काल करतार ॥
गुरूरे हश्मते दुनियाये दूं पेशे कज़ा क्या है ॥ २ ॥
भरित नेह नवनीर नित, बरसत सुरस अथोर ।
जयति अपूरव घन कोऊ, लखि नाचत मनमोर ।
करम उस अब्रे रहमतका न पूछो हमपै क्या क्याहै॥३॥
गंगा यमुना सरसुती, सात समुद्र भरपूर ।
तुलसी चातकके मते, बिना स्वाति सब धूर ॥

जो तेरे होचुके उनको किसीसे वासता क्याहै॥ ४॥
जगत जनायो जेहि सकल, सो प्रभु जान्यो नाहिं॥
ज्यों आँखिन सब देखिये, पै आँखि न देखी जाहिं॥
जो हो साफ़ आईने दिल तब खुले नूरे निहां क्याहै॥५॥
सर सूखे पक्षी उडे, औरे सरन समाहिं।
दीन मीन बिनु पंखके, कह रहीम कहाँ जाहिं॥
करम कर या न कर हमको ठिकाना दूसरा क्याहै॥६॥
काहु न उतरत चढ़त जब, बढ़त मोद नित नित्त।
अहोधन्य धन प्रेम मद, पियतहि उमगत चित्त॥
बरहमन कोई क्या जानैं कि इस मयका मज़ा क्याहै७

लावनी।

मनमोहन ब्रजराज साँवरे क्यों मइयाको छोड़गये।
दिखाके लीला, हाय! क्यों हमसे नाता तोड़गये॥
बीच बुढौती निठुर कठिनह्वै जीवन सकल हिलोड गये।
करके माया, भाग सबं ब्रजबासिनके फोड़गये॥
माताको तरसाय प्राण बाबाके हाय मरोड़ गये।
दिखाके लीला, हाय क्यों हमसे नाता तोड़गये॥ १॥
अब जीनाहै कठिन भई दुर्दशा कहो कैसे जीजै।
आश कौन की, कहो अब जाँय शरण काकी लीजै॥
मांगे बारम्बार कौन माखन मिश्री किसको दीजै।
हिय हहरतहै, अरे निर्दयी पुत्र दरशन दीजै॥

शत्रुशाल ब्रजलाल ग्वाल वालनसों क्यों मुख मोड़गये ।
दिखाके लीला हाय क्यों हमसे नाता तोड़गये ॥ २ ॥
वह खेलन वह हँसन रैन दिनकी मोको मति कलपावै ।
विना प्राणधन, जननिको प्राण यह कैसे कलपावै ॥
वेग खबरले मुरली वारे जियत नाहिं मोहिं कलपावै ।
चले प्राण अब हृदय क्यों होत विकल मत घबरावै ॥
कहा मधुर मथुरा को माखन लाल वहाँ जो दौड़गये
दिखाके लीला, हाय क्यों हमसे नाता तोड़गये ॥ ३ ॥
मिटा उलहना ब्रजवालन का बंदहुआ आना जाना ।
जानका जाना, रहा कोई जाकर उसको समझाना ॥
भलीकरी जो करी सुवन माता का भला क्या तरसाना ।
यह रिसियाना, "मिश्र" को अब न कभी मुख दिखलाना ॥
विश्वनाथकी गहीशरण दुख अवगुण लाख करोड गये ।
दिखाके लीला हाय क्यों हमसे नाता तोड़गये ॥ ४ ॥

लावनी ।

आयो ब्रज अक्रूर क्रूर तिन कान्ह कुँवर बातन दीने ।
सखिसुनो गोपिका, आज ब्रजराज गवनमथुरा कीने ॥ टे० ॥
नाहिं सुहाय यह भूमि गोप गोकुल यह सब लागत फीके ।
सखि लगत भयानक धाम विन श्याम सुघर प्यारे जीके ॥
बोलतपिक शुक वृथा यमुन तट त्रिविध पवन मन नाहिं भावै ।
सखि दुख उपजावै श्याम सुधि वार वार हृदय आवै

उठत विरहकी हूक, कोकिला कूक २ हिय धड़कावै।
सखि जिय डरपावै, लगत शशी किरन तेजतनदहकावै॥
होय मिलन कब, प्राणनाथ आगमन,श्याम आनँद भीने।
सखि सुनो गोपिका आज ब्रजराज गवन मथुरा कीने॥१॥
स्रमत विटप मधुधार वारि बरसत बूँदन घनघोरैहै।
सखि मुदित जीव सब हमैं विधि विरह वारिनिधि बोरैहै॥
रिम झिम बरसत नीर पीर तन बढत जीय उमगत आली।
सखि देख घटाघन गगन मन उड़त दुखितबिन बनमाली॥
उमड़त आवत घटा गगन सखि काम प्रबल दल साज्योहै।
हमैं जान श्याम बिननिबलजनव्यथन डंकतिन्ह बाज्योहै॥
कृत प्रपंच सखि पंचबान धृतशान विविध आयुध लीने।
सखि सुनो गोपिका। आज ब्रजराज गवन मथुरा कीने॥२॥

ठुमरी।

तुमबिन नितप्यारेबिकलरहे,बिकलरहेबिलपायरहे॥तुम०॥
छनदिनपलयुगदिवसकल्पअरुमन्वन्तरसमअचलरहे॥तु०
कहाकहौंजोदुखहमपायो,तुमकुब्जागृहअचलरहे॥ तुम०॥
हाहाखाऊंबलिजाऊंअबनितनवजोड़ीयुगलरहे॥ तुमबि०॥
विश्वनाथबरदानयहीदो"मिश्र"लखतमुखकमलरहे॥तु०॥

ठुमरी।

मोहन प्यारे मुरलीवारे करहु कृपाकी कोर।
बिहरहु निशिदिन,पलछिनजीवन, मगन मगन दरसश अरु

परशन ॥ मिलेरहो यही भाँति परस्पर, सुन्दर नवल किशोर ॥ मोहनप्यारे० ॥ १ ॥ विश्वनाथ कर सनाथ जन को, तनको मनको अरु भक्तनको । दोवर नटवर यदुवर प्यारे, "मिश्र" कहत करजोर ॥ मोहन प्यारे० ॥ २ ॥



बंगला गान ।

प्रणय वारिधि माँझे सुखनिधि यदि चाहो ।
एक जने मनसँपे ताहारि हइया रहो ॥ प्रणय० ॥
एकान्ते ये एके मजे, कभू न द्वितीय भजे ।
पवित्र सुख सरोजे, विराजेसे अहरहो ॥ प्रणय० ॥
नतुवा ये अनुरागे, अंशकरे भागे भागे ॥
विराग तार घटे सोहागे,जातना सहे दुस्सहो॥प्रणय०॥

रागिनी ईमन कल्याण-ताल जलद तिताला ।

विरह हेमन्त गत, सुख वसन्त आइल ।
भाव मंजु कुंजवने रस तरु मंजुरिल ॥
निराशाको आशा गैलो, आशा मलय रहिलो ।
विषाद तुषार राशि, आनंद तापे गलिल ॥ १ ॥
मन आलि मनो लोभा, हृदि सरोवर शोभा ।
प्रेयसी कमल निभा, आज किवा विकाशिल ॥ २ ॥
फूटिलो कामना कालि छूटिलो सुहाग आलि ।
प्रणय पिक काकिली मन कानन मोहिल ॥ ३ ॥

राणिनी भैरवी—ताल जत ।

नलिनी—एतोनांहिंपिरीति विधान—कभुनांहिंपिरीतिविधान।
भूलाइये निजपति, पेरेरि सम्मान—राख पेरेरि सम्मान् ॥
गगने तपनबँधू, हेसे तारे तोषो मधु, तब सुख मधु—
किन्तु तब सुखमधु—मधुकरे दान्—कर मधुकरे दान् ॥१॥
सतीराज्ये वासकर, असतीररीति धर, तोरे स्थानान्तर—
ताइंतोरे स्थानान्तर,करिअपमान—ओताईकरिअपमान॥२
घूचाते कलंक तब,पूजिबो भवानी भव, मेलि सखी सब—
आजमेलिसखीसब,करिवप्रदान्—युगलपदेकरिवप्रदान ॥३

राणिनी टोडी—तालधीमा तिताला ।

जय हरि शशि शेखर ।
जय योगीश्वर, त्रिपुर तनुहर,सर्व गुणाकर,स्वयम्भु शंकर।
व्याघ्र चर्मासन सुवेशकारी, वृषेश वाहन, पिनाकधारी।
पिशाचमंडितश्मशानचारी,भूतिविभूषितसतीशसुन्दर॥१॥
व्योमकेश शिरे पावनवारि, कैलास—कानन—शैलविहारि॥
तुमिआशुतोपकलुपहारि,तुमिबाराणसि—सरसिभास्कर २॥

राणिनी टोडी—ताल बाँकी ।

रण—साजे पद्मिनी दल चलेरे ॥
भ्रुकुटि नयना मार मार, मार मार, रवे कि भीपण वदना।
पदभरे कम्पिता धरा टलेरे ।
प्रचण्डा प्राय; समर उन्मादिनी, असिचर्म धारिणी,
भयंकर शेल शूल धनु शररे, शोभे करतलेरे ॥ १ ॥

सुन्दरी सब; मातंग विहारिणी–मेघे येन दामिनी ।
अश्व–पिठे लक्ष शशी पाशि येनेरे–खेले रणस्थलेरे ॥ २ ॥

गुजराती गान ।

कलंगडा ।

पूजन गौरीनुं करवाने जइये ।
राजी हृदय विषे बहु थइये ॥ पूजन० ॥
कुमकुम चंदन पुष्पे पूजताँ, पापना पुंज निवारे ।
आदर जाणी, आदर आणी, आदर पूरा पाड़े ॥ पूजन० ॥
पार्वती माता, करि सुखसाता, रीझ करी वर आपे ।
भवनी भावट टाली तरतज, कोटिक कष्टो कापे ॥ पूजन० ॥

लावनी ।

मुझ मिथ्या जीवतर थयुं, नूर सौगयुं, कशूं नहिं सारूं ।
क्यम दिवस दोहला जशे, थशे शुं मारूं ॥ टेक ॥
आ पालवनो आकार, असीनी धार समानज लागे ।
पण करे हृदय नहिं कतल, भीड़ नव भागे ॥
आवस्त्र ऊपरनी लेहेर, लेहेर जो आणे ।
बानि नाग करे दिल डंश ठीक जिव जाणे ॥

झूल ।

सखि लवाय एमज लवी, आम केवुंछे ।
नहिं थाय एहवुं कशुं दुःख सेवूंछे ।
पामी पीड़ा दिलमांह, बल्यां रेवुंछे ।
पड़ि चकली अगनी मांह बन्यू एवुंछे ॥

नाहिं पापी जीवड़ो जाय, हवेशुं थाय, दील दुःख धारूं ॥
मन वले नाहिं कांई जंप, जीव क्यम ठारूं ॥ मुझ०॥ १ ॥
आ हीरा मोती शणगार, करे दिल मार, गमें नाहिं जारिये।
छे खानपानतो झेर हवे शुं करिये ॥
आ चंद्रकान्त सम मणी, लाह्राय ते तणी मने लागेछे।
आसितलकार उपचार आग भासेछे ॥
आसमे मुने समझाय अरे मर बानो ।
नबसूझे कांई उपाय कशुं करवानो ॥
छे तारो मुज भाग्य नो खरे खरवानो।
क्यम करूं हवे उपचार, जरी ठरवानो ॥
जो मौत थाय तो ठीक, कांई मनबीक, नाहिं हुं धारूं।
छूट्यानुं आदुख थकीं, अेज छे वारूं ॥ मुझ० ॥ २ ॥
छैबरबानो बहु भाव, लेउँ हु लाव एम दिल आव।
पण मन गमतो पियप्राण कोण अहिं लावे।
छेमुने घणा मन कोण जोइ ठीक जोड़, वरीने राचुं।
मुझ प्राण ईश पधराव, जिगरथी जाचुँ ॥
मल गु॰ विर, गाय तुज गुण तने गवरावुँ।
तुने जणाय जो कांइ खोड़ तरत सुधरावुं।
निर्मल निरखी मुझ अमित स्वामि नवरावुँ।
कराभात भातना भात पाक खवरावुँ ॥
पण तुंजवण आँधली नार, गणुं नाहिं सार हशे क्या चारूं।

ओ थनार मारा नाथ । ठाम क्या तारूं ॥ मुझ० ॥ ३ ॥
रेनाथ सुणी मुज दाद, धरीने याद प्रिया तुजसारी ।
अहिं आवीकर झालीले मुने उगारी ॥
झट नहिं तो जाशे प्राण, नसुधरे हाण पछीशुं करशे ।
जो हशे खरो तुज प्रेम अरज उर धरशे ॥
ज्यम हरिण विनानी हरिणी बावरी भटके ।
ज्यम वियोगी चकवी चकवा विरहे नटके ।
ज्यम जलथी विखुरी माछली जीवी नशके ।
त्यम करी माहरी गती कामने कटके ॥
ओ आव प्राणना प्राण।सुक्खनी खाण, ठरीने ठारूँ।
तुं खरूँ मानीने पापी प्रेमनो दारू ॥ मुझ०॥ ४ ॥

रागकी पहाड़ी ।

अरे हाइरे स्वामी । त्वीलै ठगि मारोरे ।
ठगिमारो, ठगिमारो, ठगिमारोरे ॥ हाइरे० ॥
हाइरे जोगी त्वीलै ठगि मारोरे ॥ टेक ॥
वेदनको भाष्य करो रेल हालि बेर ।
ज्यूननको श्राद्धकरो मुर्दा छाड़ि बेर ॥ हाइरे० ॥
चिरड़ायो बामण न्योत कइ बेर ।
नौंचन जनेऊ दियो चेरि चेरि बेर ॥ हाइरे० ॥
श्राद्ध छोड़ो तर्पण छोड़ो पूजा छोड़ि बेर ।
तीर्थ छोड़ो पितृछोड़ो मित्र छोड़ि बेर ॥ हाइरे०॥

होमकी रीति सुणों खाड़ खणिबेर ।
बूट पैरी चार बैठा जगायो भिनेर ॥ हाइरे० ॥
स्वाहा स्वाहा स्वाहा करी स्वाहा करि बेर ।
वायु शुद्ध करिलियो खूब उटि बेर ॥ हाइरे० ॥
बिदेश खसम होइ श्यैणिहो भितेर ।
चेला चेली पैदा कर पड़ोसी हैबेर ॥ हाइरे० ॥
श्यैणिन्को धर्म तोड़ो करो यो अन्धेर ।
इग्यारे खशम करा गाणि २ बेर ॥ हाइरे० ॥
दन्यारीमें गायत्रीको मंत्र टाँकि बेर ।
वेदपाठ करिलिय जोतो हाली बेर ॥ हाइरे० ॥
धर्म भ्रष्ट हैगौछा जो समाजीहै बेर ।
पाप काटि शुद्ध होवो गंगा नाई बेर ॥ हाइरे० ॥
रामदत्त जोसी कूँ छ ठाड़ो होइ बेर ।
राम नाम जप लियौ ठाडो होइ बेर ॥ हाइरे०॥
अरे हाइरे जोगी त्वीलै ठगि मारोरे ॥ १ ॥



काफल पाका चैत, मेरी छैला,
भंगा भंगी ऋतु आइ गेछ पूजा मेरा मैत मेरी छैला ॥
नैनीताल धोबीघाट मारोछ चीतला मेरी छैला ॥
मेंजाकनुं चांदी सून झलकन पीतल मेरी छैला ॥
अलमोड़ा टमटाले गड़ी हालो बीज मेरी छैला ॥
रामजूको राज निरयो जोवन क्या चीज मेरी छैला ॥

मालजांणा भैंसियाले बाटी हालो कोय मेरी छैला ॥
रुदराक्ष मालाजासि ते जपनैरयो, मेरी छैला ॥ २ ॥

महाराष्ट्रीयगान ।

प्रीति ।

हृदयोद्यानीं सुंदर लतिका, उगवे नांव तियेचें प्रीती ॥ध्रु०॥
उष्णेंजळतीइतरलता, परिविरहाग्नितही वाढत जाती ॥१ ॥
दुःख शोक अश्रूंचीवृष्टी, ह्या वेलीचे पोषण करिती ॥ २ ॥
आलिंगिल ज्या तरुला त्यासह,वसती,रमती,जगती,मरती
आपत्तीचा वणवा पेटे, त्यांत हिला नव पुष्पें येती ॥ ४ ॥
क्षमा शांतिची सहन शीलता, दिव्य फळेंही लतिका देती५
काम मोह विष तरू निराळे,कल्पलताही नष्ट न होती।६।१।

उडूं बागडूं नाचूं या । मजाही न येईल उद्यां । ॥
प्रीतिस बन्धन–रानमोकळें । रमेल मनतों–प्रीति केली ॥
रानस्तवलें–गाणेंगेलें । पालवि मेली–आशा गेली ॥
उडूं बागडूं नाचूं यां । मजाही न येईल उद्यां । ॥
नवी पालवी–नवी टवटवी । थंडी चेतें दिवस–उलगले ॥
नवी टवटवी–प्रीति नवीची । तेणे दिन तें–नवे शोभले ॥
उडूं आण्डूं साचूं या । मजाही न येईल उद्यां ॥
प्रीतिपत्रींही भले वेगळें । नवीन गोडी तपांत आली ॥

प्रीतिस वन्धन-रान मोकलें । रमेल मनतों प्रीति केली॥
उडूं वागडूं नाचूं या । मजाही न येईल ज्यां ॥ २ ॥



अंगेरजी गान ।

एकिंग हितकारी माईडियर वेरी ।
लिबरेल एन्ड ब्रेव वीशेट टेरी ॥ एकिंग० ॥
गुडास्प्रिट माई सिन टाप लार्ड ।
गुड आल देम विशुनाथ आफगाड ॥ एकिंग० ॥ १ ॥



एगेन, एगेन एन्ड एगन, आई लांग टूवी सिंगिल एगेन ॥
व्यन आई वाज़ सिंगिल, माई पौकेट डिड जंगिल ॥
आई लांग टूवी मेरिड एगेन ॥१॥एगेन एगेन एन्ड एगेन॥
आई मेरिड ए वाइफ़ ओंग्यन।आई म्यैरिड ए वाइफ़ ओग्यन॥
आई मेरिड ए वाइफ़, शीवाज़ प्लेग आफ़ माई लाइफ़;
आई लांग टूवीसिंगिल एगेन॥२॥एगेन एगेन एन्ड एगेन॥
माई वाइफ़ काटफीवर नेक्सडे,माईवाइफ़ काट फीवरनेक्सडे
माई वाइफ़ काट फीवर, आई डिडनाट लीव हर ॥
आई लांग टूवी सिंगिल एगेन॥३॥एगेन एगेन एन्ड एगेन॥



अरबी गान ।

हाजिल हितकारी नूर-नूर नू अल्लाहु ।
कुरबुल बरीद वो दफा सुल ज्ञकाहू ॥

उजरुम् विल कल्बे कुल्ल शन म्वहीते ।
उफवा विश्वनाथ अक्द दर मतलव वसीते ॥ हाजिल०॥

मारवाडी गान ।

म्हैं थारे ढिंगा पूंगीछै म्हारो राज ।
इड्ढाको सुजश म्हारे देश गाइयाछैं गुणियां समाज ॥ म्हैं०॥
म्हैंतोवशी त्हारेचरण शरण विचराखो म्हारीलाज॥म्हैं०१॥

साजन म्हारा मन राखो थोड़ो मदतो पियो ।
साजन मदमें गुण घणा केतिक कूंछ वणाय ॥
शत्रुदलन रणमांचढ़न वाकोवार नखालीजाय॥रेथोडो०॥
आप चले पिय चाकरीरे काँधे धर बंदूक ।
या बलमा म्हांको साथ लेवो नहीं कर डालो दो टूक ॥
रेथोड़ोमदतोपियो। साजनमारामनराखो थोड़ोमदतोपियो

कर्नाटकी गान ।

कुलचांतिगरी हितकारी फुलू ।
फकरंची मौज कंच उलू ॥
दीनरिवा तिनरी सुकुर फली
फल विश्वनाथ जुकजून उली॥ कुल०॥१॥

कृष्णा तैं मोहि मोल लियो ।
तेरी कृपाते मदनगढ़ जीतो तेरो जिवायोजियो॥ कृष्णा०॥

उमड़ी सेन महा मनमथकी अधरामृतहि पियो।
अवक्योंक्रोधभरीरीमानिनि कीन्होंकठिनहियो ॥कृष्णा०॥
तेरी कृपाते गिरिवर धार्यो दावानल अँचयो।
रसिकविहारी वाम विधाता कहाको कहा भयो ॥कृष्णा०॥

रहैं हम निशि वासर दुखपाय।
पल छिन२ पछतात रुदनकरि,जियकीजरननजाय॥रहैं०॥
भ्रमवश त्यागि स्वर्णकी मूरति, लोह लियो अपनाय।
अवसो पाय विरहकी दावा, मोहिं जरावत हाय॥ रहैं० ॥
जैसो कियो सो आगे आयो, काहे मन पछताय।
तब आनंद लियो गोदीभरि, अब दुख लेहु अघाय॥रहैं०॥
कबहुँ कि वह विधु वदन देखि हैं, वार २ हरपाय।
मिश्र होय मन मुदित कवै तोहिं कंठ लगाय लगाय॥रहैं०॥

रागिनी होली चार भाषाओंकी काफी ताल चाचर॥

(संस्कृत) हे वृषभानु कुमारी। त्वमसि प्राणादपि प्यारी॥
पाहि प्रिये मां कामव्यथायां मुखं विधोर्मदहारी॥
मा कुरु मूर्च्छित तीक्ष्णकटाक्षैर्दीनोहं गिरिधारी॥
त्वया सह कुंजविहारी॥ हे वृष० ॥ १ ॥
(अंग्रेजी) रैपिड्ली दी रीवर यमुना रोल्स सो ये फारी॥
लो रीफ़ लेफ्टस नाइटली अप आन,
शाइनिङ्ग मून इस्टारी। सिटिङ्ग वाई सो सारी॥हे वृष॥२॥

(फ़ारसी) वक्ते काँ राहत दिले मुज़तिर रफ्त जहाँ शुद तारी।
दरहिजरश ऐ मोनिसो हमदम करदम गिरियो ज़ारी ॥
खिज़ाँ शुद फस्ल बहारी ॥ हे नृप० ॥ ३ ॥
(हिन्दी) तीखी किरण भानुकी जैसे तैसे तेज कटारी ।
तो बिछुरे मोहिं लागत ऐसे चन्द्र और उजियारी ॥
कहैं नृप चन्द्र विचारी ॥ हे नृप० ॥ ४ ॥

इति चौथाभाग समाप्त ।



श्रीः।

महामनमोहिनी।

पाचवाँभाग।



प्रेमप्रवाह।

हरएकसे तो इस कूँचेमें जाया न जायगा।
पहुँचा भी गर कोई तो फिर आया न जायगा॥
दिल रख न कदम अब तू रहे इश्क़में हरगिज़।
यह वार मुहब्बतहै उठाया न जायगा॥
ग़म खाइये इस बात में दावा न कीजिये।
दिलरिश्तये उल्फतमें बँधाया न जायगा॥
अय चश्म ज़ार दावी न कर बहर इश्क़से।
दिल सोखता हमारा बुझाया न जायगा॥
गुलशनमें हमारे न क़दम डालियो सबा।
हस ग़ुंचोंका दिल तुमसे खिलाया न जायगा॥
अय साहरो डसाहो जिसे मारे ज़ुल्फने।
हरगिज़ वह शख्स तुमसे खिलाया न जायगा॥
क्यों फाँसते हो तायरे दिल दाम ज़ुल्फ़में।
तुमसे यह मुर्ग़ दिलभी बिठाया न जायगा॥
गर मांग लिये मांगने तेरी हज़ार दिल।

इस तौरतो दिल हमसे लुटाया न जायगा ॥
आवेंगे मए इश्क़के मयख्वार जो साकी।
फिर जाम तुमसे दौरमें लाया न जायगा ॥
गर तायरे दिल मेरा मुहब्बतके कफससे।
उड़जाय तो फिर तुमसे बुलाया न जायगा ॥
खामोशहो ज़बाने क़लम बन्द कर हक़ीर।
यह इश्कका दफ्तरहै सुनाया न जायगा ॥
दिल मेरा जो तुझ हूरपै मायल नहीं होता।
हरगिज़भी मैं रक़ीबसे कायल नहीं होता ॥
खुरशैदो महसितारें निकलते न फ़लकपर।
जोरुखपे तेरे परदा यह हायल नहीं होता ॥
जख्मोंपे मेरे क्योंयह छिडकता नमक़रक़ीब।
तेगे निगहका तेरी मैं घायल नहीं होता ॥
लेजाता चश्म ज़ार को दहकाँ जो कुरतपर।
फिर अब्र सियः का कभी सायल नहीं होता ॥
पाबन्द जनूंका तेरे होता न अगर मैं।
तन मेरा यह मजनूंकी शमायल नहीं होता ॥
हरचंद हाल दिलको लिखेगा कोई वले।
दरियाहै यह जिसका कोई साहल नहीं होता ॥
तकदीरका असीर न होगा दिले हक़ीर।
आशक़ कोई पाबन्द दलायल नहीं होता ॥

इश्क क्या शैहै हम इस मर्जसे आगाह नथे ।
ख्वाबमें इश्कके ख्वाहाँ कभी वल्लाह नथे ॥
अच्छी बातों में रहा करतेथे गुमराह नथे ।
बन्दथे कुंद कफसमें कभी सइयाद नथे ॥
खुदबखुद लगगया एक गुलसे जो दिल बुलबुलका ।
फँसगया फंदेमें दिल देखके खम सुम्बुल का ॥
वह सनमभी मुझे बस प्यार किया करता था ।
मुझसे हरबातका इजहार किया करताथा ॥
जब वह शृंगार परीवार किया करता था ।
दिल मये हुस्नसे सरसार किया करता था ॥
ख्वाहिशे वस्ल मैं करता तो वह चुप रहताथा ।
गुंचेसाँ फिर वह जबाँसे नहीं कुछ कहताथा॥
एक दिन मैंने बहुत उज्र किया समझाया ।
पर न कहना मेरा कुछ उसके दहनमें आया ॥
नकाब खेंचा खफा होके न मुँह दिखलाया ।
जोश में इश्कके फिर मैं यह जबाँपर लाया ॥
खुद बखुद आपने अव्वल तो आशनाईकी ।
और हमने भी न कुछ तुमसे नारसाई की ॥
एक काफ़िरके लिये तुमने कज अदाईकी ।
बावफ़ा समझेथे हम तुमने बेवफाई की ॥
खयाल मेरी मुरव्वतका न कुछभी आया ।

था मुहव्वतका नतीजा यही बस भर पाया ॥
अव्वलनतो मुझे तुमने न बुलाया होता।
और बुलायाभी तो शबको न टिकाया होता॥
पलँग सोनेको यह मेरे न बिछाया होता।
शोर शीरीं का न भर जाम पिलाया होता॥
हाथ पकड़ा था जो मेरा तो न छोड़ा होता।
दफ़ेतन रिस्तये उलफ़तको न तोड़ा होता॥
जिसनेतुझशोखसे दिल आके लगाया होगा।
रंजो गम खानेके जुज तुझसे न पाया होगा॥
अपना सर जिसनेतेरे दरपे कटाया होगा।
है यकीं मुझको रहम तुझको न आया होगा॥
खैर यह आपने जोकुछ किया सो खूबकिया।
हमनेभी और एक अस्लूवही महबूब किया॥
अपने दिलबरकी जो हमशक्क तुझे पाया था।
यही वाइसथा जोदिल तुझपे सनम आयाथा॥
जीतेजी उसनेभी अजबस मुझे तरसायाथा।
तेरी मानिन्द न पर उस्सेभी गम खाया था॥
उसनें धोखा दिया और तूनें सदा जब्र किया।
खैर जिस जा वहगया तूभी गया सब्र किया॥
खूने दिलपीके जो उस जासे मैं फिर आनें लगा
लिपट गलेसे वह कातिल मुझे समझानें लगा॥

वोसा देदेके मुझे प्यारसे फरमाने लगा ।
ज़रासी बात पै दिल आपका घवराने लगा ॥
मारकर खूँ पिये मेरा जो न आये कलको ।
हमें रोवैके जो सूरत न दिखाये कलको ॥
कुछ नज़र देके उन्हे व्हास चला आया मैं ।
तमाम शब फिरा इसबात का शरमाया मैं ॥
मुहर्रमों की जियारतसे जी बहलाया मैं ।
कटी शब रो रोके इस्तरह का ग़म खाया मैं ॥
रहा ग़मगीं के फिर आराम न पायामैंने ।
हाल अपना न किसीको यह सुनाया मैंने ॥
हिज्रमें आँखें यह जब आगईं रोते रोते ।
दिलपै और ग़मकी घटा छागई रोते रोते ॥
बाम पर वह क्या नज़र आगई रोते रोते ।
बर्क़साँ बस मुझे तड़पा गई रोते रोते ॥
कमाल मुझपे करम करतेथे दो यार मेरे ।
थे वह हमराज़ हरेक हालमें ग़मख्वार मेरे ॥
पूछने मुझसे लगे ग़मसे तू क्यूँहै पामाल ।
मैंने रो रोके कहा कत्लकी शबका अहवाल॥
सुनके बोले न तू ग़मखा जरा अब दिलको सम्हाल।
जान खोनेका तो हरगिजभी नकर दिलमें खयाल ॥
गुंचे दिल तेरेको इस्तौर खिला देवेंगे ।

देख दिलवरसे तेरे तुझको मिला देवेंगे ॥
बाद फिर उसके जो दिलवरने मुझे बुलवाया ।
मिली यारोंसे इजाज़तभी तो कुछ सब्राया ॥
एक ग़मख्वारने कुछ मुझपै रहम फ़रमाया ।
लेके हमराः मेरे दिलवरको मुझे दिखलाया ॥
शरमकी मुझसे न फिर आँख मिलाई उसने ।
होके शरमिन्दा ज़बाँभी न हिलाई उसने ॥
जानेमन कुछ यह तरीक़ा नहीं शरमाने का ।
ऐसा शरमाओगी ग़म खाओगी मरजाने का॥
मेरा कहना कि खुदाकोभी बस मंजूरहुआ ।
दिल किसी ग़ैरसे उस हूरका मसरूर हुआ ॥
ख़ार गुलमें हुआ पैदा तो वह रंजूरहुआ ।
हज़ार चाहाके निकले न वह फिर दूर हुआ ॥
देखकर उनका यह रंग दिलमेरा मजबूरहुआ ।
उठके घर अपने रवाना बस अब फिलफ़ौर हुआ ॥
फिर उसी दर्दसे दिलबरने बुलाया मुझको ।
खुरबुजः दस्त मुबारकसे खिलाया मुझको ॥
कहा जब मैंनेकि बस क़ीजे न खावेंगे हम ।
सुनके फ़रमाया न हररोज़ खिलावेंगे हम ॥
याद रक्खोगे मुझे गर कहीं जावेंगे हम ।
खालो खालो न खिलानेको फिर आवेंगे हम ॥

अब कोई दिनकी मुलाकातहै हमसे तुमसे।
छूट जावैगी कोई दिनमें हमारे गमसे॥
देखलो खूब सी दिलभरके हमारी सूरत।
खाकमें मिलतीहै कोई दममें यह प्यारी सूरत॥
ख्वाबमें देखोगे फिर तुम यह विचारी सूरत।
चलो बस देख चुके हमभी तुम्हारी सूरत॥
न यह गोरासा बदन तुमको नज़र आयेगा।
हुस्न जोबन यह सभी खाक़में मिल जायेगा॥
अभी रोओ न ज़रा दिलको सँभालो जानी।
आज और पान मेरे हाथसे खालो जानी॥
बिठालो गोदमें सीनेसे लगालो जानी।
आरजू दिलमें जो कुछहो वह मिटालो जानी॥
हम कहाँ तुम कहाँ यह वक्त कहां पाओगे।
कुछ दिनों तक मुझे तुम रोरोके पछताओगे॥
मेरा शृंगार करो आप सजाओ मुझको।
कपडे जेवर तुम्हीं बस आज पिन्हाओ मुझको॥
ओढूँगी ताजभी शहज़ादी बनाओ मुझको।
पर लगाओ परी बनाके उड़ाओ मुझको॥
तुम परीज़ाद बनो और यह सूरत बदलो।
अच्छी पोशिशलो पहन तुम ज़रा सूरत बदलो॥
बनाओ हीरा मुझे तुम बनो शहज़ादे लाल।

देखो आईनेमें बाहें मेरी गरदनमें डाल ॥
चलें हम नखरेसे तुम हमको मनाकर लो बिठाल ।
जानेमन बातें यह होजावेंगी सब ख्वाबो खयाल ॥
बाजी चौसरकी पिया आओ लगालो मुझसे ।
जो जो अरमानहों दिलमें वह निकालो मुझसे॥
दम यह हमदम मेरा जिसदमके निकल जावेगा ।
ऐसे अक्सर तू यहाँ काहेको फिर आवेगा ॥
इसतरह कौन तुझे प्यारसे बिठलावेगा ।
ठंढापानी तुझे फिर कौन भर पिलावेगा ॥
न जाने दूंगी यह जिद मुझसे लगावेगा कौन ।
चादरा और तेरे पापोस छिपावेगा कौन ॥
लेके हमराः किसे जंगलकी तरफ जाओगे ।
हाथमें हाथ पकड़ यूं किसे समझाओगे ॥
देख तनहाई किसे सीनेसे लिपटाओगे ।
सुनाके शैरो ग़जल किस्के कान खाओगे ॥
यूँ खफ़ा होके कहो प्यार करोगे किसपर ।
कहो मुझसे मेरी दिलजान मरोगे किसपर ॥
किसके संग झूलोगे तीजोंमें मलारें गाकर ।
पार जाओगे ले. हमराह किसे गंगापर ॥
स्वांग होलीमें दिखाओगे किसे बिठलाकर ।
कहो ले सोओगे चोरीसे किसे लिपटाकर ॥

लाके बाजारसे शीरीनी खिलाओगे किसे ।
कटोरे शीरके भर २ के पिलाओगे किसे ॥
रामलीलामें किसे देखने जाओगे तुम ।
और भजन किसकी तरफ गाके सुनाओगे तुम ॥
यारोंको उंगली उठाकर किसे बतलाओगे तुम ।
"आओ प्यारी" किसे यूं कहके बुलाओगे तुम ॥
अब यह बातें सभी बस ख्वाब हुई जातीहैं ।
जानमन कहतेथे जिनको वह मुई जातीहैं ॥
बातें सुन २ के सनमकी मेराजी भरआया ।
अश्क बहने लगे आँखोंसे जिगर थर्राया ॥
दिलसे कहने लगा क्या चर्ख यह आफत लाया ।
कौनसी बातका यह गमहै सनमने खाया ॥
गुफ्तगू सुनके मैं दिलदारकी गुमराह हुआ ।
पूछा बहुतेरा पर उस गमसे न आगाहहुआ॥
जानवर पालाथा एक उसने वह ला मुझको दिया।
कहा यह तायरे दिलथा मेरा सो तूने लिया ॥
और अंगुश्तरी मेरी यह निशानी ले पिया ।
क्याहै बीमारकी कुछ दिन जिया जिया न जिया ॥
याद रक्खो ज़रा दिलसे मेरें जानी मेरी ।
पास अच्छी तरह रक्खो यह निशानी मेरी ॥
मुझको एक शख्स जब हाले सनम बतलाया ।

देखकर फिर मुझे घूँघट किया और शर्माया ॥
मैंने रोरोके बहुत देरतलक समझाया ।
आँख खोली न मुझे देखा न मुँह दिखलाया ॥
एक क़समभी न सुनी गम दिया और सम खाया।
उड़गई गुल से बू फिर दम में कहाँ दम आया ॥
हाथ मलता रहा अफ़सोस किया रोरोकर ।
जनूनी बनगया मैं अश्कोंसे मुँहधोधोकर ॥
नींद आती न तो उठ बैठता मैं सो सो कर ।
गई कईबार अजल पास मेरे हो होकर ।
एक दिन ख्वाबमें देखा कि यूँ फरमाती है ।
सब्रकर अब तुझे कोई मुझसी मिलीजातीहै ॥
लुटगया चमने हुस्न यारका अफ़सोस हकीर ।
ख्वाक़हो कद्र समन यारका अफ़सोस हकीर ।
समके लायकहो दहन यारका अफ़सोस हकीर ।
खाँय हम रंजो महन यारका अफ़सोस हकीर॥
ख्वाबकी बात को रख याद तू क्यों रोताहै ।
देखतो गैबसे ज़ाहिर तुझे क्या होताहै ॥

प्रथमखंडसमाप्त ।

फिर शुरू इश्कका सामाँहै खुदा खैरकरै ।
दिलमें कुछ औरही अरमाँहै खुदा खैरकरै ॥
बुतोंके हाथमें दामाँहै खुदा खैर करै ।
मुझको फिर एक जहाँ खन्दाँहै खुदा खैर करै॥
अबतो कुछ औरही सामान नज़र आताहै ।
खुदबखुद गुंचये दिल मेरा खिलाजाताहै ॥
इश्कके नामसे अबतो मैं बहुत डरताहूँ ।
ज़ख्म पहलेही न अच्छे हुए बस मरताहूँ ॥
अश्क बहतेहैं ग़मो दर्दसे दिल भरताहूँ ।
खुलासा आगे मैं अब हाल बयाँ करताहूँ ॥
नसीब जबसे हुआ हिज्र मुझे उस गुलसे ।
जो जो गुज़राहै न कुछ पूछो दिले बुलबुलसे॥
मैंने दिलबरके जो मरनेसे बहुत गम खाया ।
मरगया होता पर एक मैंनें सहारा पाया ॥
उसकी हमशक्ल जो एक शोख नज़रमें आया।
उसको कुछ देखके मैं सब्रसा दिलमें लाया ॥
ख्वाबकी बात जो याद आई तो ग़म दूर हुवा ।
शक्ल वह देखके कुछ दिलमेरा मसरूर हुआ॥
रंज सब दूर हुआ और खुशी दिलमें आई ।
देख मुझको वह परीवार बहुत शरमाई ।
अपने हाथोंसे सनम पान बनाकर लाई ।

कहा लो पान बहुत तुमने अजीयत पाई ॥
कहा मैंने अजी यूँ पान न खावेंगे हम।
जो क़सम तेग़की तुमको न खिलावेंगे हम ॥
सुन यह फिर हाथमें शमशीर उठाई मेरी।
नदग़ा होगी क़सम कहके यह खाई मेरी ॥
कहा अबकी तुझे क़िसमत यहां लाई मेरी।
तुझे मंजूर नथी दिलसे जुदाई मेरी ॥
कीजिये मुआफ कि ऐसा न कभी होवैगा।
गैरके आनेका चरचा न कभी होवैगा ॥
कहा मैंने अजी मेरीही यह तक़सीर हुई।
आपके पास जो कुछ आनेमें ताखीर हुई ॥
सुनके यह मुझसे सनम फिर वह बगलगीर हुई।
जुल्फ जानाने दिल असीरको जंज़ीर हुई ॥
दिलसे बातें हुईं रंजिश वह सभी दूरहुई।
फिर मुलाक़ात सनमसे मुझे मंजूर हुई ॥
कहा दिलवर तुम्हें गर दिलसे मेरी चाह नहीं।
तो सनम हमको भी अबकुछ तेरी परवाहनहीं॥
बेवफाईसे हम अबतक तो थे आगाह नहीं।
चाहने मेरी तेरे दिल में की कुछ राह नहीं ॥
इश्कसे मेरे सब आगाह खासो आम हुए।
आह अफ़सोस के हम मुफ्तमें बद नाम हुए ॥

तूने छोड़ा हमैं हम खल्कसे मुँह मोडेंगे ।
इश्क़ दिलबर तेरा दिलसे न मगर छोडेंगे ॥
आप दिल रिश्तये उलफ़तसे अगर तोडेंगे ।
ऐसा पछताँयगे ग़म खा खाके सर फोडेंगे ॥
हम किसी औरसे हरगिज़ न लगावेंगे दिल ।
एक तुम्हारेही तसव्वरसे बहलावेंगे दिल ॥
तुम जो कहनेपे रक़ीबोंके यक़ीं लाओगी ।
देखलेना कि बहुत मुफ्तमें गम खाओगी ॥
जो न मानोगी तो फिर क्या मेरा लेजाओगी ।
अपना पाओगी किया पीछेसे पछताओगी ॥
रहो रक़ीबसे राज़ी हमैं कुछ काम नहीं ।
इसका फिर देखियो कुछ नेकहै अंजाम नहीं ॥
हमने जाना तुम्हें कुछ हमसे मुहब्बत न रही ।
तेरी आँखोंमें वह पहलीसी मुरव्वत न रही ॥
तुम अगर कहतीहो तुमसे मुझे उलफत न रही ।
तो हमैं भी तेरी चाहत वह निहायत न रही ॥
बिठा रक़ीबको महफ़िलसे उठाया हमको ।
पास कुछ मेरी मुहब्बतका न आया तुमको ॥
सुनके शिकवः मेरा शरमाई वह दिलदार कमाल ।
मुझे सीनेसे लगाने लगीं हर वार कमाल ॥
कहा बस २ न मुझे कीजे बेकरार कमाल ।

मुझे हररोज़ रहा तेरा इन्तज़ार कमाल ॥
अबकी मुझसे बडी तक़सीर हुई माफ़ करो ।
बुग्ज़की बातें यह छोड़ो अजी दिल साफ़ करो॥
अहदो पैमां हुए हर बातका इकरार हुआ ।
बस वह दिलदार मेरे दिलका ख़रीदार हुआ॥
चश्म बीमारका फिर दिल मेरा बीमार हुआ।
अज़सरे नौ यह मुझे इश्क़का आजार हुआ ॥
हटा रक़ीबसे दिल मुझको बुलाया हररोज़ ।
बिठाके शरबते दीदार पिलाया हररोज़ ॥
मिलीं हमसेतो रक़ीबोंसे अदावत ठहरी ।
फिरतो मेरीभी हमेशः यही आदत ठहरी ॥
दरेजानानकी हररोज़ इबादत ठहरी ।
एकदिन घरमेरे दिलदारकी दावत ठहरी ॥
उठगये जबकि सनम खानःसे सब मेरे हरीफ़ ।
चढ़के डोलीमें सनम घर मेरे लाईं तशरीफ़ ॥
उतरीं डोलीसे परी घर मेरे हँसते हँसते ।
गईं वह रंगी महलमें मेरे हँसते हँसते ॥
लगीं फिर सीनेसे दिलबर मेरे हँसते हँसते ।
पलँगपर सोगईं दिलबर मेरे हँसते हँसते ॥
यार हमराजथे एक लिक्खूं क्या उनकी तारीफ़ ।
मेरीख्वाहिशपै करम कर वहभी लाये तशरीफ़ ॥

फिर सनमसे मेरी और उनसे मुलाकात हुई।
दोनों जानिबसे हँसी और खुशीकी बात हुई॥
शरमागईं न किसीमें कोई हरकात हुई।
रात वह यारो मुझे गोया शबबरात हुई॥
हाथ मुँह धोके फिर आपसमें दिल लगाने लगे।
शराब हाथोंसे अपने उन्हें पिलाने लगे॥
मय पिलाकरमैं दिलेयारका सरसार किया।
नशेमें यारने हर बातका इज़हार किया॥
फिर सरापा मैंने दिलदारका शृंगार किया।
पिन्हाके हार गिलूयारका गुलजार किया॥
बदनमें यारके फिर इत्र लगाया मैंने।
अपने हाथोंसे बना पान खिलाया मैंने॥
माँगमें मोतीभरे ज़ुल्फ मुनव्वरको सभाल।
बिन्दी माथेपे लगा पिन्हा लबोंपें माह हिलाल॥
गहना कानोंमें करनफूलोंका झुमकेकी वह हाल।
पहरी नथ बीनीमें लटकनभी दिया उसमें डाल॥
पचलड़ी सतलड़ी और हार गलेमें डाला।
कंठी चम्पाकली जुगनू लड़ी मोहन माला॥
तिलाई हाथोंमें दिलवरके पिन्हाये जोशन।
नौरतन बाजू कड़े पहुँची जडाऊ कंगन॥
चूड़ियां हाथोंमें पहरीं व पछेली और छन।

आरसी पोरुए छल्लोंकी अंगूठों फवन ॥
लिये झाँझननें कदम जानांको पहराये छडे ।
ज़ेब पाज़ेबने पाई तो कड़े पैरों पडे ॥
क्याहै किमख्वाबी यह पाजामा अजब बूटीदार ।
जिसके ऊपरकेवह पिशवाज किसमिसीकी बहार॥
उढ़ाई ओढनीभी जिसमें बहुत नक़शो निगार ।
रुखे, जानांपैथी मुक्केशकी हरसिम्त कतार ॥
अँगिया जोबनपै कसी प्यारीने जरकारीकी ।
कुरती जालीकी वह पहरी बडी तइयारीकी ॥
अपने हाथोंसे बना पान खिलाया उनको ।
किस्साकोताह परीवार बनाया उनको ॥
रोबरू कुरसीपै ला अपने बिठाया उनको ।
जडाऊ लाके फिर आइना दिखाया उनको ॥
देख आईनेको हसरतमें वह आई दिलवर ।
उसी दम से मेरी आँखोंमें समाई दिलवर ॥
फिर नये हुक्केको ला ताज़ा कराया मैंने ।
अपने हाथोंसे परीरूको पिलाया मैंने ॥
कभी कुछ गाया और उनसेभी गवाया मैंने ।
दिल हरेक तौरसे उस गुलका खिलाया मैंने॥
खुलगईं आँखें मेरी देखके वह हुस्नो जमाल ।
बँधगया दिलमें उसी दमसे उन्हींकाह खयाल॥

फिर तरहदार नया इश्क का बाजार लगा ।
वह परीवार नया दिलका खरीदार लगा ॥
हाथ जिन्दा मेरे गोया वही दिलदार लगा ।
अब दुबारा यह मुझे इश्कका आज़ार लगा ॥
ज़ुल्फ़के जालमें जब फाँस मेरा तायरे दिल ।
काटकर बाज़ुओंपर करादिया मिसले बिस्मिल॥
दरे गुलशन कियाबंद और बुलाया सइयाद ।
कहा उड़जाओ चमनसे किवह आया सइयाद ॥
हाथमें तेग़ दंजको मेरे लाया सइयाद ।
कहा मैंने के जो सरपर खड़ा पाया सइयाद ॥
यानी गुल तेरे कहेसे नहीं जावेंगे हम ।
बाग़बाँकी जो इजाज़त नहीं पावेंगे हम ॥
बाग़बाँने जो कुछ उस गुलकी इशारत पाई ।
आँखें फेरीं के चमनमें हवा सरसर आई ॥
आँख नरगिशने ग़ज़ब नाकहो जब दिखलाई।
फिर वह सरसर मुझे उस बागसे बाहर लाई ॥
वक्त रुख्सत कहा दिलबर अगर जायेंगे हम ।
उम्मीद वस्लकी रक्खेंगें न फिर आयेंगे हम ॥
दिल किसी औरही दिलबरसे लगावेंगे हम ।
क्या मज़ा देख मुहब्बतका उठायेंगे हम ॥
ग़म तेरे हिज्रका हरगिज़भी न खायेंगे हम ।

काबागरहो तेरा घर सर न झुकायेंगे हम ॥
आपने रिशतये उल्फतको निभाया क्या खूब ।
अब मयस्सर हमैं होगा कहाँ तुमसा महबूब ॥
जानेमन जो तेरी उल्फतका खरीदार हुआ ।
यही पाया के वह बस जानसे बेज़ार हुआ ॥
मुझको जिस रोज़से दिलबर तेरा दीदार हुआ।
मैं उसी दिनसे तेरे इश्कका बीमार हुआ ॥
न कभी प्यारसे पर तुमनें बुलाया जानी ।
न कभी बस हमैं दीदार दिखाया जानी ॥
सिजदः करतेही रहे तेरे आस्तानेको हम ।
यूँही बहलाया किये इस दिलेदीवानेको हम ॥
देखते जलता जहाँ शमापै परवानेको हम ।
जीमें यह आता लिखैं इश्कके अफ़सानेको हम॥
दिले बुलबुल मेरा तुझ गुलेपे फ़िदा होता था ।
तेरे दीदारसे खुशदिलमें सदा होता था ॥
हम फ़क़त तेरी मुहब्बत काही दम भरतेथे ।
आप फ़रमातेथे जो कुछ वही हम करतेथे ॥
तेरी खन्दीदगी नाज़ो अदापै मरतेथें ।
और खफा होनेसे हम तेरे बहुत डरतेथे ॥
यह न जानेथे कि इसतौर तू बल लायेगा ।
आँख तोतेकी तरह हमसें बदल जायेगा ॥

कौनसे मुँहसे कहा जा तू यहांसे मेरीजान।
तुम्हें हरगिज़भी न लानाथा यह दिलमें अरमान॥
रक़ीबहीके लिये था यह वस्लका सामान।
कत्लपर मेरेही क्या आपने चाबाथा पान॥
न मिलेगा हमें तुमसा कोई महबूब अच्छा।
जानेमन जानेकी हठहै तो बहुत खूब अच्छा॥
यह नसमझेथे किआखिरको दगा पायेंगे।
कौन जानेथा हम इस्तौरका ग़म खायेंगे॥
था यक़ीं आप यह इस्तौर न शरमायेंगे।
कि रक़ीब आयेगा और हम उठाए जायेंगे॥
क़ाबिले मर्ग किया इश्क़के बीमारका दिल।
देखना मेरा गवारा हुआ तुमको बिस्मिल॥
कहके यह उनको वहाँसे जो चला आया मैं।
उधरको मुँह न किया इतना कुछ शरमाया मैं॥
रोते २ लगी हिचकी तो फिर गशखाया मैं।
जानेमन मरगया बस तेरा हूं सताया मैं॥
जान कर मुझको खफ़ा खुद वह मेरे घर आईं।
बैठ नज़दीक मेरे ज़ीमें बहुत शरमाईं॥
देखा मैंने जो बहुत उनको तो शरमाने लगीं।
देख हर बार मुझे फिर वह मुस्कराने लगीं॥
अपने नज़दीक पकड़ कर मुझे बिठलानें लगीं।
बोसा देदेके मुझे सीनेसे लिपटाने लगीं॥
तमाम रात परीवारका दीदार किया।

चश्मज़ार अपनीको वस खानये दिलदार किया॥
दोनों यारोंने यह उस शबमें अजव देखी बहार।
मेरा रंगीं वह मकाँ गोयाथा रश्के गुलज़ार ॥
रही शब थोड़ी तो दिलबरने वह शृंगार उतार।
गजरके बजतेही फिर जल्दीसे आ पहुँचे कहार।
चढ़ाके डोलेमें खुद मैं उन्हें पहुँचा आया ।
मज़ा उस शबका मेरी आँखोंमें बसहै छाया ॥
दिलमें हो शाद मिला तुझसे तेरा यार हक़ीर।
था तो बेज़र वले अबतो हुआ जरदार हक़ीर ॥
दिलमये हुस्नसे अब होगया सरशार हक़ीर ।
अब शबे वस्लका रहताहै तलबगार हक़ीर ।
अब हमें यार यह दिलदार मुबारिक होवे।
खुदा रक़ीबोंके सर बार मुबारिक होवे ॥

पंचमभाग समाप्त ।

॥ इति महामनमोहिनीसमाप्ता ॥ शुभमस्तु ॥



श्रीः ।

महामनमोहिनी ।

परिशिष्ट ।

प्रेमप्रलाप ।

दोहा—जीवनधनको हरनकर, मनमोहन वरनार ।
अहो प्राणधन प्राणप्रिय, तुम कितगई सिधार॥१॥
बिना तिहारे पड़तहै, एक पलहु नहिं चैन ।
अरी मल्लिका सेनसज, आयो मोपर मैन ॥ २ ॥
धूमयान चढ़ि हेप्रिये, जबते गई सिधार ।
लगातार चलिबो करत, नैननते जलधार ॥ ३ ॥
सारी शोभा संगले, सूना कर मम भौन ।
सहसा गवन कियो प्रिये, याको कारण कौन॥ ४ ॥
बैठत उठत चलत फिरत, आवत तुम्हरी याद ।
तुहिं बिन निरखे भामिनी, भयो मोहिं परमाद॥५॥
कैसेहूँ कल नापरै, छट फट करत शरीर ।
तोबिन सुनै बिलासिनी, कौन हमारी पीर ॥ ६ ॥
निबल भयो अति तनु मेरो, विरह व्यथाको पाय ।
हाहतोऽस्मि कहि २ प्रिये, गिरों मूरछा खाय ॥ ७॥
सोरठा—कलपत प्राण अधीर, तव दर्शनकी चटपटी ।
बहत दृगनसों नीर, को राखै कित जाइये ॥ ८ ॥

दोहा—मनचाही निर्फल भई, टूट्यो आशातार ।
हाय नाव बिन केवटहि, गई डूब मँझधार ॥ ९ ॥
रतन एक करके जतन, धार्‌यो हृदय मँझार ।
सोऊ हर्‌यो कृपायतन, गया चित्त अविचार१०॥
जो मन लेवेकी हती, तो मन काहे दीन ।
मार विरह बरछीन विधि, लिया जवाहर छीन ११॥
भयो कछुक धीरज रमणि, समाचार तव पाय ।
देखहु अपने दासकी, सुरत बिसर जिन जाय॥१२
हाय गई वह निकटते, तऊ सुरत नाहिं जाय ।
ज्यों जल सोखै रविकिरण, ताल नधूरि उडाय१३
यदपि सहे प्रिय विरह दुख, कस २ काठिन करोर ।
तदपि त्याग तनु जात नाहिं, जीवन महा कठोर१४
दिल दरदी आये नहीं, ग्रीषम आयो धाय ।
लपट झपट झकझोरकै, तन मन देत जराय ॥१५
प्राणनकी आशा अमित, कौन मिटावे आय ।
कहाँगये प्रिय मिलैंगी, हेविधि देहु बताय ॥ १६ ॥
तुम बिन पंद्रह दिन अली, पंद्रह कल्प समान ।
वीते अमित भयावने, मानहु काल कृपान ॥ १७॥
रुद्ध रहत मन निज भवन, नेकहु लागत नाहिं ।
हेविधि कवहुँ कि डारिहैं, प्यारीके गरबाहिं ॥१८॥
परग २ नाहिं कलपरत, जरत गात अति मोर ।

प्यारी सारी वयसको, भयो दास मैं तोर ॥ १९ ॥
जो प्यारी आई नतो, कहा सजाये भौन ।
गिरहु परहु उखरहु जरहु,हमको कारज कौन॥२०॥
कहा काम या साजते, यदि उन निरख्यो नाहिं ।
यासों सब आशा प्रबल, लई पूरि मन माहिं ॥२१॥
जाके हम उनहीं जुपै, दीन्हों हमैं बिसार ।
फिर जीवनको राखिबो, बार २ धिक्कार ॥ २२ ॥
हाय ! चहीते भौन यदि, छाय रह्यौ अँधियार ।
फिरकोउ काहूको बदन, कैसे सकै निहार ॥ २३॥
सपनेहूँ देखत जिन्हें, निशि निदाघके माहिं ।
गुप्तभावसों हिय बसत, उन प्यारीकी छाहिं॥२४॥
बार २ अभिलाप यह, निरखैं वह मुख फूल ॥
ना जानैं वह प्राणधन, गई हमैं क्यों भूल ॥ २५ ॥
आवन २ नित सुनत, पै प्रिय आईं नाहिं ।
बिन मृगनयनीके दरश,पल युग सरिस सिराहिं२६
दोऊ नयननसों झरत, हाहा अविरल नीर ।
प्राणरहे मिटिहै न अब, यह वियोगकी पीर॥२७॥
मंत्र मुग्ध फणि खोय मणि, गिरै धरणि मुरझाय ।
त्यों बिन प्यारी गति भई,आज हमारी हाय॥२८॥
शरम करे कैसे निभै, मरम बिधोहै बान ।
जातना जात न नेक कहि, जो पावतहै जान॥२९॥

जन्मान्तरहु न भूलिहैं, यह दुख कठिन कुभाँत।
अबतो अँधियारे भवन, रह्यो न कैसेहु जात ॥३०॥
प्रीतिरहै नहिं या जगत, प्रीति दुःखकी मूल।
बांधत मन निकसतनमुख, याहि न चहिये भूल ३१
अरुणोदय पुनि होयगो, पुनि बीतैगी रात।
हाहा कबहुँ न बीतिहै, मम अँसुवन बरसात॥३२॥
तुहिं बिन देखे प्राणप्रिय, गयो मास इक बीत।
सांस आशसों चलतहैं, जान मान परतीत॥ ३३॥
फिर बसंत ऐहै अवशि; फिर फूलें वे फूल।
कैसेहू घटिहै न कछु, मरम व्यथाको मूल॥ ३४॥
मेरे साधन सिद्ध में, किन साधो यह बाद।
कर विपाद सब टारि दुख, दियो आन परमाद॥३५॥
ज्यों दामिनिके त्यागते, जलद जाय मुरझाय।
ज्योंही मम आशा घटा, कितको गई बिलाय॥३६॥
बारबार गावत अहै, को विपाद संगीत।
करहु निषेध न गानदो, उपजतमोहि अति प्रीत ३७
या सुखमय संसारमें, गावहु बारम्बार।
ये विपाद प्रियकी सदा, सुरति करावन हार ॥३८॥
भेदतहै नित चित्त को, मन भेदी यह गान।
बिधो जो याके बानसों, सो जानेयह तान ॥३९॥
तुम बिन कोकिल काकली, लागत मानहु तीर।

प्यारी भारी भय भयो, निरखत बक पिक कीर ॥४०॥
कोकिल बारेक औरहू, वोही गावहु गान ।
दग्ध हृदय शीतल करै, मधुर मनोहर तान ॥४१॥
औरहु या मरुभूमिमें, मदन सखा को लाय ।
सूखे वृक्षनमें बहुरि, दीजै सुमन खिलाय ॥ ४२ ॥
कलपत बिलपत आज यह, पूरण भयो विलाप ।
अहो लडैतीके विना, रह्यो हृदय संताप ॥ ४३ ॥
रोवत नैना रैन दिन, जप २ कृष्णा नाम ।
बहुरो अब कब देखिहैं, वह मूरति घनश्याम ॥४४॥
कौन सु अवसर कौन दिन, कौन मास वह होहि ।
दिलदरदीली द्वारपै, खड़ी निहारूं तोहिं ॥ ४५ ॥
जाने दियो वियोग यह, सो देहै संयोग ।
बाबा तेरे नामकी, माला हरिहै रोग ॥ ४६ ॥
तन मन दरपन हृदयमें, तुमहीं रहीं समाय ।
लिखों कहा अपनी बिथा, अधिक लिखी नहिं जाय॥४७॥
जनम जनम तव दास बन, सेवों बरप करोर ॥
बिसरे इक पलको न तव, वंकिम भृकुटि मरोर ॥ ४८ ॥
हम प्यासे हैं दरशके, करैं सदा यह आस ।
नित नव निरखैं सुभग छवि, करि तव निकट निवास॥४९॥
यद्यपि जगमें कष्ट बहु, पावैं नर अरु नारि ।
तद्यपि सबते प्रबल अति, छुटजैवो निज प्यारि ॥ ५० ॥

पल२ छिन२दिवस निशि, जप मन कृष्णा नाम।
ध्यान धरे मूरति मधुर, मन पावै विश्राम॥ ५१ ॥
आज विलख चौसठ घड़ी, पूरण कियो प्रलाप।
यही हमारो ध्यान नित, यही हमारो जाप ॥ ५२ ॥

इति परिशिष्ट समाप्त ।

पुस्तक मिलनेका पता–
खेमराज श्रीकृष्णदास
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस–बंबई.

